॥ भूमिका ॥



कोई इसको लावनी कहते हैं और कोई मरैठी वा ख्याल कहते हैं असल में इसका बनाना और गाना दक्षिण से उत्पन्न हुआ है और इसके दो कर्त्ता हुये एकका नाम तुकन गिर और दूसरे का नाम शाहअली था उन्हों ने दो मत खड़े किये तुर्रा और कलंगी तुकनगिर तुर्रे को बड़ा कहते थे और शाहअली कलंगी को बड़ा रखते थे आपस में विवाद किया करते थे और अपना अपना पन्थ उन्हों ने चलाया यहां तक कि आज ताईं उनके मत वाले बहुत से लोग इस देश में भी बनाते गाते हैं उनमें पढे लिखे भी हैं परन्तु बड़ा अफ़सोस है कि गाली हीं गुफ़ता बकते हैं इस कदर से कि आपस में लड़भी पड़ते हैं इसी सबब से इसको कोई भला आदमी पसन्द नहीं करता है और मैं भी इसी विषय में बाल अवस्था मे मशगूल था जब ईश्वर ने मेरे ऊपर अपनी कृपा करी तो इस पाप से मुझको छुड़ाया और फ़कीर बनाया अपना जलवा मुझको दिखलाया उसको देखते ही वह मस्ती का आलम हुआ कि आली आली मज़मून नज़र आने लगे तो मैंने अपने दिल में यह विचारा कि तू इसी लावनी से भगवत आराधना कर तो उर्दू बोली में मैंने इश्कमारफ़त मतलबतौहीद और हिन्दी में उपासना ब्रह्मज्ञान को कहा इस वास्ते कि जो कोई इसके असल मतालिब को पायेगा वह जीते

ही जी उस में मिल जायगा और वही ईश्वर मेरे दिल में बैठके ये सब बात बनाता है मैं कुछ पढ़ा लिखा नहीं परन्तु जो कोई इसके मज़मून को सुनते हैं वह तअज्जुब समझते हैं और पसन्द करते हैं इसी सबब से मैंने थोड़ीसी लावनी छपवाई हैं कि जिसमें सब अमीर व गरीब पढ़ें और इसको समझें और जो कोई इसको अपनी तबीअत लगा के पढ़ेंगे तो उनका भला होगा॥

❀ दो पदी ❀

जो कहता हम करते वो दुःख भरता है।
जो करता जग के कार वही करता है॥

श्रीमत्काशीगिरि बनारसी परमहंस आशकेहक्कानी।





॥ श्रीगणेशायनमः ॥

लावनी

हृदय में है हिंगलाज कर काज लाज रखने वाली। नयना देवी नयन में बसें हँसें देदे ताली ॥ शीशमें सीता सती विराजें सावित्री सङ्कटारानी। मस्तक में रहें आय श्री म- हाविद्या औ महारानी ॥ भृकुटी में कर वास भैरवी भयमानें सब अभिमानी। ब्रह्म में अपने विराजें विन्ध्याचल और ब्र- ह्मानी ॥ बसें नासिका में नवदुर्गे नगरकोट लाटों वाली। नयनादेवी नयन में बसें हँसे देदेताली॥१॥मुखमें बसें मंगला देवी सब कारज करदे मंगल। होंट में हेमावती रहें क्षण में काटिदेवें कलिमल ॥ जिह्वामें जाह्नवी और यमुना सरस्वती सब से निर्म्मल। गले में गौरी और गायत्री का जपनाम अटल ॥ कण्ठ में बसें कालिका देवी कंकाली और महाका ली। नयना देवी नयन में बसें हँसें देदेताली ॥ २॥ कानमें क- मला और कल्यायिनी क्रियारूप अद्भुत माया। दोनों भुजा में बसें भवानी बड़ासुख दिखलाया ॥ उर में बसें उमा उत्रानी उग्रतेज उनका छाया। कहांलों वर्णों लखी नहीं जातीहै अपनी काया ॥ बुद्धि में बसें विधाता मातावही

बुद्धि देने वाली। नयना देवी नयन में बसें हँसें देदे तालीं॥ ३॥ रोम रोम में रमी रम्भा और नाभि कमल में निरवानी। कहैं देवीसिंह इसे कोई पहिचाने चातुरज्ञानी॥ श्वास२ में शक्ती बोले ध्यानधरेंपूरे ध्यानी। बनारसीयहकहैं भगवतीकी भक्ती मनमानी॥मेवा और मिष्ठान हारफूलोंकीनित चढतीडाली। नयना देवी नयन में बसें हँसें देदे ताली॥४॥

सर्व धर्म से परे वेद में लिखाहै सुन सन्यासी का धर्म्म। क्या कोई जाने पण्डित के सन्यासी का कौन हैं कर्म्म॥ ग्रहणकरैं तो बने नहीं और त्याग करैं तो क्या त्यागैं। सोवैं तो निद्रा नहिं आवै जागें तो सोवत जागैं॥ युद्ध करें तो धर्म घटे और पाप लगे रण से भागें। त्रैलोकीके दाताहैं फिर क्यों भिक्षा घरघर मांगैं॥ उनकी गती वोही जाने नहीं मिले किसीको जिनका धर्म्म। क्या कोई जाने पण्डित के सन्यासी का कौनहै कर्म्म॥ १॥ मौन रहैं पर बोलें सबसे बरततहैं और सब खावैं। आसन दृढ है बाट चलैं जित चाहैं वह उतही जावैं॥ पढ़े नहीं एको अक्षर और वेद शास्त्र निशि दिन गावैं। आंख मूंद देखें सबको पर आप दृष्टि में नहिं आवैं॥ वह क्या देखैंगे उनको जिनकी दृष्टि में लगा है चर्म्म। क्या कोई जाने पण्डित के सन्यासी का कौन है कर्म्म॥ २॥ योग विषे वह भोग करैं और भोग विषे साधैं वह योग। शोक विषे वह हर्ष करैं और रोग विषे रहैं सदा निरोग॥ वियोग में संयोग करैं संयोग विषे रहैं बिना वियोग। लोक विषे परलोक सुधारैं इसको समझे ज्ञानी लोग॥ जिनकी माया से सृष्टी में व्याप रहा है सबको भर्म्म।

क्या कोई जाने पण्डितके सन्यासीका कौनहै कर्म ॥ देहाभिमे वह रहैं विदेही माया में रह निर्मोथा। देवीसिंह ये कहैकि इन का पार किसीने नहिंपाया॥ चारवेद षट शास्त्र अठारा पुराण ने योंही गाया। सब धर्मसे बड़ा धर्म सन्यास मेरे मनमें भाया॥ बनारसी तीनों गुण से है रहित न समझे धर्म अधर्म। क्या कोई जाने पण्डित के सन्यासी का कौन है कर्म ॥ ४ ॥

मन मुरशद से मिलके अब तू चितको अपने चेला कर। दुई दूरकर हमेशा निर्भय पदमें खेला कर ॥ देख तो अपने आपकोतू है कौन कहांसे आया है। किसने पैदा किया और किसने तुझे बनाया है॥ जो तू कहै हूं बाप से पैदा माने मुझको जाया है। यह तो गलत है अरे तू आपी में आप समाया है॥ दुविधा को कर अलग और सब दिल का दूर झमेलाकर। दुई दूरकर हमेशा निर्भय पदमें खेला कर॥ १ ॥ जबतकहै ज्ञान तभीतक कुटुम्ब कबीला भाई है। ज्ञान हुआ तो आतमा आप में आप समाईहै॥ कोई बना ब्राह्मण क्षत्री कोई वैश्य शूद्र कहलाई है। हम ने देखा तो सब के बीचमें कुँवरकन्हाई है॥ समदर्शी हो विचर पड़े जो दुख सुख तन पर झेलाकर। दुईदूर कर हमेशा निर्भय पद में खेलाकर॥२॥ तू उसको पहिचान तेरे इस शरीर में बसता है जो। किस गफलतमें पड़ा ओ कौन नींद भर रहा है सो ॥ खोलके अपनी आंख देख वह एकहै उसको समुझ न दो। कौनहै तेरा और तू किसका है इसे तुम समझो तो ॥ आतममें परमातमको अब देख के दर्शन मेला कर। दुईदूर कर हमेशा निर्भय पदमें खेलाकर ॥३॥ एक ब्रह्म और द्वि-

तीयोनास्ति यही वेदनकी बानी है। इसको समझै वही नरजो पुरा विज्ञानी है ॥ जैसे जलकी तरंग फिर जलही के बीच स- मानीहै । कहैं देवीसिंह दान यह बनारसी ने जानी है ॥ छोड़ दुरें कलँगी का गाना निर्गुण के डंड पेलाकर । दुई दूरकर हमेशा निर्भय पद में खेलाकर ॥ ९ ॥

संत खेलते होली जिसमें इज्जत हुरमत लाज रहे । गुणी जनों के अगाडी अनहद बाजे बाजरहे ॥ ज्ञानगुलाल के बा दल छाये प्रेम रंग नित बर्षावें । ब्रह्मवादसों लडैं और भर्मधूल कोउड़ावें ॥ धीरज का डफ बाजे संग में नाम नारायणका गा- वें । क्रोध कुम्कुमा मार के काम शत्रुको टट्टावें ॥ दयाकी दो- वत देते सबको साथ में सखी समाज रहे । गुणी जनों के अ- गाडी अनहदबाजे बाजरहे॥ १ ॥अमर अबीरको साधुलगाये मुक्तरूप पहिने माला । भस्मके भूषण झलकते तनपर मन में उजियाला ॥ मंत्र मिठाई संत पावते बहुत खूब सब से आला । अमृतरसको पियें और खोलदेहैं घट का ताला । नेह नाचको देखें हरिजन सत्य साजको साज रहे ॥ गुणी जनो के अगाड़ी अनहद बाजे वाजरहे ॥ २॥ लौकी लकड़ी लूटले आप आतम की अगनीकरते । हरहर होली जगावें वही नहीं जनमें मरते॥ विज्ञान की गाली देते हैं सन्तकिसीसे नहिं डरते । कष्टके फ प्रंड पहिनके काया को निर्मल करते ॥ शील सितार सुनावैं साधू नाम नककारे गाजरहे। गुणीजनोंके अगाडी अनहदबाजे बाजरहे ॥ ३ ॥रामनाम का शोर चलावें परस्वारथकी पिचकारी जिसको मारें उसी के मुख पर लगती है प्यारी ॥ मिले गले गोविन्द से चल के जाप जपैं गिरिवरधारी । भाव भोग को

करै हैं वही यती वही ब्रह्मचारी ॥ शुद्ध सिंहासनपर चढ़बैठे तीनलोक में राजरहे । गुणीजनों के अगाड़ी अनहद बाजे बाजरहे ॥ ४ ॥तीरथकी फेरी फिरतेहैं सुमत समग्री लेजाते । पूजैंहोली गुणीजन ब्रह्मज्ञान में मदमाते । देवीसिंह यों कहैं कि ऐसी होली जो कोई गाते । भवसागर के पारहो परम धाम पदवी पाते । बनारसी ने हरिको पाया किसीके नहिं मुहताजरहे।गुणीजनों के अगाड़ीअनहद बाजे बाज रहे ॥५॥

इस तनमें आत्माकृष्ण है और गोपी ग्वालों का दल । सुनो कानंद बनाहै तन में मेरे रहसमंडल ॥ विश्वकर्मा ने आज्ञापाके शीश महल तयार किया । अनहद बाजों का उसमें संपूरण विस्तार किया ॥ चारों खम्भे लगाये उस में ऐसा सुन्दर कार किया । खुशी हुये हम तो अपने रहस का वहीं विचार किया ॥ सबको साथले आया मैं दिखलाया उन्हें भवनउज्वल । सुनो कानंदे बना है तनमें मेरे रहस मंडल॥१॥ मन ऊधवजी मित्र हमारे सदासे हैं आज्ञा कारी । बुद्धि राधिका सो मेरे प्राणोंको है अति प्यारी । नेत्र करण मुख दन्त कण्ठ सब सखा हमारे हितकारी । लगन है ललिता बहुत सुन्दर शोभाहै सबसे न्यारी ॥ बलहै सो बलभद्रहमारे भ्राता जिनका अटूटबल । सुनो कानंदे बनाहै तनमें मेरे रहसमंडल॥ २ ॥हजार इक्कीस छःसै श्वासा सो सबसखियां संग आईं । वोतो सबको हमीथे कृष्ण हमारे है साईं । गलसेमेरे लपट लपट क्याक्याही तान सुन्दर गाई । बजाईबंशी जो मैंने अनहद तोसब बिलमाईं ॥ ॥ प्रेम में मगन भई ब्रजवनिता कामने किया बहुत बेकल । सुनो

कानदे बनाहै मेरे तनमें रहसमंडल ॥ ३ ॥ नौनारी थी पातिव्रता सोभी तब आई पासमेरे। रोम रोमकी सखासमझो था समझो दासमेरे ॥ मेरी लीला देखदेख नहीं होते मित्र उदास मेरे। वर्णन करते हैं गुणको जगतमें वेदव्यास मेरे ॥ मैंतो हूं आत्माकृष्ण यह शरीर मेराहै मंडल । सुनो कानदे बनाहै तनमें मेरे रहस मंडल ॥४॥ आये वहां गोपिका बनके ज्ञानरूपधर गोपेश्वर। हमने उनको लखाये गोपी नहींहै शिवशंकर। पूजन करके पास बिठाया रहस दिखाया अतिसुन्दर। कहांलग बरणनकरूं इस काया में है चराचर । बनारसी सच्चिदानन्द चैतन्यरूप निर्गुणनिर्मल । सुनो कानदे बना है तनमें मेरे रहस मंडल ॥ ५ ॥

पूरेजौहरी संत परखते मनमेंमाणि और लालरतन । हित काहीरा खरीदें जिसका नहीं कुछमोल वजन । ब्रह्मबजार लगाया घटमें कृपाकमरबांधी कसके । सांचे जौहरी साधुसंत गुरु समझा साथै हँस हँसके ॥ ज्ञान की गठरी लगी पेंट में जरा नहीं नीचे खसके । करते सौदा सदा वो दया दुकानों पर बसके ॥ लगनकी लड़ियां लटकें जिसमें मुक्तरूप मोती लटकन् । हितकाहीरा खरीदें जिसका कुछ नहीं मोल वजन् ॥१॥ चतुराईकीचुन्नी ले आपसमें सबको दिखलाते। मेलका मूंगा खरीदें हर भक्तोंसे मिलजाते ॥ दिनपर दिनहो मोल सवाया कभी नहीं घाटा खाते । सांचे जौहरीके आगे सभीजवाहिर शर्माते ॥ तप करने का लिया तामड़ा पास में रक्खाकरके यतन्। हितकाहीरा खरीदें जिसका नहीं कुछ मोल वजन् ॥ २ ॥ यश करने का जागा पहना घर से निकल बाहर

थाये। वही इसपर जायकर अकीक हिकमतका लाये। पुण्य पापसे न्यारेहोकर लाखों पारस बनाये। फतेनाम के फिरोजे हरभक्तों के मनभाये। मनका मनका फेरें मनमें श्याम श्याम करके सुमिरन्। हितका हीरा खरीदें जिसका नहीं कुछ मोल वजन ॥ ३ ॥ हमने अब इस दिल को जौहर किया है यह सच्चादाना। वही जौहरी कि जिसने अपने दिलको पहिचाना। इसके बीचमें सबकी खानि है मुल्क मुल्कका खज्जाना॥ कहैदेवीसिंहवोही मालिक जिसका कुलजम्माना॥ बनारसीने दिल परखा कई लाख वजेके लगायेदन्। हित का हीरा खरीदें जिसका नहीं कुछ मोल वजन् ॥ ४ ॥

योगी होय जो सकल में बैठे देखै दशवें द्वारको वो। कारज करै जगतके सब और लखै अलख कर्त्तारको वो। नाचै गावै गाल बजावै ध्यान आतमा में धरके। सबमें रहै और सब में न्यारा पूरणहोय योग करके। निर्भय होके बिचरे निशदिन कबहू नहीं चले डरके। अपने आपमें आपको देखा धन्यभाग है वो नरके। जब यह काया त्यागे तब फेर पहुँचे परले पारको वो। कारज करे जगत्के सब और लखे अलख कर्तार को वो ॥ १ ॥ मसत्र नित छो बुद्धी निर्मल कर्म अकर्म न कुछ जाने। द्वैत भातसे अलग रहे अद्वैतज्ञान की बखाने। समदर्शी और सुद्धसमाधी अपने को आपीमाने। जीव ब्रह्ममें एक भावकर अपने मनमें पहिचाने। भूमीभार उतारन कारन धरे आप अवतार को वो। कारजकरे जगत्के सब और लखे अलख कर्त्तार को वो॥ २॥ त्रैगुणकोजीते औ चौथे पदरथपर असनी करैमती। नं

पूर्णसृष्टिको भोगजो करे वोहीहो बालयती। चराचर में अपने आपको देखे सबसे उसकी होयगती। आपी पिता और आपी पुत्रहै आपीही आपपती। चाहेकरे वह प्रलय और चाहेरचे सकल संसारको वह। कारज करे जगत् के सब और लखे अलख कर्त्तार को वह॥३॥ पुण्य पापसे अलग रहै दुख सुखका नहीं विचार करै॥ ब्रह्मज्ञानकी चर्चा अपने मुखसो सैरंवारकरै। आत्मदर्शीहोय तो अपने सब कुलका उद्धार करै। बनारसी ये कहै वह जो चाहै सो आप कर्तार करे। चाहेकरै वह नरपैदा और चाहे बनाये नारिको वह। कारजकरै जगतके सब और लखे अलख कर्त्तारको वह॥४॥

कालबलीसे लडके कुश्ती जीते जगतमें साधूसन्त। उनके दांवका किसीने आज तलक नहिंपाया अन्त। बांध लँगोटा बने जितेन्द्रिय कभी न देखें परनारी। गमके भोजन करें जब चढैंबदनपर तैयारी। कामक्रोध मद लोभ मोह इन इन पांचोंकी कुश्ती भारी। कालके ऊपर जायके बांधी अपनी असवारी। मनको किया मुराद पेंच बतलाये उसके तईं अनन्त। उनमें दांवका किसीने आजतलक नहिंपाया अन्त॥१॥ रामनामकी कसरतसे जबहुआ बदनमें ज़ोर बडा। उदय अस्ततक हुआ उनकी कुश्ती का ज़ोर बडा॥ पहलवान है वही जगतमें जोकोइहै गमखार बड़ा। उसके सानी कोई नहीं हुआ कहीं शहजोर बड़ा। लोग लडैं दुनियां में कुश्ती कालको जीतें सन्त तुरन्त। उनके दांवका किसीने आज तलक नहिं पाया अन्त॥२॥ जो कोई उनसे दस्त मिलावै उसके हाथमें यश होजाय। कभी पछाडैं जगत में मौतभी उसके बश होजाय। काल फांससे बचे वह

जिसकी रसनामें हरिरस होजाय । कपट की केंची तजे तो पहलवान चौरसहोजाय । वह नहिंगिरे किसीके गिराये जो सदगुरुकी पदैपढ़न्त । उनके दांवका किसीने आज तलक नाहिंपाया अन्त॥३॥हतकोडा मल लपेट कुश्ती और पेंच सब झूठे खेल। इन्हें छोड़के तू भज हरनाम और दंड निर्गुण कपेल। शील्सत्यका बांधसींगडा जो गुज़रे वह दिल पर खेल॥ कहेंदेवीसिंह अरेनरमूढ़तु करसद्गुरु से मेल ॥ बनारसी सन्तोंका सेवक कहै बातजो होवै तन्त । उनके दांवका किसीने आजतलक नहिं पाया अन्त ॥ ४ ॥

हिरदय में हरिहर हीरामन परखें जौहरी संतरतन । प्रीतिकापारस पासमें अलख लाल का करें भजन । शोध के वस्तर पहनें तनपर नयेनये सजकें भूषन । यशका जामा पहरके कुंजकुंजमें फिरें मगन् । पुण्यपोटकी फेंट लगाइ बासा रखते तेरी पवन् । तेज तत्वका तामदा झलके जैसे दिव्यअगन् । मुक्तकी माला अमोलदाने परम हंस पहिरे सज्जन । प्रीतिका पारस पास में अलख लाल का करें भजन् ॥ १॥ जपताहूं मैं नाम उसी का सत्य शब्दका गाहे मुमिरन् । सादा दिल था खरीदा सद्गुरु सबजा शुक्करन् । तुरियापदकी पाय तुरसुली श्यामा श्याम के गहे चरन् ॥ लगन लाडिली मिलिगये मोर मुकुट वाले की शरन् । लोकालाल लखुनियां पाया कहाये हमने सत्य वचन् । प्रीतिका पारस पासमें अलख लाल का करें भजन ॥ हरिनामका अकीक इसका बयान करना बहुत कठिन । बुरे कामसे बाज आगमन रूपे मूंगेका पहिन वरन॥ ऐसा रस गतछोडो साधो राधावर हैं शिर रतन ॥ मती बिसारो

नाम सुलक्ष लक्षण का पहिरो लटकन। जुम्मिश नहीं खाते हैं संतचित्त चुन्नीको करके धारन। प्रीति का पारस पास में अलख लालका करें भजन ॥३॥ परमारथ का पहिन के पन्ना जीतिलिये अवतीनोंपन। कोई कहै कुछ भी अपना मेरातो है वहीरतन। कहै मार अपने मनको अब पाहिन जमुर्रद जस जीवन। देवीसिंह ये कहैं कहूं खयाल दुमानी नयाचलन॥ मैंने तो अब लखाहैमनमें मुक्तरूप मोती भग-वन। प्रीतिका पारस पासमें अलख लालका करें भजन ॥ ४ ॥

त्रैलोकी है जिह्वा पर अब और किसी से काम नहीं। कोटिजन्मतक कभीजोभूलै शिवका नाम नहीं॥ इसीजिह्वा पर गंग यमुना सरस्वतीकी है धारा। इसी जिह्वा पर र-चाया तीनलोक का पंसारा॥ ब्रह्मा विष्णु महेश ने अब जिह्वापर आसन मारा। चांद और सूरज रहैं इस जिह्वा पर नवलख तारा॥ नारायण गोविन्द शब्द जिसने जि ह्वासे उच्चारा। उसीके ताईं हुआ मालूम हाल घटकामारा॥ चारधामहै इस जिह्वापर जिह्वा सा कोई धाम नहीं। कोटि जन्मतक कभी जो भूले शिवका नामनहीं॥ १ ॥ हीरे मोती लाल औ पारस जिह्वापर अकसीर बसे। दई देवते इसी जिह्वापर पांचों पीरबसे। नौनाथ चौरासी सिद्ध जिह्वा पर इसमें बावन बीरबसे॥ ऋषी मुनी सब इस जिह्वा में साधु फकीर बसे॥ शत्रुहन हनूमान जो जिह्वा में रघुबीरबसे। समुद्र सातों इसी जिह्वापर अमृत नीर बसे। रामचन्द्र हैं जिह्वापर और कहीं आराम नहीं। कोटि जन्मतक कभी जो भूले शिवका नाम नहीं। २। चार वेदषट शास्त्र अठारह पुराण जिह्वा के भीतर। सातद्वीप हैं औ

चौदह भुवन रतन चौदह सुन्दर। जब जिह्वासे कहा तो आई श्रीगंगारहदासके पर। अजामीलनेकहा नारायण मुक्तने गया वो तर। और कहा कछु नहींहै प्यारे जोकुछहैसो जिह्वा पर। इस जिह्वापर गायत्री पार्वती शङ्कर हरहर। आठयाममें इसजिह्वापर जिह्वासाकोई मापनहीं। कोटि जन्म तककभी जोभूले हरकानामनहीं ॥३॥ श्रीकृष्णने इसजिह्वापर तीनलोक को दिखलाया। देखके अर्जुन रूपको अपने मनमें घबराया हाथबांधिके अस्तुतिकरता सब कुछहै तेरीमाया। अभेदहै तू तेराती भेद किसीने नहिं पाया। जो कोई पूछे भेद किसीका उसेभेद कुछनहिं आया। कहैं देवीसिंह ज्ञानविज्ञान गेरेमनमें भाया। बनारसी कहै राम राम रट भूले सुबह और शाम नहीं। कोटिजन्मतक कभी जो भूले शिवकानाम नहीं ॥ ४ ॥

श्रीकृष्ण गोपाल गोकुलानन्दन गुरुगिरवरधारी। गोधी गोचर ज्ञानविज्ञान आत्मा अवतारी॥ परणब्रह्म अखण्ड सच्चिदानन्द सदा आनन्दकरें। कालको जीतें और जंजालपाप सब बन्दकरें॥ दुष्टोंको हनहनके मारें राक्षसकी मतिमन्दकरें भावभक्तको देंय और सन्तोंको निर्द्वन्दकरें॥ वेदशास्त्रगीता को गावें और नये नये छन्द करें। मुखपर मुरली बजावें अस्तुतिउनकीनन्दकरें॥ मातु यशोदा करें आरती ध्यानधरें नित त्रिपुरारी। गोधीगोचर ज्ञानविज्ञान आतमा अवतारी।१ मोरमुकुट मकराकृत कुण्डल कण्ठ कौस्तुभ मणी लसे। उरमें मुक्तमाल औरकटिपीताम्बर पीतकसे। श्यामगात छवि स्वरूप सुन्दर सन्तोंके हिरदयमें बसे। चरणमें झलके व सुन्दर पद्मपाद्मिनी देखहँसे। सब दुखदूर होंय उनके जो हरिको

भक्ती माहिँधँसे । गोविन्द गोविन्दकहै जो उन्हें न काला कालडसे ॥ परमहंस सब करैं अस्तुती ब्रह्मब्रह्म कहै ब्रह्म चारी । गोदी गोचर ज्ञानविज्ञान अतमा अवतारी ॥ २ ॥ नारायण वोही सत्य नारायण अनेक रूप अनन्त नयन् । मोहनीमूरति मोहेमनको हँसबोले मधुर वयन् । शेष नाग की शय्यापर करैं क्षीर सिंधुमें हरी शयन् । ब्रज में प्रकटे चराई नदबाबा की कामधयनु । वृन्दावनमें रहस रचाया उजयाली खिलरहीं रयन् । सब सखियनको साथ ले उनके संग में करें चियन्॥ जितनी ग्वालिनखड़ींरहसमें उतनेहि बन गये बनवारी । गोधी गोचर ज्ञानविज्ञान आत्मा अवतारी ॥ ॥ ३ ॥ मीन कूर्म बाराहकहीं नरसिंहरूप हरने धारा । बामन बन के छला बालि इन्द्र को राज्य दिया सारा ॥ परशु-राम हो क्षत्रिय जीते सहस्र बाहु को संहारा । राम रूप धरि छेद रावण को एक पल में मारा ॥ कृष्ण रूप सोलहों कला बल पण्डोंका किया निस्तारा । बनाई गीता इसी से दुर्योधन का दलहारा ॥ बोधरूपधर बने हैं बोद्धा निष्कलंककीतैयारी । गोधी गोचर ज्ञानविज्ञान आत्मा अवतारी ॥ ४ ॥ अपारमाया अलखलखी नहीं जाय कृष्ण अ-वतारी की । कवीश्वरावर्णनकरे जो महिमाननी मुरारी की ॥ सहस्रमुख से रटैं शेष नहींपावै थाह बिहारी की । बाल रूप धरि कामना बसुदेवकी सारीको ॥ रखी देवकीकी लज्जा कंसाको मार बहुभारी की । कहैं देवीसिंहप्रभू अब हमने शरणतुम्हारीकी ॥ बनारसी जै जै करता ब्रह्माने अस्तुति उच्चारी ।गोधी गोचर ज्ञानविज्ञान आत्मा अवतारी ॥ ५ ॥

विश्वरूप लिखरहा बाग में जिसमें आदमी की गुल्ज़ारी । रंग रंगके फूल हैं तरह तरह की फुलवारी ॥ पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण ये चारों दीवार बनी । हर एक तरफ से नदियों की छूटी है जो नहर घनी । सात सिन्धु सोई तालाब सातों सबका मालिक वही धनी । चाहे बनावे चाहे एक पलमें करदे फनाफनी । विश्व बाग़का मालिक है वही श्री कृष्ण गिरवरधारी । रंगरंग के फूल हैं तरह तरहकी फुलवारी॥ १ ॥ नव खण्डों के महल बनाये दशोंदिशा के दशद्वारे । न्यार किये हैं बाग़ में चौदह भुवन न्यारे न्यारे ॥ आसमानकी छत्त लगाई जिसमें जड़ दिये हैं तारे । गरज गरज घनकरैं छिड़काव छोड़ते फव्वारे ॥ चांद और सूरज चारों तरफ की करते हैं चौकीदारी । रंग रंग के फूल हैं तरह तरह की फुलवारी ॥ २ ॥ चमत्कार का चमन् लगाया पर ब्रह्मने आपाहि आप । हरज़र्रे में झलकता हरशय में वही रहा है व्याप । इसी बागके भीतर बैठे ऋषी मुनी सब करते जाप । कोई गावते भजन और कोई रहे पंचग्नी ताप । साधुसन्त करैं सैर बागमें परमहंस और ब्रह्मचारी । रंग रंगके फूल हैं तरह तरह की फुलवारी ॥३॥ तोते मैना लालहंस सब सैर बाग की करते हैं । जो नर हरहर रटैं वह नहिं जन्मैं नहिं मरते हैं ॥ देवीसिंह ये कहे ध्यान जो उस मालिकका धरते हैं । भवसागर के पार वह सहजहि जाय उतरते हैं बाग जहां के बीच में उसके क़ुदरत की फैली क्यारी । रंगरंगके फूल हैं तरह तरहकी फुलवारी ॥ ४ ॥

यह कायाहै कल्पवृक्ष तीनों गुणकी तीनों डार्ली । हर

एकफल है इसी में हरीनामकी हरियाली ॥ प्रेमप्रीति के पत्र लगे और परस्वारथके फूले फूल। उन फूलों में कोई नहीं कांटाहै और सोई न शूल। शील सत्यकी शाखा है आनन्दरूप कहैं जिसका मूल। मोर हंस सब और तोते मैना उसमें रहे हैं झूल। कल्पवृक्ष काया को सींचे निराकार निर्गुणमाली। हर एक फलहैं इसी में हरीनाम की हरियाली॥२॥समदृष्टीकी सुगन्ध सुन्दर परम तत्वकी चले पवन। छमाकी छाया में बैठे सन्त हरी का करैं भजन॥ छविरूपीहै डालवृक्ष में बैठे बोले हीरामन। ब्रह्मवीर्य्य से हुआ उत्पत्ति कियायह सत्यमथन।सबशाखाहैं भरी फूलसे कोई डाल नहींहै खाली। हर एक फलहैं इसीमें हरीनामकी हरियाली॥३॥सरजीवन जलभरा वृक्षमें हरीहरीकर हुआ हरा। नखसे शिखलों वृक्ष यह भावभक्ति से रहे भरा॥ कल्पवृक्ष काया में बैठ के जिसने जिसका भजन करा। अजर अमर वह हुआ और भवसागर में सहज तरा। रंग रंगके बने जाल और तरह तरह की है जाली। हरएक फलहैं इसीमें हरीनामकी हरियाली॥४॥मुक्तरूप फल लगे वृक्षमें भजन करे सोई पावे। जन्म मरण से होवे वह रहित नहीं आवे जावे। राम राम रस भरा फलों में जो कि राम सों लव लावे॥ कहैं देवीसिंह होय वह अमर नहीं मरने पावैं॥ कल्पवृक्ष काया का है वह निराकार निर्गुणमाली। हरएक फलहैं इसीमें हरी नाम की हरियाली॥ ४॥

अमरनाथ ने अमर कथा जबकही सुने श्री पार्वती। उत्तराखण्ड में लगाआसन बैठे कैलासपती॥ अविनाशी

कैलासी काशी उत्तराखण्डमें बसाई। बैठे गुफामें गौर को अमरकथा जब सुनाई। अमृतवाणी सुनी उमाके नेत्रमें निद्रा भरि आई। वही कथा फिर एक तोतेके बच्चे ने सुनिपाई। दिया हुंकारा शिवजी को शिवकहैं अर्थ कर समुझाई। सुआ सुनताथा औ वहीं सोती थी गौरा माई। परब्रह्म का त्ये लहुआ पर उस तोते की बड़ी रती। उत्तराखण्डमें लगाआसन बैठे कैलाशपती॥१॥हुई कथा सम्पूरण शिवके पार्वती को बोलाया। उठी गौरजा कहाशिव मैंने कुछ नहीं सुनिपाया। फिर शिवजी ने कहा हुंकारा किसने मुझको सुनाया। और तीसरा यहां पर कौन बिधी करके आया॥ चढ़ा क्रोधशिव शंकरको करसे त्रिशुलको उठाया। उसीवक्त फिरवहतोतेका बच्चा उठके धाया॥दौड़ेशिव उसके पीछे वह निकल गया कर समुत मती। उत्तराखण्ड में लगाआन बैठेकैलाशपती॥२॥तीनलोकमें उड़ा वह तोता कहीं मिला नहीं ठिकाना। उड़ते उड़ते बहुतहीं अपने मनमें घबड़ाना। पतिव्रता थी खड़ी करै स्नान उसी को पहिचाना। दौड़के तोता जाय फिर उसके मुखमें सामाना। वहां किसी का जोर चले नहीं क्योंकर हो उसका पाना। फिर शिवजी ने दिया वरदान कहा वह है स्याना॥ वही हुये शुकदेव व्यास के पुत्र बडे भये यती सती। उत्तराखण्ड में लगा आसन बैठे कैलासपती॥३॥अमर कथा का बड़ा महातम है जो कोई सुनने जावे। श्रवण कियेसे होय वह अमर नहीं मरने पावे॥ चारवेद षटशास्त्र अठारहपुराण सब इनमें आवें। अमरकथा को आप शुकदेव सदा मुखसे गावें। वह प-

ण्डित हैं नहे कि जो कोई अमरकथा को सुनावें। और दूसरे बोल नहीं कछु मेरे मनमें आवें॥ जिस दिन शिवने कही कथा कौन वार तिथि कौन हती। उत्तराखण्ड में लगा आसन बैठे कैलासपती॥ ४॥

योगी साधें योग योगमें कायाका है खेद बड़ा। हमने जाना योगसें वियोगकाहै भेद बड़ा। योग किया रावणने योगीवन सीतामाता हरलाया। रामचन्द्रने किया वियोगवड़ा एक यशपाया। योगकिया हिरण्यकशिपुने प्रह्लाद भक्तको डरपाया। वियोग करके वने नरसिंह दुष्टको गिराया। योग किया भस्मासुरने शिवशंकरको अतिसताया। वियोगकर के विष्णुने उसेभस्म कर जलाया। योगी पढाते योग शास्त्र वियोगी का है वेद बड़ा। हमने जाना योगसे वियोगकाहै भेद बड़ा॥ १॥ योगीवन के चला जलन्धर हरसे युद्ध कीना भारा। वियोग करके हरी ने छली जलन्धर की दारा। उसका योगघटगया पकड़के शिवने दुष्ट कोसंहारा॥ इसीसे कहतेयोगसे वियोग का रस्ता न्यारा। योग किया कंसाने भागे श्रीकृष्णको वीचारा। वियोग करके कृष्णने केशपकड़ उसको मारा॥ योगी करते योग विधी से वियोगी का है निषेध बड़ा। हमने जाना योगसे वियोग काहै भेदवड़ा॥२॥ योगकरनकी श्रीकृष्णने सखियों को भेजी पाती। कहती सखियां ऊधो यह वात नहीं मनमें आती॥ योगी धारें भस्म हमने वियोगमें जाली छाती। योगी मदको पीवें हम वियोगमें हैं मदमाती॥ योगी बाधें सेहली हमने वियोगकी बांधी गाती। जायके ऊधो कृष्णसे कहो

यह सखियां समझाती । वियोगी येथे हीया योगी तो काम में करते बड़ा । हमने जाना योग से वियोग का है भेद बड़ा ॥ ३ ॥ योगी कहते ज्ञानवियोगी फिर इश्कमें दीवाने । वि-योग जिसको नहीं वह योगके रस्ता क्या जाने । योगी तो जंगल में बैठे चढ़ावते अपना माने । वियोग करके वियोगी घटमें आतम पहिचाने ॥ योगीके शिर जटा-वियोगी शिर से पर हैं मस्ताने । कहें देवीसिंह योगी से वियोगी हैंग स्याने । बनारसी ने वियोग साधा योगमें देखा खेद बड़ा । हमने जाना योगसे वियोग का है भेद बडा ॥ ४ ॥

ब्रह्मारचते सृष्टि पालना विष्णू करें शिव संहारें । धन्य धन्य श्रीगंगाजी जी अधमपापियों को तारें । गणराजी विद्या का वरदें बुद्धिबुद्धिका दान करें । सूर्य तेज देवे शरीरमें जगमें सब सन्मान करें ॥ शीतलताई देवें चन्द्रमा सतगुण का पर धानकरें । हनूमानजी चाहे तो एक पलभरमें बलवान करें ॥ भैरोंजी भयहरें डरें नहिं दुर्जनको पलमें मारें । धन्य धन्य श्रीगंगाजी जो अधम पापियोंको तारें ॥ १ ॥ इन्द्रका सुमिरन करे तो पावे सुन्दरसी अवलानारी । दुर्वासाजीपवन अहारी कामी को करें ब्रह्मचारी ॥ कुबेरके हैं भक्त जो वह तो बड़े बड़े मायाधारी । धर्मराजजी धर्मवतावें जो हैं उनके हितकारी ॥ शेषजी अपने सहस्रमुखसे नये नाम नित उच्चारें । धन्यधन्य श्रीगंगाजी जो अधमपापियोंको तारें ॥ २ ॥ तनुका रोगदूर करदेते बड़े वैद्य अश्विनीकुमार । वेदव्यास पुराणके मुनिहैं वेदका नित्य दिनकरें विचार । वालपन से त्याग बतावें सनकसनन्दन सनतकुमार । करो शनश्चर का

पूजन तो सकल बिपदको देवेंटार। जितने देवते हैंगे सो तो गुरुबृहस्पति को धारें। धन्य धन्य श्री गंगाजी जो अधम पापियों को तारें॥३ तेतीस कोट देवते सब अपना अपना देते हैं फल। अतिप्रसन्न होते हैं उनपै जब चढ़ता है गंगाजल। देवीसिंह यह कहै न भूलूं मैं श्री गंगाको यकपल। सब से ऊंचे शिवजी उनके शीश के ऊपरगंग अचल॥ बनारसीके अघम पापको धोवें गंगा की धारें। धन्यधन्य श्रीगंगाजी जो अधम पापियों को तारे॥४

पापी एक मरा गंगापर हुई वहां उसकी तय्यारी। महिमासुनो कानदे जैसी निकसी वाकी असवारी। आया कंचन का बिमान सुन्दर और वामें रत्न जड़े। ब्रह्मा विष्णु महेश शेष सनकादिक सब लेने को खड़े। उधर से आये यम के दूत वह ले ले हाथमें शस्त्र बड़े। देखतेही दल श्रीगंगाका भागे यमके पांवपड़े। वह जो पापीथा सो तो तनुत्याग के बन गया त्रिपुरारी। महमा सुनो कान दे जैसी निकली वाकी असवारी॥१॥ अद्भुत भूषण कुबेरजी झटपट से आपी ले आये। पीत वस्त्र नख शिखलों उत्तम उसके तनुमें पहिराये॥ चोवा चन्दन इतर अगरजा सबी देवते ले धाये। पत्र पुष्प से पूजनकर कर प्रसन्नभये मंगल गाये॥ तीन लोक चौदहों भुवनकी पाई उसने सरदारी। महिमा सुनो कानदे जैसी निकली वाकी असवारी॥२॥ मोरमुकट मकरा कृत कुण्डल गले में बैजन्ती माला। शीशछत्र सुवरण का झूमै जयजय शब्दकी ध्वनि आला॥ कंठ कौस्तुभमणी हार गजमुक्तोंका उरमें डाला। बाजूबन्द

नौस्तन और करमें कंगनका उजियाला । मरे अटल भंडार उसे गंगा ने मायादी सारी । महिमासुनो कानदे जैसीनिकली वाकी असवारी॥३॥जबवो वैठा विमान में तो ब्रह्माजी मुरछल लाये ।इन्द्रडुलावें पंखासव देवतोंने पुष्प अति परसावे ॥ शिव और विष्णुने करी शङ्खध्वनि ऐसे फल उसने पाये । धन्य भाग्य हैं उनके जो कलिकालमें गंगाजी न्हाये । करैंनृत्य गंधर्व सकल मिलिवाजे वजनलगे भारी । महिमा सुनोकानदेजैसी निकली वाकी असवारी ॥४॥अष्टसिद्धि नौनिद्ध सभी करजोरिजोरि आई आगे । जिन त्यागे गंगाकेतीर तनु उनके भाग्य ऐसे जागे। जबवह वैठाविमान तो गोले अनहदके दगने लागे। नन्दीगण अरु गरुडसिंह गज विमानके नीचे लागे॥ और सकल वाहन कांधा देनेलागे वारीवारी । महिमा सुनो कानदे जैसी निकली वाकी असवारी ॥ ५ ॥ हनूमान जी खास बनगये भैरव बनगये अगवानी । गणेशजी डंका ले आगे चले महायोगी ध्यानी ॥ छप्पन कोटि मेघने मिलके रस्ते में छिड़का पानी ।इन्द्र सूर्य्य ने करी रोशनी सब देवतों के मनमानी ॥ तेतीसकोटि फौजसब संगमें चली औ छवि न्यारी न्यारी । महिमा सुनो कान दे जैसी निकली वाकी असवारी ॥६॥ जब वह पहुँचा अमरलोकपुर तब फिर आये अपने धाम । मिली ज्योति में ज्योति रूप है श्रीगंगा को करो प्रणाम ॥ याहीते मैं कहत जात हों जपो सकल गंगा का नाम । और कोऊ नहिं अन्त समय में आयगो अब तुम्हरे काम।बनारसी यह कहैं कभी तो आवैगी मेरी वारी । महिमा सुनो कानदे जैसी निकली वाकी असवारी ॥ ७ ॥

आजु युद्ध की करो तय्यारी श्रीगंगाजीतुमममसे । मैं पापीतुम तारणहारी वनिहे पाप वहुत हमसे ।। मेरो पापहै पहाडकेसम समर करन मैं वीर वड़ो । देखों मैं अब आयके कैसेहैगो तुम्हारो तीरवड़ो । रणमें लडे हटैनहिं कबहुं मेरो पाप रणधीर बड़ो । तुमतो यही कहतहोमुखसे मेरीरिपुका नीरवडो । देखों उनको पुरुषारथ जोलडिहैं आय मेरे तनसे । मैं पापी तुम तारणहारी वनिहै पाप वहुत हमसे ।।७।। जबसे जन्म भयो पृथ्वी पर कभी न हरको नामलियो । सेवाकी नहिं मातु पिताकी साधुनको नहिं कामकियो । हरो वहुत धन ठग ठगके नहीं हाथसे एकहु दामदियो । कियो वहुत विषपान अमृत को भी एकहु यामपियो । कैसे बचिहों कालसे मैं अब दौन छुटहुहै रबहिं यमसे । मैं पापी तुम तारणहारी वनिहै पाप वहुत हमसे ।। २ ।।वेद पुराण वखानत निशिदिन अधम पापियोंको तारा । किया बहुत संग्राम कालसे और यमदूतों को मारा । सुनीवात यह श्रवणसे मैंने कियेपाप अपरम्पारा । करिहों और बहुतसे अघदेखों कैसेहो निस्तारा । अवतो यही लड़ाई ठानीहै गंगाजी मैं तुमसे । मैं पापी तुम तारणहारी वनिहै पाप बहुत हमसे ।।३।।अहहैं जबयमदूतउनको दर्हेंय्योद्धा भारी । तव तुम सोंहिबचैहो तौ मैं जइहों तुम्हरी वलिहारी । तुम्हरे गणहैं पुष्पलिये और यमके दूत शस्तर धारी ।। इसका उत्तरदेव कि सैना किसविधि से यमकी हारी । कहो मुझे समुझायके झटपट छूटजाऊँ मैं इस भ्रमसे । मैं पापी तुम तारण हारी वनिहैं पाप बहुत हमसे ।। ४ ।। भगिहैं सब यमदूत वुलैहो मैं तुमको लेनके विमान ।

एक बिन्दु गंगाजलसे जलजाय पापनहिंरहैं निशान । द्विजवा पदेवीसिंहने नह पापथी होगये पुण्य समान । बारम्बार दत कहत जातहो क्यों बनारसी तुम मनसे यें । पापी तुम तारा णहारी बनिहैं पाप बहुत हमसे ॥ ९ ॥

ब्रह्मा विष्णु महेश शेष सनकादिकने जदकियाभजन । तबआई ब्रह्ममण्डलसे श्री गंगाजी तारण तरन । ब्रह्मरूप निर्भय निर्वाणी अखण्डगंगाकी धारा । विष्णुजीने नखाकेपास आई तबशिवजीनेधारा । जटाको उनके शोभादी औसरूप भी सुन्दर सुद्धारा । आगे कहूंगा वृतान्त जिसविधि तीन लोकको उद्धारा । अस्तुतिकरके आप ईशने शीशपढ़ाई भये मगन॥तबआईब्रह्ममण्डलसेश्रीगंगाजीतारणतरन ॥ १ ॥भागीरथने करी तपस्या मगनभये शम्भुभोला । कहामागवह्मसे तब भागीरथ मुखसे यों बोला । गंगादेउनाथजी हमको शुद्धकरौं कुलकीचोला । तबफिर अपनीजटाको शिवनेअपने हाथनसेखोला । एक बूंदगंगाजल निकला जटासे जब आनि किया यतन । तब आई ब्रह्ममण्डल से श्री गंगाजी तारण तरन ॥ २ ॥एकबूंदकी तीनधार भई धाराएक गई पाताल । शेषनागने दर्शनपाये जीवनमुक्तभये सबव्याल । एकधार आकाशगई सब देवत देख भये खुश हाल । हाथ जोरि दण्डवत्करी गंगाने उन्हें तारा तत्काल । एक धार भागीरथलाये मृत्युलोक तारन कारन । तब आई ब्रह्ममण्डल से श्री गंगाजी तारण तरन ॥ ३ ॥मृत्युलोकमें चलींवेगतितब समुद्रने किया विचार । हाथजोड गंगसे कहा तुम्हारे बलका नहिं वारा पार॥ ये मुझसे नहिं जाय सहारा बहुत

सिन्धुने करी पुकार। तब गंगाने प्रसन्न हैके धारा अपनी करीं हजार। नाम पड़ा गंगासागर कह इसारसी नितकर दर्शन। तबआईब्रह्ममण्डलसें श्रीगंगाजी तारण तरन ॥ ४ ॥

और सकल देवतन से फलजो मांगोगे तब पावोगे। बिन मांगदेहैंगंगाजीजोएकबारतुमन्हावोगे। शिवजी की जो करो तपस्या मनमें ध्यानलगावोगे। और श्रीगंगाका जल जब उन केशीशचढावोगे।बेलपत्रऔर आक धतूरा मंदिर में लेजावोगे। तब वह है हैं प्रसन्न जबतुम दोनों गाल बजावोगे। वोकहि हैं कछुमांगोहमसे तब तुम उनसे मांगके लावोगे। बिन मांगेदेहैं गंगाजी जो एक बार तुम न्हावोगे॥१॥ठाकुरद्वारेजाय जाय जब विष्णुको शीश झुकावोगे। पत्रपुष्पसे पूजन करके माला को पहिरावोगे। धूप दीप नैवेद्य लगाकर और विष्णुपद गावोगे। तब वह रीझेंगे तुमसे जब उनको भजन सुनावोगे। वह कहि हैं कछु मांगो तुम हमसे तब मांगोगे शर्मावोगे। बिनमांगे देहैं गंगाजी जोएकबार तुमन्हावोगे ॥ २ ॥ ब्रह्मा जीका सुमिरण करके लाखों बरष बितावोगे। कन्दमूल फल खाय खाय के बहुतहि कष्ट उठावोगे ॥ यह काया कञ्चनतन अपना इसको खूब सुखावोगे। तब वो दर्शन देहैं पइहो फल जो कुछ तुम चाहोगे ॥ वह कहि हैं कुछ हम से लो तब तुम करको फैलावोगे। बिन मांगे देहैं गंगाजी जो एकबार तुम न्हावोगे ॥ ३ ॥ करिहो पृथ्वी परिकम्मा और चारों धाम फिरावोगे। जगन्नाथ और रामेश्वरमें जायके पांव थकावोगे। और द्वारकामें छाप खाखाकर बदन जलावोगे। जइहो बद्री किदार तब तुम

क्योंकर शीत बचावोगे। वहां तो तुम आपही मांगिहो मागं न में बहुत लजावोगे। बिनमागेदेहैं गंगाजी जो एक बारतुम न्हावोगे॥४॥और कहींजोपामकर्म करिहो तो पाप उठावोगे। गंगाजी में देहभी धोयहो तोभी नहिं पछितावोगे। लात लगाइयो फाँदियो कूदियो बहुतहि धूममचावेगे। तबभी माता प्रसन्नहोयगी वाकेपुत्र कहावोगे। बनारसी कहैं अन्त में मुक्ती आपीसे तुम पावोगे। बिन मांगेदेहैं गंगाजी जो-एक बार तुम न्हावोगे॥५॥

भोजनकर या भूखारहु या वस्त्र पहर याफिर नंगा। जौलों जिये तु कहु इस मुख से जयगंगा श्रीजयगंगा। नेम धर्म औ कर्म अकर्म में योग भोगमें कहुंगगा। दुख में सुख में भलेबुरेमें रोग अरोगमें कहुगंगा। सोवत जागत राह बाट में हर्ष शोक में कहुगंगा। मातु पिता दारा सुत बिछुड़े तो बियोग में कहुगंगा। धन दौलत या राजपाटहो या फिर ननजा भिखमँगा। जौलों जिये तू कहु इस मुख से जयगंगा श्रीजयगंगा॥१॥रोवत हंसते नगरअरुवन में जहां रहै तू कहु गंगा। सम्पत् विपत कुपत और पतनरसबी सहैं तू कहुगंग डूबत तिरत मरत या जीवत मेरे कहे तूकहु गंगा। ये मनमूढ़ा समझ अब झटमेरो मन कह तू कहु गंगा। जोतेरे मन बसे-कार यह लगे तेरे चितमें चंगा। जौलों जिये तू कहुइसमुख से जय गंगा श्रीजयगंगा॥२॥खेलतकूदत उछलत फांदत अपने मनमें कहु गंगा। बाल जवानी और बुढ़ापा तीनों मनमें कहु गंगा। धावत गावत ताल बजावत हरराग में कहु गंगा॥ सात द्वीप नवखण्ड और चौदह भुवन में

कहु गङ्गा । अंधाहो या बहराहो या लूला हो या इकटंगा जौलौं जिये तू कहु इस मुखसे जयगङ्गा श्रीजयगङ्गा ॥ ३ ॥ घटा नफे में दिवस रात्रि में आदि अन्त में कहु गङ्गा । संग असंग और रंग कुरंग में साधु सन्त में कहु गङ्गा ॥ चरा चर चैतन्य औ जड़में तू अनन्त में कहु गङ्गा । चाहे सबमें बैठके कहु चाहे एकान्त में कहु गङ्गा । बनारसी यों कहैं चहे तू गरीब बन या करंदगा । जौलौं जिये तू कहु इस मुखसे जयगङ्गा श्रीजयगंगा ॥ ४ ॥

सागरकी गिनी जांय लहर गिने जांय तारे । नहीं जांय गिने श्रीगंगाजीके तारे । षट्शास्त्र गिने जांय गिनेजांयसब नरनारी । दशादिशा गिनीजांय सृष्टिगिनीजांय सारी । सिद्ध साधु गिनेजांय गिनेजाय आचारी । राजा रानी गिनेजाय गिनी जांय खलक सरकारी । गिनेजाय शाह शाहानी गिनेजांय हलकारे। नहीं जाय गिने श्रीगंगाजीके तारे॥१॥ गिनेजाँय नदी नद सिंधु गिनेजाय नाले । गिनेजांय श्वेतरंग लाल गिनेजांय काले । दरख्त डाली जांय गिनी गिनेजांय ये डाले । छतीसरागिनी रागसकल गिनडाले । गिनते २ कई हज़ार शायर हारे । नहीं जाय गिने श्रीगंगाजी के तारे खग चरन्दजाते गिने गिनेजांय चातर । हरजात गिनी-जांय नगर गिनेजांय घरघर । कागज स्याही जाय गिनी गिनेजांय अक्षर सरदारगिनेजांय गिनेजांयसागरसराक्याजाने गंगा ने कितने शठ निस्तारे। नहीं जांय गिने श्रीगंगाजी के तारे ॥ २ ॥ दिन रातगिनी जांय गिनीजांय तिथि घड़ी । शायरी गिनी जांय गिनी जाय छन्दकी लड़ी । शायर

कायर जांय गिने गिनीजांय कहीं। जंगल खेत जांय गिनी गिनीजाय जड़ी। यह सत्य सत्य छन्द काशीगिरि ललकारे। नहीं जायँ गिने श्रीगँगाजी के तारे ॥ ४ ॥

अब विष्णुसे जाकरयमने यही पुकारा। गँगाने बँद करादिया नरकक्काद्वारा। लाखोंपापी पृथ्वीपैरोजमरतेहैं। क्या कहूं मैंवह एकक्षणभरमें तरतेहैं। मेरे भयसे भी जरा नहीं डरते हैं। गंगा के गण उनकीरक्षा करतेहैं।बिन भजनकिये होता उनका निस्तारा।गँगानेबँदकरादिया नरकक्काद्वारा॥ ॥ हिन्दूयातुर्कया बेहना डोम कसाई। भँगी धोबी हडफोड़ या होवे नाई।गँगा की लहर जिसे दूरसे दी दिखाई। फिर अँतसमय में उसने मुक्तिपाई। दर्शन करते ही तरा महाहत्यारा। गंगानेबंदकरदिया नरकका द्वारा॥२॥जो मेरेदूत पापियों को जाँय पकडने। तो गंगाके गण आवें उनसे लड़ने॥ वह देख देख दूतों को लगे अकड़ने। और मारे बाण तनबीच चले वह लड़ने। मैं लड़लड़ कई लाख लड़ाई हारा। गंगाने करदिया नरकका द्वारा ॥ ६ ॥ गंगासे सौ योजन पर एक नगरथा। उस नगरमें एक पापी ऊँचा का घर था।वह पाप कर्मकर करता रोज गुजरथा। मरगया तो उस पर पड़ा एकबस्तरथा। गँगाका धोया उसीने उसको तारा। गंगा ने बन्द करदिया नरकका द्वारा॥४॥ यह सुनी बात तब विष्णुजी यमसे बोले। गंगाकी महिमा कहाँ लों कोई खोले। इस नेत्रसे दर्शन श्रीगंगा के जोले। वैकुण्ठ में वह फिर झूले सदा हिंडोले। कुछ वश नहीं मेरा चले न चले तुम्हारा।गंगाने बन्द कर दिया नरकक्काद्वारा ॥ ५ ॥

जब मृत्युलोकसेगंगा आय सिधरि हैं । तब वह पापी फिरको नाविधी करि तरिहैं । उस कालमें जो कोई पाप कर्मकरि मरिहैं । वह आन आनकर नरक तुम्हारो भरिहैं । यमराजजी अब थोडे दिन करो गुज़ारा । गंगा ने बंदकरदिया नरकका द्वारा ॥ यह सुनीवात यमराजने घरफिरआये । कुछहँसे और कुछ कुछ मनमें पछिताये । मनमारके यह गंगाके वचनसुनाये । अब तो तुम्हरे थोड़ेदिन रहिनेपाये । कहैंवनारसी कुछ यमका चला न चारा । गंगानेंबंदकरदिया नरककाद्वारा॥७॥

जौलों पृथ्वीपर है श्रीगंगा की धारा । तौलों यमराजा करिहैं कहा तुम्हारा । मत डरो कोई यम दूतसे मेरे भाई । रक्षा करने को है श्रीगंगामाई । जबसे शंकरने अपने शीश चढ़ाई । तब ईश और जगदीश की पदवीपाई । शिवबना वोही जिसने एक गोता मारा । तौलों यमराजा करिहैं कहा तुम्हारा ॥ १ ॥ कुछजोर नयमका चले पाप नहिं लागे और कालभी देखै दूरसे तो वहभागे । जो गंगा के दर्शन कर कायात्यागे । वह अमर लोकपुर बसै अलख है जागे । यह निश्चय करके मानों वचन हमारा । तौलों यमराजा करि हैं कहा तुम्हारा ॥ २ ॥ चाहे हो पुत्र कुपुत्र तो माता पाले । कुछ कर्म्म अकर्म्म न उसके देखे भाले । जो इकबार प्राणी गँगा में न्हाले । वह जन्म जन्म के सकल पाप को टाले । है श्री गंगा की महिमा अपर पारा । तौलैं यगराजा करि हैं कहा तुम्हारा । मतचलो हमारे मित्र किसीसे डरके । निर्भय हो दर्शन श्रीगंगा के करके । कहैं देवीसिंह गगाको ध्यान में धरके । जइहौ भवसागर

सहजहि आप उतरके ॥ गंगाके बलसे दल सब यमका हारा । तौलों यमराजा करिहैं कहा तुम्हारा ॥ ४ ॥

श्रीगंगाजी के तीर नीरपीनेको नाग इकआया। था बडाबो विषधर नागभागकुछ उसदिन वाकेजागे । वह जलपीनेजब लगातौ मेढक देखदेखकरभागे । इतनेमें आयेगरुड चोंचसे पकडकेखानेलागे । झटपटनाके गये निलकप्राण तत्कालही उसनेत्यागे । मरतेहि विष्णुतनधारा । चढिगरुड़पै यहीपुकारा । तूबाहनहुआहमारा धनधन गंगाको बिन्दुमुझे गोविन्दहि आपबनाया । श्रीगंगाजीकेतीर नीरपीनेकोनागइकआया॥ ॥ शिर मोरमुकटकी लटक कानमें कुण्डल अधिक विराजे । गलमें वैजयतीमाल पीत पीताम्बर तन पर साजे । वह शंखचक्र और गदा पद्मकी सम्पूरण छविछाजे । ये चरित्र वाके देख देखके गरुडजी मनमें लाजे । कुछ कहते नहीं बनिआवे । गंगा जो चाहे बनावे । चाहे शिवका रूप धरावे । है महिमा अपरम्पार पार नहिंसुरनर मुनिने पाया ॥ श्री गंगाजी के तीर नीर पीनेको नाग इक आया ॥ २ ॥ तब श्री गंगाकी आप स्तुति करी गरुड़ ने मुख से । हुई प्रसन्न गंगा मातु तो बाणी बोली एक सन्मुख से ॥ था वहुत कष्ट में नाग छुटाया मैंने इसको दुख से । अब तुम इसको वैकुण्ठ पहुंचाओ बसे जाय यह अति सुख से । ये गरुड ने आज्ञा मानी । गंगा की महिमा जानी । तब उड़े दड़े बलवानी एक पल में पहुंचे जाय उसे वैकुण्ठ में तुरत बिठाया । श्री गंगाजी के तीर नीर पीने को नाग इक आया ॥३॥ जो यह अस्तुति गंगाकी कान देय सुनै और मुख से गावै । वह

भुक्तिमुक्ति सम्पूर्ण पदारथ मन माने पावै । गंगा से पर न और देव कोई दृष्टि में आवे । है धन धन वाके भाग जो दर्शनकर और गंगान्हावे । कहैं देवीसिंह भजु गंगा । तब तेरा मन होवे चंगा । मन वनारसी ने रंगा । गंगाजी में तन बोरबोर झकझोरके पाप बहाया । श्री गंगा जी के तीर नीर पीनेको भाग इक आया ॥ ४ ॥

हरेक ढूंढते जंगलमेंदवा रसायनकी बूटी । नारायण हैं सर जीवन भई वह बूटी हमने लूटी । कोईढूंढताउस बूटिको जिस में पारा तुरत मरे । कोई खोजता जड़ीको जोकोई तनकायाके दुखहरे।बहुत लोग खोद पृथ्वीको वृक्ष काटते हरेभरे । उनको भीफिर यम काटेगा कहैं शब्दये खरेखरे। हरीहरी बूटीहैसमझो हरी नामहै सबसे परे । उस बूटीको जिसने पाया वह भव- सागर सहज तरे ॥ रामरसायन पाई हमने और रसा' यन सब छूटी । नारायण हैं सरजीवन भई वह बूटी हम ने लूटी ॥ १ ॥ कोई कहै सिंगरफ मारें और काढ़े ग न्धकको तेल । कोई देखते जड़ी ब्राह्मी कोई कोई ढूंढते अम्बर बेल । हमने सबको देखा यारो येतो हैं सब झूठे खेल । अमर नामहै दत्त निरंजन उसको अपने मनमें मेल । मनको मारके बनाले कुश्ता जोगुजरे वह दिलपर झेल । तनको शोधके शुद्धकरो तुम तजो झूठ और तजो झमेल । जौन शख्श फूंके धातुको उनके हिये की हैं फूटी । नारायणहै सरजीवन भई वह बूटी हमने लूटी ॥ २ ॥ कोई मारते अवरख तांवा कोई फूंकते हरताल । हमने अपने मनको मारा मिले हमें गोविंद गुपाल । कोई कहैं हम

चांदीमारें जिसमेंहो कुछ धन और माल । इन कर्मोंको जोई करता उसका होता हाल बिहाल । कोई कहे हम सोना मारें और करें पैसेको लाल । ठग ठगके लूटें दुनियांको उनको एक दिन ठगेगा काल । बहुत घोटते खरलमें धातू सन्तोंने काया कूटी । नारायण हैं सरजीवन भई वहबूटी हमनेलूटी ॥३॥ कोई मारतेहैं कलहको जिसमें होवे पुष्ट शरीर । घरको फूंकके त बाह किया वह अमीर से होगये फकीर । साधूका नहिं धर्म जौनमारे धातू करके तदबीर । कहें देवीसिंह हरीहरी कहो जो जिह्वा हैगी अकसीर । खाकसारको जवां रसायन इनमेंहै हर एक तासीर । जवांसे वह मुरदेको जलादे जवांसे दे डालें जहांगीर । बनारसी यें कहे हमारो रामनाम हैगा घूंटी । नारायण हैं सरजीवन भई वह बूटी हमने लूटी ॥ ४ ॥

बहुत दिनों पर बिछी है चौसर सँभल के खेलो यह चाल क्या है । जो फेंकूपांसा तो छूटें छक्के नलोदमनकी मजा ल क्याहै । मैंहूं जुवारी सुघर खिलारी हमेशह जीतूँ कभी न हारूं । सदा पड़ै औदुई दूरहो चौरासी घरकी नरद मारूं । पडे अगरचे जो तीन काणे तो अपने दिल में मैं यह बिचारूं । ये तीनगुणहैं सबी के तनमें मैं इनसे चलके अलग सिधारूँ । हैं चारकोंण वह चौथापद है मिला अब हमको मलाल क्या है । जो फेंकुं पांसे तो छूटें छक्के नलोदमनकी मजाल क्याहै ॥ १ ॥ हैं इसमें पजडी सो पांचतत्व हैं मैं इनसे गोटी चलो बचाइके । और फेंकूं छकड़ी ले आऊं सत्ता सतको सतगुरुके पासजाके । हैदाव अठासी आठासिद्धि नवनिधिको मैं रक्खुं मनाके ।

पड़े अगर छः चहार दशतो दशोद्धार देखूं दिल लगाके । न रंग अपनामरे किसी से मैं अब समझाताहूं काल क्या है। फेकूं पांसे तो छूटें छक्के नलोदमनकी मज़ाल क्याहै॥ ३॥ आये हमारे वह दश पौ ग्यारह सो ग्यारहों रुद्र हैं बदनमें । और बारहरासें सो दोनों बारह समझ शोचकुछ तू अपनेमन में । बड़ेहैं इनमें वह दोनों तेरह मैं तेरह तेरह कहूंहू मनमें। तू चौधरी जहांका मालिक नज़र पड़े चौदहों भुवनमें । कहूँ भजन मैं ये पन्द्रहोंदिन माया मोह का वह जाल क्या है। जो फेंकूं पांसे तो छूटें छक्के नलोदमनकी मज़ाल क्याहै ॥ है आत्मा सोलहों कला ये सो पासमें सोलहों बनाये । वह आये सत्रह ये सत्रहों अब हरी हरी हरिके गुणगाये। पढ़े अठारह पुराण हमनें औ अर्थ उसके थे दिलमें पाये । उठेरंग बदरंग भी उठगये वह सारी मायाको जीतलाये । बनारसी का सदा बनारस बनाहुआ है बवाल क्या है। जो फेंकूं पांसे तो छूटें छक्के नलोदमनकी मज़ाल क्या है ॥ ४ ॥

लाललाल तन झलकत ललकत चलत दलत दल गर्जतघन । करतसकल जगहर्ष करें जयजय श्री अञ्जनी नन्दन ॥ तरण तारण तरण तारण धरणी धारण हैं कष्ट दलन । रक्तरंग अंगजंगजद करत लगत संसार हलन । जल थल हल चल करत धरत जद चरण गर्जिकर लगतचलन । झल झल झलकत जलत गढ़ लँक दैत्य शठलगत जलन । हतहत गत करदेत शठनकी जड़त शस्त्रकाटत नसतन । करत सकल जग हर्ष कर जय जयश्री अञ्जनीनन्दन ॥ १ ॥ गर्जत लर्जत धरण चरण जद हलत

धरणिडगडगकरनन । शेष थकत अतिहकन मतारिन्धु देखि जिनके चरनन । हरी जरी नहीं देर करी गिरिलाये सकल कर दिये जरनन । सेतुडेतुकर रचाया ऐसे हैं संकट हरनन । तनितानि हनिहानि रणदल छेदत राक्षस की काटत गरदन । करत सकल जग हर्षकर जय जय श्री अंजनीनन्दन ॥ २ ॥ कर धर गदाचक्रकरगहिकर झट जलदी से लेतजगन । कड़ककड़क कर कड़कधरणिसे क्षण अन्दर चढिजात गगन । रण अन्दर धँसधँसकर कसकस जडत गदाधर धरके लगन । हरेक अस्त्र आति चलत शठ दल के अन्दर लगत अगन । अस अस करत सकल नर यशकर हरहर रटत हंसत हरजन । करत सकल जग हर्षकर जयजय श्रीअंजनी नन्दन ॥ ३ ॥ चढिचढि जात हाथ गिरिलेकर करके घात जद लगत अड़न । झट छत छोडत हाथ हठ नाथ ताक तक लगत जड़न । दरद शरद करदेत करद जद करसे गहिकर जात लड़न । असंख्य गर्जत शंख अनहद गतंडते लगत झलन । काशीनन्दन आनन्द छन्द कथ कहत अधर नित नई कथन । करत सकल जग हर्षकर जयजय श्री अंजनी नन्दन ॥ ४ ॥

महावीर मस्तकं ललित सिंदूरं कुम् कुम्अगरं । ज्ञानवान अभिमान रहित निर अहंकार हरयोगी । इन्द्रीजात कामिनी त्यागी नचकामी नचभोगी ॥ रूपघनन्द परमानन्दं । महावीर मस्तकं ललित सिंदरं कुम्कुम् अगरं ॥ १ ॥ दशकन्धर अभिमान हनन लङ्कादाहन बजरंगी । पूरण ब्रह्म अखण्ड सच्चिदानंद साधु सत संगी । नामउचारत नितगोविंदं ॥ महावीर मस्तक ललितं

सिंदूरं कुम्कुम् अगरं ॥ २ ॥ रक्त चीर गदाकर शोभित पुष्प माल उर धारन् । दानव दलनं हनन दुष्ट दल सकल शत्रु संहारन ॥ शब्द ध्वनि गर्जत हरि हरी नम्नम् । महावीर मस्तकंललित सिंदुरं कुम्कुम् अगरं ॥ ३ ॥ शिव सङ्कर सर्वज्ञ स्वरूप विश्वेश्वरस्तु विशालम् । परम वैष्णव शुद्ध आत्मा कालंकाल अकालम् । बहुविस्तारं मम किं वरणम् । महावीर मस्तकं ललित सिंदुरं कुमकुम अगरं ॥ ४ ॥ जटाजूट मकराकृत कुण्डल रत्न जटित अंग भूषण । पँचम सुख सुखदायक दाता देवपती निरदूषण । छन्द काशीगिर शास्तर कथित । महावीर मस्तकं ललित सिंदुरं कुम्कुम अगरं ॥ ५ ॥

नन्दनँदन ब्रजराज की छवि अत्र कोटिन भानु प्रकाश करें । उद्दित करें चन्द्र कोटिन अरु कोटिन तमका नाश करें । कोटिन शीश नेत्र कोटिन अरु कोटिन कर्ण हरी के हैं । कोटिन हैं नासिका हरी की कोटिन वर्ण हरीके हैं । कोटिन मुख कोटिन जिह्वा कोटिन गति शरण हरी के हैं । कोटिन भुजा उदर कोटिन अरु कोटिन चरण हरी के हैं ॥

शेर—कोटिन हरी के मुकुट हैं कोटिन हैं तिलक भाल ।
कोटिन हरी के कण्ठ हैं कोटिन हैं मुक्त माल ॥
कोटिन मणी हरी की हैं कोटिन हरी के लाल ।
कोटिन हरी के भाव हैं कोटिन हरी की चाल ॥

कोटिन पग पाताल छवे अरु कोटिन आश अकाश करें । उद्दित करें चन्द्र कोटिन अरु कोटिन तमका नाश करें । १ । कोटिन कर्म हरी के हैं अरु कोटिन नाम हरी के हैं । कोटिन रूप हरी के हैं अरु कोटिन नाम हरी के हैं ॥

कोटिन ग्राम हरी के हैं अरु कोटिन धाम हरी के हैं। कोटिन शैव हरी के हैं अरु कोटिन वाम हरी के हैं॥

शेर—कोटिन हरी के वेद हैं कोटिन हरी के मन्त्र।
कोटिन हरी के शास्त्र हैं कोटिन हरी के तन्त्र॥
कोटिन हरी की पूजा हैं कोटिन हरी के यन्त्र।
कोटिन से हरी अन्त हैं कोटिन से हैं निरन्त्र॥

कोटिन को सुख देय हरी कोटिन के मन में त्रास करें। उदितकरें चन्द्रकोटिन अरु कोटिन तमका नाशकरें॥१॥ कोटिन इन्द्र हरी के हैं अरु कोटिन राज हरी के हैं। कोटिन हैं गन्धर्व हरी के कोटिन साज हरी हैं। कोटिन माया हरी की है कोटिन समाज हरी के हैं। कोटिन मित्र हरी के हैं कोटिन मुहताज हरी के हैं॥

शेर—कोटिन हरी के गज हैं और कोटिन खड़े तुरंग।
कोटिन हरी के रथहैं और कोटिन हैं रथके संग॥
कोटिन हरी के वेष हैं कोटिन हरी के रंग।
कोटिन हरी की लहर हैं कोटिन उठें तरंग॥

कोटिन हरि वैकुण्ठ करें चाहैं कोटिन कैलास करें। उदितकरें चन्द्रकोटिन अरु कोटिन तमका नाशकरें॥ २॥ कोटिन हैं गोपिका हरी की कोटिन ग्वाल हरी के हैं। कोटिन धेनु हरी के हैं कोटिन गोपाल हरी के हैं। कोटिन सिंधु हरी के हैं अरु कोटिन ताल हरी के हैं। कोटिन रत्न हरी के हैं अरु कोटिन थाल हरी के हैं॥

शेर—कोटिन हरी के दैत्य हैं कोटिन हैं देवतं।
कोटिन हरी के नाम को हैं मुख से लेवतें॥

कोटिन हरी के नाव हैं कोटिन हैं खेवते ।
कोटिन हरी के चरण को हैं करसे सेवते ॥
देवीसिंह कहै बनारसी के घटमें हरी निवास करें । उदित करें चन्द्र कोटिन अरु कोटिन तमका नाश करें ॥ ४ ॥

ब्रह्म में ब्रह्मा ब्रह्मा में हैं विष्णु, विष्णु में शिव शँकर। शिव शँकरमें शक्ति शक्ति में सृष्टि सृष्टि में उसी का घराघर मैंजन्म जन्म में बालक बालकमें है मनमोहन । मनमोहन में मोहनी मोहनी में रस रसमें भोलापन । भोलेपनमें खेल खेलमें खुशी खुशी में नन्दनँदन। नन्दनँदन में राधे राधे में सखियाँ सखियों में लगन । लगन में प्रेम प्रेम में प्यारी प्यारी में सोलह लक्षन । लक्षन में शोभा शोभा में रूप रूपमें चन्द्रवदन । चन्द्र वदन में श्याम श्याम में सुन्दर सुन्दर में वह दमक। दमक में कृष्ण कृष्ण में दामोदर । ब्रह्म मे ब्रह्मा ब्रह्मा में विष्णु विष्णु में शिवशँकर ॥१॥ दामोदरमें दया दयामें धर्म धर्म में रहैं सुमत सुमत में सुख और सुख में सम्पति में है सारा जगत॥ जगतमें थल और थल में पृथ्वी पृथ्वी में आकाश रहत । आकाश में पवन पवन में अग्नी अग्नी में पांचों तत्व । तत्व में त्रैगुण त्रैगुण में है तीन लोक लोकों में सत्त्व ॥ सत्वमें सारा विश्व विश्व मेंरचना रचना में है भक्त। भक्त में भाव भावमेंसाधू साधूकेमनमें ईश्वर ईश्वरमें इच्छा इच्छामें रहित रहितमें रहे अमर । ब्रह्म मे ब्रह्मा ब्रह्मामें है विष्णु विष्णु में शिव शंकर ॥ २ ॥ अमर मैं आदि आदि में आतम आतम में है आतम ज्ञान । ज्ञान में गोविन्द गोविन्द में गिरधर गिरधर में श्री भगवान । भगवान में निर्गुण निर्गुण में है सगुण सगुण म हवैसुध्यान। ध्यान में योग में योग में योगी

योगीके मनमें विज्ञान। विज्ञानमें चैतन्य और चैतन्यमें चि-त्त चित्तमेंप्रान। प्रानमें जीव जीवमें जपतप जपतप में है यज्ञ औ दान। दानमें मान मानमें आदर आदर में है हरि और हर। हरमेंउमाउमामें लक्ष्मी औलक्ष्मीमें चराअचर। ब्रह्ममें ब्रह्मा ब्रह्मामें है विष्णु विष्णुमें शिवशंकर ॥ ३ ॥चराचरमेंवीर्य वीर्यमें वृक्ष वृक्षमें भराहैजल।जलमें शाख शाखमें पत्रहै पत्रमें पुष्प पुष्पमें फल। फलमें रस और रसमें अमृत अमृत में है स्वाद अटल। अटलमें अलख अलख में माया माया में वह है निर्मल। निर्मलमें है शुद्ध शुद्धमें बुद्धि बुद्धि में है उज्वल। उज्वल में उपमा उपमा में शान्त शान्त मे बड़ा है बल। बलमें वीर वीर में योद्धा योद्धा में है जोरा-वर। जोरावर में बनारसी और बनारसी में परमेश्वर। ब्रह्ममें ब्रह्मा ब्रह्मा में है विष्णु विष्णु में शिवशंकर॥ ४ ॥ ॥

बाजी खेली इश्ककी हमने जरा किया शशपंज नहीं।
खेलले हर कोई जिसको यह वह बाजी शतरंज नहीं।
शकलका यों कुछ ज़ोर नही जो घोड़े से चल कर जीते।
फीलकी क्या ताकतहै जो इस बाजीको बलकर जीते। ये
तो इश्कका दिल है इसको क्या पैदल दलकर जीते।
रुखकारुख फिरजाय न वह इस बाजीको छलकर जीते।
मेरे सिवा कोई और जहां में उठासके यह रंज नहीं।
खेलले हरकोई जिसको यह वह बाजी शतरंज नहीं॥ १ ॥
वज़ीरका क्या जिकर इश्कमें बादशाह तक हुए गदा।
जोकि चाल चूका वह मारा गया मरा है यही सदा। हम
ने अपने शिर की बाजी लगाके इसमें दांव बदा। जान

वेचेक जो खेला वह जीता उसको मिला खुदा। वह क्या करेगा मातकि जिसके काबूमें शशपंज नहीं। खेलले हरकोई जिसको यह वह बाजी शतरंजनहीं ॥ २ ॥ अरदबमें न हीं आया बादशाह अपनेकीली चोटबचा।उसने तोडा किला जहांमेंकोई न उससे कोट बचा। तिरछेहोकर चलोगो तो क्या करकेसकोगे गोटबचा। उसका माल लुटगया रखीथी जिस ने ज़रकी पोटबचा। मुझे किस्त नहीं लगी किमैंने जमाकि या कोईगंज नहीं। खेलले हरकोई जिसको यह वह बाजी शतरंजनहीं॥३॥यह शतरँज इश्ककी इसको खेले सोई सया नाहैं। बडे बड़े होगये जिन्च नहीं भेद किसीने जाना है। यहतो इश्कका ख्यालसदा आशिकोंके मनमें माना है। बनारसी अब जीतेजी निर्गुणके बीच समाना है। रामकृष्ण के शीरीं सखुनको पाये शीर बेरंज नहीं। खेलले हरकोई जिसको यह वह बाजी शतरंज नहीं ॥४॥

बन कायामें मन मृग चारों तरफ चौकड़ी भरताहै ॥विना पैरसे खूब दौडता बिनमुख चारा चरता है। विना नेत्रसे देखे सबको बिना दाँत दाना खावे। सब कहीं जावें और यह कहीं नहीं आवे जावे। बिन जिह्वासे बातकरै और बिना कण्ठ गानागावे। बिना सींगसे लडे भगे नहीं बडे बडे दल हट्टावे। बहुत सिंह डरते इससे यह किसी से भी नहिंडरताहै। बिनापैरसे खूबदौड़ता बिन मुख चारा चरता है ॥ १ ॥विनखुरखोदे सकल जगत्को ऐसा यह मदमाताहै। बिन इन्द्रीसे भोग करतहै यही यती कहलाता है। नहिं इसके कोई तात मात नहिं कुटम्ब कबीला नाता है। आपी

पैदाहोय आपमें आपेआप समाता है। सब रंगों मे न्यारा है और हरेकरूपको धरता है। बिना पैरसे खूब दौड़ता बिन मुख चारा चरता है॥२॥ बिना जीवकामांसखाय यह किसीको भी नहीं मारे है। जिसको मारे एक पलभर में उसको फेर सुधारे है।बिना कानसे सुनतासबकी जो कोई उसे पुकारे है। ऐसे ज्ञानको कोईभी साधू संत विचारे है। तीनलोकमें फिरता यह मृग भवसागर में तिरता है। बिना पैरसेखूबदौड़ता बिनमुख चाराचरताहै॥३॥बिना नाशिका लेवे बासना हरेक चीज़की खुशबोई। आपही आपहै अकेला और इसके नहीं संग कोई॥ देवीसिंह यह कहै कि जिसने बुद्धि निर्म्मलकर धोई। अपनी आत्मा जानता इस मृगको जाने सोई। नन्दनारसीने देखा यह मृग नहीं जन्मे नहीं मरता है। बिना पैरसे खूब दौड़ता बिनमुख चारा चरता है॥४॥

यह काया है काम धेनुकर प्रेम प्रीति हमने पाली। सभी पदारथ हैं इसमें इच्छा फल देनेवाली। मगन रूप मस्तक झलकत सन्तोष सुमतिके सींग खड़े। नहीं वह मारे किसीसे नहींमरे और नहींलड़े। हीरे मोती लाल और हर एक रत्न रसनामें जड़े। कृपा और करुणा के दोनों कान नहीं छोटे औ बडे। त्रियगुण के हैं तीन चिह्न कहीं श्वेत श्याम कहीं है लाली। सभी पदारथ हैं इसमें इच्छा फल देनेवाली॥१॥दया धर्म के दृग दोनों जैसे रवि शशिका उजियाला। बनी नासिकानाम निश्चयरूपी सबसे आला॥ अपार महिमा का मुख जिसमें मन्त्ररूप फिरती माला। अपनी काया हमने कामधेनु करकेपाला॥ जिसे जिह्वा और

दिव्यदन्त कल्याण कण्ठ रेखाकाली ॥ सभी पदारथहैं इसमें इच्छा फल दैनेवाली॥१॥ परमतत्वकी पीठबनी और उग्रतेज का उदर भला। परशारथकी पूंछहिलरही करै हरएक कला॥ चतुराई के चारोंथन समदृष्टी समदृत ढला। चर्चा रूपी चरण चारों सुन्दर सबसे अबला॥ जगमगातहिरदयमें जगमग ब्रह्मज्योतिकी उजियाली। सभी पदारथ हैं इस में इच्छा फल दैनेवाली॥ ३॥ हमने धारदुही धीरजकी अब अपना उद्धारकरा। छानछानके दूधको हिरदय की हांडीमें भरा॥ ज्ञान से गरमकिया उसको सरजीवन जीवन बीचधरा। जमा दही को मथा छलछिद्र छांछ नहीं रही ज़रा॥ मुक्तरूप माखनपाया हुई पूरी मनसा मनवाली। सभी पदारथ हैं इसमें इच्छा फल दैनेवाली "४" जो मांगे सोपावै इससे ऐसी काया काम धेन। विश्वरूपहै जो देखे इसको उसको होवै चैन।बनारसीकहैं इसेदेखकर खुशीहमारे हुएनयन॥ रंगरंगकेपढैहैं वाणीऔर बोले हैं मधुरबयन। सबकी मनसा पूरणकरती कोई को नहीं फेरे खाली। सबीपदारथहैं इसमें इच्छाफल दैनेवाली ॥ ५॥

हरि प्रथमबजाइ जब बंसुरी राधावर कुंजविहारी ने। ध्वनिसुनत अचानक उठिधाईं तजि काजसकल बजनारी ने। पडीभनक श्रवणमुरलीकी जब सब सखियां उठि धाय चलीं। कोउ एकदृगमें सुरमादेकर कोउ एककर मँह दीलाय चलीं॥ कोउ आधीसार तनढांके कोउ योवन खोलि दिखाय चलीं। कोउ के आधेदांतन मिस्सी कोउ आधाशीश गुंधाय चलीं॥ कोउ लट लटकायली लटपट लज्जातजिसकल विचारीने। ध्वनिसुतन अचानक उठि

धाई ताजिकाज सकल बृजनारीने ॥ १ ॥ कोउ पांयनमें बांधे हँ
ची कोउ हाथन पायल डोलचली । कोउ कण्ठमें धारे किंकि
णिको और कोउकटिपहिने मालचलीं ॥ कोउके काननथु
नी लटकन कोउखोलेशिरकेबालचलीं । कोउके नाकन बा
ली झुमकेहैं जोचलींतोसबबेहालचलीं ॥ जब पहुंची कृष्ण
निकट युवती तबहीं लखा गिरधारी ने । ध्वनिसुनत
अचानक उठधाई ताजिकाज सकल ब्रजनारी ने ॥ २ ॥ फि
र बोले कृष्ण कौनहो तुम कैसे तुमने शृंगार किये ॥ पांय
न पहुंची हाथन पायल और कटिमुक्ताके हार किये । का
ननमें नथुनी और लटकन ये भूषण किन। विचार
किये ॥ नाकनमें बाली और झुमके काहे तुमने ब्रजनारि
किये । ये सुनत वचन तब दिया ज्वाब बृजकी युवती दो
चारीने । ध्वनि सुनत अचानक उठिधाई ताजिकाज
सकल ब्रजनारीने ॥ ३ ॥ जब तनकी सुधि कुछनाहिंरही तब
भूषण कौन सुधार चले । मनतो अटका इस बंसुरी में
दृगसे अँसुवनकी धार चले । ऐसा राग बजावो रासकरो
ऐसा कोउ नहीं विहारकरे । मंझधारमें नावपड़ी हमरी
तुम बिनको बेडापार करे ॥ तुमपति हमरे हम दासी सब ये
दिया ज्वाब दुखियारी ने । ध्वनिसुनत अचानक उठिधाई
ताजिकाज सकल ब्रजनारीने ॥ ४ ॥ लखिप्रेम सकलब्रजव-
निता फिर कृष्णने मुरली अधरधरी । मोहनमी वादिन
मोहिगये वहतान जो निकली रागभरी ॥ तनमनकीसुधि
कुछनाहिंरही जब श्रीराधेपर दृष्टिपरी । कहैं कारीगिरि
बोलो सन्तो जय कृष्ण राधिका हरी हरी । ऐसी लीला
नाहिंकरी कोउ जैसी करी हरि अवतारी ने । ध्वनि सुनत

अचानक उठिधाई तजिकाज सकल ब्रजनारीने ॥ ५ ॥

हरि बँसुरी ध्वनि सुन ब्रजयुवती चली झुण्ड के झुण्ड मग नमनकर। धन धन्यहरी धन धन्यसखी धन धन्य बँसुरी तन मनलियोहर। मन प्रेम प्रबल अति तन सुन्दर सब वेद श्रुति अस गुणगावें। तजलाज सकल गृहकाज छोड़ चली हरि पदपंकज मनभावें। हरि आनन चन्द्र चकोर सखी छवि निरखि निरखिकर सकुचावें। कुछकहि न सकें चितकी बतियां अति लज्जित मनमें मुसिक्यावें। अति व्याकुल गात मद न मदकर सखि चाहत मिलें मनोहर वर। धन धन्य हरी धन धन्यसखी धन धनबँसुरी तन मन लियोहर ॥ १ ॥ मनकी बांछालखि मुरली धर ब्रजयुवतिन संग विहार करें। एक एक हरी एकएक सखी एक एकके कर एक यक पकरें। एकएक मुरली दई गोपियन को हरि कहत बजाओ तबहि बरें। ये प्रेम कथा सुनि हँसि हँसि करि मुख धरत न बजत प्राण बिखरें। कहैं ब्रजयुवती हम कीन्ह कहा अब तुमही बजावो नट नागर। धन धन्य हरी धन धन्य सखी धन धन बँसुरी तन मन लियोहर ॥ २ ॥ यक यक तरवर तर यक येक हरी यक यक युवती संग बातकरें। इत घर आवैं यशुदा के पास उत गोपियन बीच प्रभातकरें। हरी ढीठ पकड़ कर मुखचूँबें और बातसखी सकुचात करें ॥ यहिमांगत वर विनती करकर बिधना नित ऐसीं रातकरें। युवतिनके जो पति आवत सब गृहपावत अपनी पत्नी घरघर। धन धन्य हरी धनधन्य सखी धनधन बँसुरी तनमन लियो हर ॥ ३ ॥ शिव नारद आदि सकल ऋषि मुनि सब देखत

गगन विमानधरे । कौतुक गिरिवर के लख न परें तन मा नुष ब्रम्ह अखण्डतरें । युवती तन नारी वेदश्रुति रचि लीला ब्रजमें खेलकरें । हरि पुण्य पाप न दुख सुख कछु वेदान्तके करतावेदपरें । रचिछन्द यह काशीगिरि अस्तुतिकर मांगत भक्तिपदारथ वर । धनधन्यहरी धनधन्य सखी धन धन धँसुरी तन मन लियाँ हर ॥ ४ ॥

किसीका बाना कलंगीतुर्रा ये नहीं गानाहै ।फकत देखलो यहांपर निर्गुणे गुणका गानाहैं । कम अक्लोंने कम अक्ली कर माया कलँगी बनाई ब्रह्मको तुर्रा जौन कहते वहतो हैं सौदाई । माया तो है निराकार नहीं देय किसीको दिख लाई । वोही ब्रह्महै कि जिसकी थाह किसी ने नहीं पाई । तुर्रेवाले कहतेहैं कलंगीको तुर्रेकी लुगाई । कलँगी वाले कहैं तुर्रेकी कलंगीहै माई।येतोहैं सब झूटे हमने सच्चेकोपहिचाना है। फकत देखलो यहांपर निर्गुण गुणका गानाहै ॥ १ ॥ क्या गाते पाखण्डीको कलंगी तुर्राभी मिट जावेगा । अनघड़ छत्तर और डुंडाभी कोई नहीं गावेगा । माया ब्रह्मकी निन्दा करते फिर पीछे पछतावेगा । लख चौरासी योनिसे तन कहो कौन बचावेगा । शिव शक्ति को एक समझता वह ज्ञानी कहिलावेगा । भवसागर के पारहो परमधाम को पावेगी ॥ हमने उसका किया भजन तब अपने को पहिचाना है । फकत देखलो यहांपर निर्गुण गुणका गानाहै ॥२॥अगरपूछो तो बानामेरा सातद्वीपहै चौदहभुवन । नवखण्डहैं मेरे बाने में जल अग्नि पवन । तीनलोक मेरे बानेमें सबसे न्यारा मेरा वतन । अज्ञानी नहीं मुझे जाने अगर करे चाहै लाख

यतन। जिसको तुम कहतेहो शिव सो मेरा रूप है मेरा ही तन। अपने आपको मैंही जानूं हूं रहे मन सदा मगन। चाहे कोई माने नहीं माने हम को तो समझाना है। फकत देखलो यहांपर निर्गुण गुणका गाना है॥ ३॥ कोई बना हिंदू और कोई मुसलमान होकर बैठा। कोई फिरङ्गी बना कोई किरिश्चान होकर बैठा। सबकी बात सुन सुन मैं कर बन्द कान होकर बैठा। अपना दिलतो मियां अब 'लाम' कान होकर बैठा। एकान्त गिरि एकान्त में उसका धरके ध्यानहोकर बैठा। पक्षपातका मैं दिलसे तज गुमान हो करबैठा। बनारसी कहैं एकनाम सोई मेरे मनमें माना है। फकत देखलो यहांपर निर्गुण गुणका गाना है॥ ४॥

जिसने नहीं कुछदिया जहांमें मियांवह खाली हाथ चला। लुटाया जिसनेमाल वहमाल उसी के साथ चला। बलख बु-खारेका वह बादशाह छोड़ सलतनत गदा हुआ। लुटे वह क्योंकर जो था उसकी किस्मतें में बदाहुआ। गया बिया बां को वह निकला नहिं दिलमें हैरतजदाहुआ॥ जोकि कौल थारब्बसे किया वह उससे अदाहुआ। नजर पड़ा सामान ऐ शइशरतका आगे लदाहुआ। कहाखुदा ने ले अब ये तेरेवास्ते सदाहुआ। उसीका संगजाती है हश्मत जो भीरके जर को लादचला। लुटाया जिसने माल वह माल उसीके साथ चला॥ १॥ जोकि सूम कञ्जूसहैं वह तो हाथ पसारे जाते हैं। पकड़मवक्कल उन्हेंले यमके द्वारे जाते हैं। अग्नि खम्भ से बांधके बहकोडोंसे मारे जाते हैं। डरते रहियो यहां पर हम ये पुकारे जाते हैं॥ खांय खिलावें देवें दिलावें वह नर तारे जाते हैं। भव सागर के पार

एक क्षणमें उतारे जातेहैं । भुक्ति मुक्ति पाताहै वही जो तेता दिन औ रात चला । लुटाया जिसनेमाल वह माल उसीके साथचला ॥२॥ वीर विक्रमादित्य ने परस्वारथमें अपना नाम किया । जैसा जिसने कहा वैसाही उसका काम किया ॥ कहीं फकीरी करी कहीं पर उसने राज्य तमाम किया । पराये दुःखको आप दुख सह सह उसे आराम किया ॥ बहुत तपस्या करी हरीका सुमिरण आठों याम किया । परस्वारथमें नाम उसने अपना सरनाम किया । सखावत का बड़ा है दरजा जो करता खैरात चला । लुटाया जिसनेमाल वहमाल उसीके साथ चला ॥ ३ ॥ उसीके संग जाती है लच्मी जिसने ज़रको लुटाया । इन हाथों से दिया सो आंखों के आगे आया । क्या कोई लेगया यहां से और क्या कोई वहां से लाया । जिसने पाया उसीने कुछ अपना देके पाया । देवीसिंहका छंद रंगीला कुल आलमके मन भाया । बनारसी ये कहें मैंने सबके तईं ये समझाया । कोई बड़ा उठरातको यारो कोई उठि परभात चला । लुटाया जिसने माल वह माल उसी के साथ चला ॥ ४ ॥

देहभाव गया छुट आतमारामको जब से पहिचाना । निराकारमें निराकारहो मिले छुटा आनाजाना । शुद्ध आतम स्वरूप है कुछनहीं देहसे काम मेरा । शरीर तो है जड़वस्तु चैतन्य आतमा नाम मेरा । रवि शशि अग्नि आकाश से है परे निरन्तर धाम मेरा ॥ अनन्त अव्यय अविनाशी अद्वैतरूप शिवराम मेरा । कायाकर्म का त्याग के हमने सत्य आतमाको माना । निराकारमें निराकारहो मिले छुटा आना जाना ॥१॥ जीव ब्रह्म एकी स्वरूपहै पर-

है अज्ञानकाभेद । आज्ञानीतोजीवबने और ज्ञानी बनता ब्रह्म अभेद । त्रयगुणसे जो रहितहैं उनकी कौन विधी और को न निषेध । जो चाहे सो करें वोहैं वेदान्तके कथिता प्रथिता वेद । चाहे वह बोले चाहे हँसे और चाहे लगे गानेगाना॥नि-राकारमें निराकारहोमिले छुटाआनाजाना ॥२॥ आतम सत्य और शरीर मिथ्या इस विधि करेहै जिसके ज्ञान । वह प्राणीहै आपीईश्वर ब्रह्ममें उसमें भेद नजान । कामक्रोध मद लोभमोह अहंकार कपटतज मान गुमान । मिले ब्रह्ममें ब्रह्मरू-प होकरके सबछोड़ाअभिमान । ज्यों पानी से उठे बुल्बुला फिरजल अन्दरसामाना । निराकार में निराकार हो मिले छुटाआनाजाना ॥३॥ जलतंरगहैएकनामहैंदोइनकोएकीजानो। इसी तरहसे अपने जिवको परब्रह्म कर पहिचानो।जीव ब्रह्ममें भेद नहींहै वेदवाक्य सुनलोकानो । द्वैतभावदो छोड़रहो अद्वैतकहामेरामानो। काशीगिरि ज्योतिस्वरूपने तत्त्वज्ञानयह बाखाना । निराकारमें निराकारहोमिले छुटाआनाजाना॥४॥

द्रोपदी विपति में करुणा निधिको टेरी । पति चली विपतिमें नाथ राखो पतिमेरी । इस दुर्योधन पापीने भला क्याकीता। करिकपटसे मेरे पांचों पति को जीता । सब राज्यपाटहरलिया मुझे हरलीता । श्री कृष्णतुम्हारी कहां गई वह गीता । क्यों मेरे काजको लगाई तुमनेदेरी । पति चली विपतिमें नाथराखोपतिमेरी ॥ १॥ अबमेराचीरऐंचने दुशासन आया । दुर्वासाजी के बरने शामा दिखाया ॥ जब उस पापीने चीरको हाथ लगाया । तब श्री कृष्णने दिखलाई वह माया । ऐंचत ऐंचत लगगई चीर की ढेरी ।

पतिचलीबिपतिमें नाथ राखोपतिमेरी ॥ १ ॥ ज्यों २ वहपापी चीरखींचताजावे । त्योंत्योंवह वढ़ताजाय नघटनेपावे । ये दे खदुष्टकोसारीसभाघबरावे । तिसपरवहपापी मनमें दया न लावे ॥ लगीचीरकीढेरी परढेरी बहुतेरी । पति चली बिपतमें नाथ राखोपतिमेरी॥ २ ॥खैंचत खेंचत वलथकत दुसासनहारा । तब श्रीकृष्णने मनमें यही बिचारा ॥ लिया उस पापीकोपकड़हाल कहोसारा । येचीरकभीनहिंतुमसेजायउतारा ॥ कहै मनमें द्रोप दीकृष्णमैंतुम्हरीचेरी । पतिचली बिपतमें नाथराखोपति मेरी ॥४॥फिर चीर हाथसे छोड़ा सब घबराये । औरनीचाशिरकर लिया बहुत शरमाये । द्रोपदीकी लज्जा रही कृष्णगुणगाये । बहतरेजो कोईछन्द ये सुननेआये । कहैंबनारसी करोकृष्णचंद्र की फेरी । पति चली बिपतिमें नाथ राखो पति मेरी ॥ ५ ॥

कान्हाने लटलट काके लटका लटका नया निकाला । श्रीकृष्णकी अलकें अलक केशोंसे शेष लजत धरणीधर । घनघटा देखकर घटत निशा अति छकत कहतध-रणीधर । काळी काली लट कलाकरैं चित हरत तकत धरणीधर । रसना सहस्रमुखसे रटत रटत दिन रात थकत धरणीधर । करसेगहिकर छिटकाई । नागिनी देखिलह-राई । कालीने शंका खाई । लेखनी लेख ना लिखत अ-लक जब दिखत कृष्णकोआला । कान्हाने लट लटका के लटकालटका नया निकाला ॥ १ ॥ दृग चञ्चल चतुरहरी के नेत्रलागत खञ्जनते नीके । करे लहर लकीरें लाळ लगत कारे अंजनते नीके । गड़गये कलेजे आयबायके चन्द्रकिरणते नीके । रसमागरते अतिसरस हरणचित

लगतहारिणने नी ॥ । शरचलत नेत्रसे तीखे । जदलइतेदृगन ते दीखे । हरि चरित्र कैसे सीखे । कसकत हृदय दिनरैननयन ने अयन कलेजाशाला । कान्हाने लटलटकाके लटका लटका नया निकाला ॥ २ ॥ आननकी पटदशलळा दन्तने हीरालाल लजाये । दर्शन कारण पटदर्शन आसन त्याग त्यागकर आ ये । शङ्कर इन्द्रादिक सहित चरणनंगे करकरकेधाये।श्रीकृष्ण की लीला देखि छन्द आनन्दसे कथ कथगाये । तनुचन्दन हारचढ़ाये । अक्षतले शीश लगाये । हृदय चरणन चित लाये । नंदलाल कंसकेकाल काट दिया अंतर का ताला । कान्हाने लटलटकाके लटकालटका नयानिकाला ॥ ३ ॥ हरि निराकार निराधार चारकर त्रयकालके कर्त्ता । पटराग तीसरागिनी नारायण तीन तालके कर्त्ता । सच्चिदानंद कालके काल कालके कर्त्ता । हैं आदि अनादि अगाध कृष्ण अक्षय अकाल के कर्त्ता । कहैंकाशीगिरि हरीहर हरी हर दिनरैन ध्यान हृदय धर । रज चरणन की अंजनकर । कहा अधरछंद धरध्यान ज्ञानदे दान नंदके लाला । कान्हाने लट लटकाके लटका लटका नयानिकाळा ॥ ४ ॥

श्रीगिरिधरने लटकाली लटकारी आनन पर आला । अतिविचित्र लटकी लटकलटककर अमृत रसको चाखें ॥ जो सर्प ओस जिह्वासे चाटके प्राणको अपने राखें । शशी मंडलकीसी शोभा उपमा वेदभी ऐसी भाखें ॥ राधे सखि यनसे कहैं घूमके मनको मेरे सुलाखें । मोहनी अलकनमें बसी । छबिभांति भांतिकी फंसी ॥ मानों बने कृष्ण महेश पहनकर नागनकीसी माला । श्री गिरिधर ने लटकाली

लटकाली आननपर आला ॥ १ ॥ कोई बांबी में से लपक चले कोई गिंडली मार के बैठे । कोई उगिल के मणीको खड़े और कोई संगनारि के बैठे । कोईफणमे फुफुकार और कोई केंचुली उतारके बैठे । मानों विष भरे भुजंग वह मलयागिरि विचारके बैठे । कोई श्वेतलाल कोई पीले । रंग रंग के सर्प रँगीले । रोली केसर चन्दन से चर्चि अद्भुत रंग निकाला । श्रीगिरिधरने लटकाली लटकाली आनन पर आला ॥ २ ॥ उपमा एक और कहूं जो सुनो कोउ कवि के कही न जावे । मानो कजली बनसे सुगन्ध नाना प्रकार की आवे । एक तो मनउलझा काव्यमें दूजे कृष्ण की लट उलझावें । जो कुंज कुंज में परदेशीभूला नहिं रस्तापावे । हारकी लट भूलनी वारी । भूले ब्रजके नरनारी । जो प्रेम जाल में फँसा वहीं वह बसा न गया निकाला । श्रीगिरिधरने लटकाली लटकाली आननपर आला ॥ ३ ॥ अतिउत्तम छवि अलकन की सुन्दर श्याम घटासी दरसे । जब कृष्णकरे अस्नान तो मोती झूम झूमके बरसे । वह घूंघरवाले केशछायेचहुंदेश बसे अम्बर से । अस्तुति करकरके थके शेष और महिमा को जी तरसे । जो इसपदको कोउगावे । वह भुक्ति मुक्ति सब पावे । कहें ब नारसी भज रामकृष्ण गोविन्द और श्री गोपाला । श्रीगिरिधरने लटकाली लटकाली आनन पर आला ॥ ४ ॥

शरीर से है भिन्न आत्मा सोहं आतमराम । देह से हमें नहीं कुछ काम जी । जैसे जलमें कमल रहे वह जल में जलसे दूर । आत्मा ऐसे रहै भरपूरजी । आतम तो चैतन्य है और यह जड़शरीर है घूर । आत्मा रहा सर्प में पूरजी ॥

दोहा ॥ शरीरकेहै रंग भिन्न भिन्न आत्मा एकही रंग। जो ज्ञानी पुरुषकरें अहं आतम से सतसंग ॥ आतम परब्रह्म का नामजी। शरीरसे है भिन्न आत्मा सोहं आतमराम। देहसे हमें नही कुछकामजी ॥१॥ त्रैगुणमेंहै रहित आत्मादश इन्द्रीसे परे। आत्मा नहीं जन्म नहीं मरे। शरीरका दुखसुखहै आत्मा दुखःसुख कुछनहींभरे। आत्मापुण्य पाप नाहिंकरैजी ॥ दोहा ॥ देहबढ़े और घटैदेह होतीदुबली मोटी। रहे आत्मा ज्यों की त्यों नहिं होवे बड़ी नहिं छोटी ॥ दूररहे सबसे आत्मा धामजी। शरीरसेहै भिन्न आत्मा सोहं आतमराम। देहसे हमें नहीं कुछ कामजी ॥ २ ॥ देहमिले मिट्टीमें औरयहदेह अगिनमें जलै आत्मानहीं जलैनहीं बलैजी। देह पवनसे सूखे और यहदेह जलै अन्दरगलै आत्मा नहीं किसीमें रलैजी। दोहा॥ अखण्ड अव्यय अविनाशीहै आत्मा आदि अनाद। नहीं शस्त्रसे छिदे नहीं कुछ इसमें बाद विवाद ॥ आत्मा कृष्ण आत्मा रामजी। शरीर से है भिन्न आत्मा सोहं आतमराम। देहसे नहीं हमें कुछ कामजी। ३। गीतामेंहै लिखा श्रेष्ठ है सबमें आतमज्ञान। ध्यान में यही बडाहै ध्यान। शरीर का अभिमान तजै जो बने आप भगवान। होय एक क्षणभरमें कल्याणजी ॥ दोहा ॥ पानी का बुलबुला फूट जैसेहोता पानी। मिलै ब्रह्ममें ब्रह्म रूप हो करके नरज्ञानी ॥ छन्द काशीगिरिके सरनामजी। शरीर से है भिन्न आत्मा सोहं आतमराम। देहसे नहीं हमें कुछ कामजी ॥ ४ ॥

श्रीकृष्ण शिव एक रूपहैं रहते एकीसंग हरीहर दोनों हैं अर्द्धंग भला। आधा अंगहै श्रीकृष्णका आधा शिव

का जान कहाये परम पुरातन ज्ञान भला । कृष्ण करें शिव का सुमिरण शिवधरें कृष्णका ध्यान आतमा एक एक अ- स्थानभला ॥ दोहा ॥ शिवजी साधेंयोग कृष्णजी करें भोग विलास । योग भोग दोनों यकी दोनोंका ब्रह्म में वास । वो पहिने भूषण वो रहें नंग भला ॥१॥ कृष्णपढ़ें गीता और शिव जी पढ़ें आप वेदान्त । वो करते क्रोध वो रहते शांत भला । कृष्णकरें क्रीडा ब्रजमें शिव रहें सदा एकांत । दोनोंकी सुन्दर शोभा कांतिभला ॥ दोहा ॥ शिवका सुमिरण करते करते कृष्णजीहोगये श्याम । शिवजी होगये श्वेत जपा करते हैं कृष्णकानाम । ऐसानहीं कोई का सतसंग भला ॥ २ ॥ कृष्ण बजावें मुरली मुखधर शिवजी गातेगान । निकले दोनों में एकतान भला । कृष्ण भरें भण्डारजक्त के शिव देते वरदा न । करें दोनों जनका कल्याण भला ॥ दोहा ॥ कृष्ण करें वैराग्यतीव्र और शिव धारें सन्यास । वो उनके सेवक हैंगे और वो हैं उनके दास । करे राक्षसों को दोनों दंग भला ॥३॥ कृष्ण सोवते शेषकी शय्यापर करके आराम । करें शि व मसान में विश्राम भला । कृष्णकरें शिवकी सेवा शि व करें कृष्णकाकाम । रटो दोनोंको आठोंयामभला ॥ दोहा ॥ शिव पूजें कृष्णके चरण करें कृष्णलिंगपुजा । हरीहर आतम एक मूरती और नहीं दुजा । उनके शिर मुकुट उनके शिर गंगभला ॥ ४ ॥ त्रैगुण से रहित कृष्ण हैं तीन लोकमें परे । भजो चाहे हरिकहो चाहे हरभला । शिव ने त्रिपुरासुरको मारा कृष्णसे कौरव मरे । दोनों ये कोई से नहीं डरेंभला ॥ दोहा ॥ शिवके संगरहें सदा योगिनी

और भूत वैतालाकृष्णालिये ग्वालिनी संग में ब्रजके सारेग्वा ल। वह पिवें दूध वह पीवें भंग भला॥७॥कृष्ण बनेगौराजीशि बजी बने लक्ष्मी आप। उनको पुण्य न उनको पाप भला। कृष्ण हरैं बाधा तनुकी शिवदूरकरैंसंताप। मेरामन दोनों में रहा व्यापभला॥ दोहा॥ कृष्ण बने नंदीगण शिवजी गरुड़रूप लियेभार। वह उन पर औ वह होते उनपर असवार॥ये दोनों एक हैं और बहुरंगभला॥८॥कृष्ण पार्थिवपूजें शिवजी पूजैं शालग्राम। बना दोनों का सुन्दर धाम भला। शिवकी काशी वसो बना श्रीकृष्णका गोकुलग्राम। देवीसिंह दोनों का लैना नामभला॥ दोहा॥ शिवका शिवालावना कृष्णका है ठाकुरद्वारा। बनारसी यह कहै मुझे दोनोंका नाम प्यारा। उठीहै मनमें यही तरंगभला॥७॥

वहीलक्ष्मी वहीगौराजी चारवेदमें देख। शक्तिहैएक जुदे दो बेष भला। विष्णु के संग रहैं सदा लक्ष्मी शिव के सँग रहैं पार्वती। लखी नहिं जाय दोनों की गति भला। लक्ष्मी के पति इन्द्रजीत हैं गौरा के पति यती। लक्ष्मी कुमारगौरासतीभला॥ दोहा॥ लक्ष्मी को चढ़ैं पुष्प और गौरा को चढ़ैं बेलपती। उनकी बुद्धि निर्मल है और उनकी है मती सुमती। रूप दोनों का अलख अलेख भला॥ १॥ लक्ष्मीके मस्तक पर सोहै सुन्दरबेंदीभाल। गौरि के मस्तक चन्द्र विशाल भला। लक्ष्मी के उर पड़ा हार है जिसमें मोतीलाल। गौरिके कण्ठ मुंडकी माल भला॥ दोहा॥ लक्ष्मी के दोनों करमें है कड़े जड़ाऊ पड़े। गौरि के कर सोहैं कंगन दोनों के हैं भाग्य बड़े। लिखीविधनाने ऐसी

रेखाभला ॥२॥ लक्ष्मीके सेवकहैं सो सेवक ते सुन्दर भोग। गौरिके सेवक साधे योगभला । लक्ष्मी को जो सुमिरे उसको कभी न व्यापे शोग । गौरिको भजे सो रहे निरोग भला ॥ दोहा ॥ क्षीरसिन्धुमें बसे लक्ष्मी नारायण के पास । गौरिसें शिवसंग जहां सुन्दर पर्वत कैलाश । भक्तजन लेते उन्हें परखभला ॥ ३ ॥ लक्ष्मीका शीतल स्वभावहै जल और चन्द्रमाजान । गौरिको समझो अग्नी भानुभला । लक्ष्मी केहैं पासमें हीरालाल मोतिनकी खानि । गौरिकीविभूतिहै धनवान् भला । लक्ष्मीमें बसे गौरि गौरिमें करें लक्ष्मीवास। सुनो इधरधर ध्यान तुम हमसे उनकी रास । हैं उनकी कुम्भ और इनकी मेषभला ॥ ४ ॥ श्री लक्ष्मी पहिने तनुके ऊपर बस्तर लाल । गौरिजा ओढिरही मृगछाल भला । कहीं भार्याबनी कहीं जननी हो करें प्रतिपाल । बनी कहीं अन्तकालका काल भला ॥ दोहा ॥ ब्रह्म लिखते थके शे— षजी ने नहीं पाया पार । बनारसी यह कहे कहूँ मैं कहां तलक विस्तार । मुझे दोनोंकी भक्ती विशेष भला ॥ ५ ॥ शिव गौराको सब कोई कहते ये दोऊ उनके अंग । कृष्ण शिव हम कहते अर्द्धंगभला । आधे शीशपर जटा औ आधे लटके लटकाली । आधे शिव आधे वनमाली जी भला । आधे मुख वेदान्त औ आधे वेदकी ध्वनि आली । करें आपुस में बोलाचालीजी भला ॥ दोहा ॥ कहै गौरिजा सुनो लक्ष्मी देखो पतिकारूप ॥ ऐसा रूप नहीं देखाथा सो देखो आज स्वरूप ॥ आधे शिरमुकुट आधे शिर गंग भला ॥ १ ॥ आधे शीश पर चन्द्र और आधे

चन्दनकाहै खौर । इधर मुर्छल और उधर हो चम्वरभला। आधे मुख माखन और आधे धतूरेका है कौर । आधा अंग श्याम आधा अंग गौर भला ॥ दोहा ॥ आधे अंग में भस्म लगी औ आधे लगे सुगन्ध । आधा अंग है क्रोधवन्तऔर आधाहै आनन्द । आधे अंग वस्त्र और आधा नंभगला ॥२॥ आधे मुखमुरली बाजै आधेमुख बाजैनाद । न उनका अंत न उनका आदि भला । आधे मुख अमृत और आधे हलाहल का स्वाद । दूरकरैं क्षणमें विघ्न बिख्यात भला ॥ दोहा । आधे अंगमें सर्प्प और आधे अंगमें भूषण हेम । आधा अंग है कर्म रहित और आधे अंगमें नेम । आधा ब्रह्म चर्य आधासभंगभला ॥ ३ ॥ आधे कमर में लँगोटा आधे कटिकछनी कसे । दोनों अंग एक अंगमें बसे भला । आधा आसन गरुड़पै आधा नन्दीगण पर लसै । यह शोभा देख मेरा मन हँसे भला ॥ दोहा ॥ अर्द्धस्वरूप है महाकाल औ आधा पालनहार । बनारसी यह कहै है उसकी महिमा अगम अपार । देख सुर नर होगये दंग भला ॥ ४ ॥

घरमिलै उसे जो अपना घर खोवै है । जो घर रक्खै घरघरमें रोवैहै । जो राज्य तजै वो महाराज्य करता है । और जान तजै सो कभी नहीं मरता है । सुखत्यागै तो वह औरका दुख हरताहै । धनतजै तो फिर दौलत से घरभरताहै । जो पलँग तजै वह फूलोंपर सोवैहै । जोघर रक्खै वह घर घरमें रोवैहै ॥१॥ जो परदारा को तजै वह पावै रानी । और झूंट वचन में छोड़ सिद्ध होय बानी । जो दुर्बुद्धी को तजै वही हो ज्ञानी । मनसा त्यागै तो मिलै

ऋद्धिमनमानी । जो सर्वतजै उसको सबकुछ होवे है । जो घर रक्खे वह घरघर में रोवेहै ॥ २ ॥ जोकुछ इच्छा नहिं करैवह इच्छापावै । औरस्वादतजै तो अमृत भोजन खावै । नहिंमांगे तो फलपावै जोमनभावै । है त्यागमें तीनों लोक वेद यों गावे । जो मैलाहोके रहे वह दिल धोवेहै ॥ जो घर रक्खे वह घर घरमें रोवेहै ॥ ३ ॥ जो पक्षपातको तजे वह सबकोजीते । औ कामतजे तोहोय काममनचीते ॥ कहैं देवीसिंह हरनाम जिन्होंने लीते । उनको गोविन्द ने ब्रह्मलोकपुर दीते । अब बनारसी घरखोके ब्रह्महोवेहै । जो घररक्खे वहघरघरमेंरोवेहै॥

वह आपी आपहै एक और नाहिं कोई । कहु कलंगी तुर्रा कहांसे आये दोई । वही ब्रह्मा विष्णु महेश वही हैं शक्ती । निश्चय कर मानो करो प्रेमसे भक्ती ॥ सुन किसी कि निन्दामुझे भली नहीं लगती । हैं सबमें पूरणब्रह्म ज्योतिसी जगती ॥ क्यों झगड़ा करकरके बुद्धी खोई । कहुकलँगी तुर्राकहांसे आये दोई ॥ १ ॥ मायामें बसता ब्रह्म ब्रह्ममेंमाया ॥ है चारवेदने इसीतरह से गाया । माया से सृष्टी करी औ जक्तरचाया ॥ माया के बीच में कलंगीतुर्रा आया ॥ है ब्रह्मफुल माया उसकी खुशबोई । कहुकलँगी तुर्रा कहांसे आयेदोई ॥ २ ॥ वही अलख निरंजन निराकार अविनासी । है सबसे न्यारा सबघटघटका वासी ॥ वह बडी दूरपर बसे औ सबके पासी । जिसजिसने उसको लखा वही सन्यासी । क्यों निन्दाकरके पापकिगठरी ढोई । कहुकलँगी तुर्रा कहांसे आये दोई ॥ ३ ॥ कोई अनघड़ कसर हण्डा ढुड़गावै ॥ जो पक्षपातको करै वह गोते खावै

कोईकलंगी तुर्राबहुते ख्यालबनावै । कहै देवीसिंह नहीं भेदझा नकापावै । कहै बनारसी यह सोहं पद से सोई । कहु कल. गी तुर्रा कहांसे आयेदोई ॥ ४ ॥

कहिं पुण्य करो तो बडा पाप होता है । कहिं पाप किये से पुण्य आप होता है । कहिं अग्निमें रहके शीतलतनु होता है ॥ कहिं जलमें बसके रूपअग्नि होता है । कहिं दुखमें सुखहो प्राणभञ्जन होता है । कहिं दान किये तो अतिनिर्धन होताहै ॥ कहिं गालीदेनेसे भी जापहोताहै । कहिं पापकरो तो पुण्य आप होता है ॥ १ ॥ कहिं भूलजाय तो सबविद्या आवै है । कहिं पढ़े तो वह फिर सभीभूल जावै है ॥ कहिं पवन अहार होके सब खावैहैं । कहिं भोगीहो जितइन्द्री कहलावैहै ॥ कहिं अशीश देने से भी शाप होताहै । कहिं पापकरो तो पुण्य आप होता है ॥ २ ॥

कहिं झूठ बोलके सच्चा कहलाता है । कहिं सत्य वचन कह नरकबीच जाता है ॥ कहिं गुरुसे लड़केचला फख पाता है । कुछ उसका भेद लखने में नहिं आता है । कहिं वियोग करके भी मिलाप होताहै ॥ ॥ कहीं पापकरो तो पुण्य आप होताहै ॥ ३ ॥ कहिं दुर्बलजायके पर्वत लेय उठाई । कहिं अति बलवान से उठे न एको राई । कहै देवीसिंह सच है उसकी प्रभुताई । अय बनारसी तेरी गति लखी न जाई ॥ जो होताहै वह आपी आप होता है । कहिं पापकरो तो पुण्य आप होताहै ॥ ४ ॥

सबके बीच में है और दिखाईनहिं दे गोविन्द । हुआ दुनियांको मोतियाबिंदुजी । भीतरकी गई फूट देवाहर से दिखलाई । कहै ये बापहै ये माईजी । मरजावे तो कोई

साथ नहीं चले नहिं चलैं बहिन भाई। या चाचा हो या हो ताईजी झूठबात नहीं कहते बोले सत्य वचन येरिन्द ॥ हुआ दुनियांको मोतिया बिन्दुजी॥१॥ अरेमूढ़ अज्ञानतू क्यों भटके है चारो धाम। तेरे घटमें आतमारामजी॥ उन्हें तू क्यों नहिं देखे जो हृदयमें करे विश्राम। नाम जपंतो तेरा हो नामजी॥ घटमें आतमा सूझपड़े नहीं योंही योंही गंवाई जिन्द। हुआ दुनियांको मोतिया बिन्दुजी॥२॥ गोदी में लड़का औ ढिंढोरा शहरमें फिरवाते। मसल जो है वही हम गातेजी॥ इसीतरह से घटमें हर बाहर खोजन जाते। मिलें नहीं उलटे फिर आतेजी॥मुसलमान मक्केजीभटकेहिन्दू भटके हिन्द।हुआ दुनियांको मोतियाबिन्दुजी॥३॥जगन्नाथ औबद्री नाथ सब हमभी फिर आये॥ कृष्ण इस हिरदयमें पायेजी। देवीसिंहने ज्ञान ध्यान के सदा छन्द गाये। रागके चरण चित्त लायेजी॥ बनारसी ने ज्ञान दृष्टि से दिया जक्त को निन्द॥ हुआ दुनियां को मोतियाबिन्दुजी॥४॥

जो चाहे सो करे प्रभू उसकी गति लखी न जाय। कर्म के लिखे को देय मिटाय जी॥ कितने ही मरगये तो उनको पल में दिया जलाय। काल को देखो कालई खा यजी॥ लूलाचढ़े पहाड़के ऊपर बिन पौरूषसे धाय। एक तृण त्रैलोक समायजी॥ सेतु बांध के समुद्र में हरिप-त्थर दिये तराय। कर्म लिखे को देय मिटायजी॥ एक मू-रख चातुर को देता एक पल में वेद पढ़ाय। जिये वह सदा जो विषको खायजी। मीन धूपमें मरन रहे नहिं पानी उसे सुहाय। कहो कोई इसका अर्थ बतायजी॥ लोहा

कंचन बने जो उसको पारस देउ छुवाय । कर्मके लिखे को देय मिटायजी ॥२॥ विधवा होय सुहागन उपजै पुत्र सो करै सहाय ॥ आगिको पानी देय जलाय जी । भूखा भोजन नहीं करै औ पेटभरा सब खाय ॥ शेर को भेड़ी देय भगायजी ॥ भृंगी कीड़े को अपने सम लेता आप बनाय । कर्मके लिखे को देय मिटायजी ॥ ३ ॥ मार्कण्डेयजी बारह वर्षकी आये उमर लिखाय । लिखी विधना ने बहुत चित लायजी ॥ सोती होगये चिरंजीव मैं सत्य सत्य कहुं गाय । प्रभुके आगे कर्म लजायजी ॥ बनारसी कहैं नरसे प्राणी नारायण होजाय । कर्म के लिखे को देयमिटायजी॥४॥

मनपतङ्ग बढ़ गया सन्तका घूम रहा चहुंओर ॥ काल के ऊपर कर्ता ज़ोरजी।हवाजाय पश्चिमको तो यह पूरबको जावे ॥ हवाके बशमें नहिं आवेजी । पवन जो दक्षिण जाय तो यह उत्तर की सुधि लावे ॥ किसी से ज़रा न भय खावेजी ॥ दोहा ॥ सातद्वीप नवखंड औ चौदह भुवनों में फिरता । जहांचाहे जहांजाय गिराये किसी के नहीं गिरता ॥ तीनों लोकोंमें करता शोरजी । मन पतङ्ग बढ़गया सन्तका घूमरहा चहुं ओर । कालके ऊपर कर्ता ज़ोरजी ॥ १ ॥ चाहै जबले उतार औ चाहे जब दे चढ़ाय॥ उड़ावे योगी ध्यान लगायजी । जहां कालका गुज़र नहीं है वहां ये तुक्कल जाय ॥ त्यारकी अद्भुत लेय लगायजी ॥ दोहा ॥ लगी इसमें अद्वैत की जोड़ी ठड्डा ठीक छिला । और कोई नहीं रंग है इसमेंनिर्गुण रंगमिला ॥ दबै नहीं कहींपर इसकी कोरजी । मन पतङ्ग बढ़गया संतका घूमरहा चहुंओर । कालके ऊपर कर्ताज़ोरजी ॥२॥ कृष्णनामकी लगाई कंची कभी न कच्ची

लगेसातवें अकाशपर जगमगेजी। ब्रह्मपुष्कलतेसे हरडर पापी कनकछेत्रभगे। गये वहयमके लोकमें टगेजी ।' दोहा ॥ ज्ञान कागोला ध्यानकामांझा ज्यों खांडेकी धार। सदगुरु की मद लगी तो होगये भवसागरकेपार । नटूटे सत्तशब्दकी डोरजी मन पतंगवढगया संतकाघूमरहा चहुँओर। कालके ऊपर क-र्ता जोरजी ॥३॥ शुद्ध आत्मा बनायह तुक्कल चौथेपदखड़ी। हैमहिमा इस तुक्कल की वडीजी। पुण्यपापसे अलगहै यहनहीं नर्मनहींकड़ी। काटाउसको जो इससे लडीजी ॥ दोहा ॥ देवी सिंह यों कहै जो इसके पेचमें कोई आवै । झटपटले लपेटखी-च अपनेवरमेंलावे। कह छन्दवनारसी चितजोरजी। मन प-तंगवढ़ गया सन्तका घुमरहाचहुँओर। कालके ऊपर कर्ताजो रजी ॥ ४ ॥

ग्वालिनसे कृष्णजी कहैं मधुर बोली मे। यह कहा चु-राये जातहो तुम चोली में ॥ गई दधि वेचन यह कहां से गठरी पाई। इसमें मोहि मोती माणिक दे दिखलाई ॥ यह सुनत वचन तबतो ग्वालिन मुसुक्याई। और लगी गालियां दैने बहुत रिसाई ॥ मत बोलो ऐसा वचन मेरी टोलीमें। यह कहा चुराये जातहो तुम चोलीमें ॥ १ ॥ फिर कहैं कृष्ण तुम हमको तनक दिखाओ। जो चोरीनहींहै करी तो क्यों शरमाओ ॥ योंकहै ग्वालिनी हटो उधर को जाओ। कतकरो हँसीकीबात न मोहि लजाओ ॥ फिरकहैं कृष्ण अपनीबतियां भोली में। यह कहा चुराये जातहो तुम चो-ली में। २। उस वक्त कृष्णने ऐसी मोहिनीडाली। ग्वालिन मदमें भईचूर न बोली चली ॥ सब खोलि के अंगिया उस

की देखी भाली। दोनों कुच लीन्हे पकड़ हँसे बनमाली ॥ नि त ऐसी लीला करें कृष्ण होलीमें। यह कहा चुराये जातहौतु मचोलीमे॥३॥थी यही इच्छा ग्वालिनकी कृष्ण मिलजावें। औ पकड़के बहियां मोको गले लगावें॥कहैं देवीसिंह जो कृष्णकी अस्तुतिगावें। वह जीतेहीजी जीवन्मुक्ति फलपावें॥ कहैं ब नारसी क्या है अँगिया चोली में। यह कहा चुराये जातहो तुम चोली में॥ ४ ॥

नहीं मेरा यह शरीर है नहींहै मुझको दुखदुन्द। मेराहैरूप सच्चिदानन्दजी॥ नहीं लोभ नहीं मोह नहीं बुद्धि नहीं अह ङ्कार। नहीं आचार औ नहीं विचारजी॥ नहीं रात नहींदिन नहीतिथिघडी लग्ननहींवार। नहींहै अपना पारावारजी॥ न हींऊजडनहींजंगल नहीं बस्ती कुटुम्ब घरबार। नहींदारासुत नहीं परिवारजी। दोहा। नहीं शीश नहीं मुख नहीं जिह्वा नहीं वाणी नहींहाथ। नहीं उदर नहीं लिंग चरणनहीं नहीं वर्ण नहीं जात। नहीं वेद नहीं शास्त्र नहीं श्लोक नहींपरछ न्द। मेराहै रूप सच्चिदानन्दजी। १। नहीं काम नहीं क्रोध नहीं कुछ ज्ञान नहीं अज्ञान। नहीं कोई मन्त्र तन्त्र नहीं ध्या नजी॥ नहीं नेम नहीं संयम पूजानहीं तीर्थस्नान। नहीं व्रत होम यज्ञ नहीं दानजी। नहीं योग नहीं भोग नहीं संयोग मान अपमान। नहीं बनवासी नहीं स्थानजी। दोहा। न ही सीधा नहीं गोल नहीं दुबला औ नहीं मोटा। नहीं टेढ़ा नहीं बड़ा बहुत नहीं मोटा नहीं छोटा। नहीं तुर्श नहींलौन अलौना नहीं कडुवा नहीं कन्द। मेरा है रूप सच्चिदानन्दजी ॥२॥ नहींसुखनहीं दुःखनहीं धनवान् नहीं कंगाल। नहींमंत्री

और नहीं भूपालजी ॥ नहींसिंधु नहीं नदी नहीं है कूप बा-
वडीताल । नहींहै आकाश नहीं पातालजी । नहीं श्वेत नहीं
पीत नहीं है कपोत नीलालाल । नहीं है वृक्ष फूल फल डाल
जी ॥ दोहा-नहीं हीरा नहीं मोती माणक नहींरत्नकी खान ।
नहीं खर्ग नहीं चक्र नहीं त्रिशूल धनुषनहीं बान ॥ नहीं जाग्र
त नहीं स्वप्न सुषुप्ति नहीं खुला नहीं बन्द । मेरा है रूप स-
च्चिदानन्दजी॥ ३ ॥नहीं त्रिपुण्डी नही वनखण्डी नहीं ब्रह्म
चारी । नहीं मुण्डित न जटाधारीजी ॥ नहीं अग्नि नहीं पवन
न पानी नहीं मीठा खारी । पशु नहीं पुरुष नहीं नारीजी ॥
नहीं शैव नहीं शाक्ति नहीं वैष्णव नहीं आचारी । नही हल
का नहीं भारीजी ॥ दोहा-नहीं मिमांसक नही जैनी नही
उदासीन मतबाद । नहीं देव गन्धर्व यक्ष नहीं विप्रविख्यात ।
नहीं बिजुली नहीं घन नहीं तारे नही सूर्य नही चन्द ।
मेराहै रूप सच्चिदानन्दजी ॥४॥ नही शिष्य नही गुरू न
माता पिता नही भ्राता । नही रिश्ता और नही नाताजी ॥
नही बैठा नही खड़ा नही आता है नही जाता । नही भूखा
है नही खाताजी ॥ नही लेय नही धरै नही देते नही दिला
ता । सखी नही सूम नही दाताजी ॥ दोहा-नही कर्म की
रेख लेख नही नहीं पढ़ाजाता । नहीं मौन होरहे नही बोलै
नहीं बुलवाता ॥ नहीं पक्षी नही फंद कहै नही जाल नही
फर फंद । मेरा है रूप सच्चिदानन्दजी ॥ ५ ॥ नही हिन्दू नही
मुसलमान याहूदी नही फिरंग । नही कोई रूप नहीं कोई
रंगजी ॥ नही बीन बांसुरी नही करताल ताल मृदंग ।
नही जलतरंग नही उपचंगजी ॥ नहीं कलंगी नही

तुर्रा नहीं अनघड छुण्डा नही चंग नही कोई संग है न ही आसंगजी ॥ दोहा—आपी आप में आप है रहा आप में व्याप । नहिं स्वर्ग नही नरकहै नही पुण्य नाहि पाप ॥ बनारसी कहै रूप हमारा अखण्ड परमानंद । मेरा है रूप सच्चिदानन्दजी ॥ ६ ॥

है उपरकुवा औ नीचे जिसके डोरी । पानी भरती पनिहारिन चोराचोरी ॥ डोरी के ऊपर घिरनी चक्कर खावै । वह मधुरमधुर ध्वनि बोलैं मोहि सुहावै । जबतक वह डोरी कुवां से आवै जावै।तबतलक कुवां वह नही सूखने पावै॥ उस कुवे केऊपर खड़ी हजारोंगोरी। पानी भरती पनिहारिन चोराचोरी ।१।मुँहबंद कुवे का रहै औ पानी दरसै । वह देखै जिसकी डोर लगी है हरसे ॥ जब पनिहारिन कुछ काम न राखै घर से । तब अमृतजलको छकै छुटै सब डरसे ॥ वह नित उठि गागरिभरै बनी रह कोरी।पानी भरती पनिहारिन चोरा चोरी ॥ जब उलटा डोल वह जाय तो पानी आवै । फिर सींचै अपना बाग अमर फल पावै ॥ है काहेका वह डोल औ कौन बनावै । जो पूरा योगी होय तो मोहि बतावै ॥ उस कुये के ऊपर नहीं चलै बरजोरी । पानी भरती पनिहारिन चोरा चो री॥२॥उस कुये पै गंगा यमुना सरस्वती है । औ महादेव अविनाशी पार्वती हैं ॥ भोलानाथ चौरासी सिद्ध और बाल यती हैं नानाप्रकारकी उसमें बेलपती हैं ॥ है राह वहां की बहुतै सांकरखोरी। पानी भरती पनिहारिन चोरा चोरी ॥ ॥३॥ लाखों पनिहारिन एक है हां पनिहारा । उस पनिहारे ने सबको भरदी धारा॥ जिसने पाया वह नीर

तो जन्म सुधारा। कहैं बनारसी उनकी गति अपरम्पारा। च हन्हावे उसमें जिसका पंथ अघोरी। पानी भरती प- निहारिन चोराचोरी ॥ ५ ॥

क्याही झलक दंदांमेंहुई प्यारे तेरे मुसुक्याने से। वर्कतड़ फनेलगा अखतररहे मुँहदिखलानेसे ॥अजब तिलस्महुआ जा लिम तेरे उसपानचबानेसे। मरजं गौहर जमुरंद निकलपड़े हर्षानेसे॥ शफक्कादमफकहुवा नहुत फूलीथी वह सुर्खीपाने से। अनारके भी दाने मौताज होगये दानेसे ॥ देखतेरेददां कीझलक उठिगये लौलाल ज़मानेसे। वर्कतड़पनेलगा अ खतररहेमुँहदिखलानेसे ॥ १ ॥ भूलजांयजौहरी वह परख ना रख औ फिरैं दिवाने से। ददां तेरे देखपांय गर किसी बहाने से। कितनेही गये डूब वह सागरमें भी गोता खाने से।परनहींवाकिफहुये वहभी ऐसेदुर्दानेसे। सूखगया वहलहू तेरे दांतों की सिफत सुनानेसे। वर्कतड़पनेलगा अखतररहे मुँह दिखलानेसे ॥ २ ॥शरमिन्दा होगयेजवाहर दांतोंकेचम कानेसे। खूनउगलनेलगेहीरे क्याहोपछतानेसे ॥ देख मुरस्से साज तो रहजाय अपनाकाम बनानेसे। यह वह जड़त हैं ज ड़ी बस खुदाके हाथलगानेसे ॥ आजतुझे मिलगया मजा इस हँसीमें तुम्हें हँसानेसें। वर्कतड़पने लगी अखतर रहे मुंहदिखलानेसे ॥ ३ ॥ टुकड़ेहोयाकूत तेरे दांतों करूबरू आनेसे। करै चमेली नात यह अपने और बेगाने से ॥ पाननेभी पाई लाली उसमहालकाके खानेसे। इसी वास्ते वह बस्ती में आये वीरानेसे। यहदन्दांनिकले हैं बेबहाखुदाके सुनो खजानेसे। वर्क तड़पने लगी अखतर

रहेमुंहदिखलानेसे ॥४॥बनारसीने कहा हाल यह अपने मन मस्तानेसे । इनदंदों में देखले खुदामेरे दिखलानेसे । थकजा यगा औ नादां तू लामकानकेजानेसे । यहीं देखलेनूरदंदांमें यारके आने से ॥ ऐसी सिफतदातों की किसीसेबने नहीं मेरे जानेसे । वर्कतड़पनेलगी अखतर रहे मुंह दिखलानेसे ॥ ५ ॥

पानकी लाली से वल झलक ददांमें तेरे लालों की बनी । लालेबदख्शां देखकर जिसेखांय हीरेकीकनी ॥ आज तू जो हंसके बोला तो दहन में वह दंदांचमके । जिगर छिदगया हर एक गौहरका सुनो मारे गमके ॥ सुनतेही यकासिफत सूखकर होशउडगये शवनमके । क्या ताकत है मुकाबिल दन्दांके अखतर दमके ॥ हरएक जवाहर के ऊपर प्यारे तेरे दंदां हैं गनी । लालेबदख्शां देखकर जिसेखांय हीरेकीकनी ॥ १ ॥ अगरचमेलीको देखूं तो उसका सुर्ख लिवासकहां । मरजांटुकड़े हवा उसको जीनेकी आशकहां ॥ झूठ नहीं बोलूंगा सनम् मुझको कोईका पास कहा । सचकहताहूं मुकाबिल दंदांके इ-लमासकहां ॥ क्या ताकत गर इसके रूबरू चमक सके कोई और मनी । लालेबदख्शां देखकर जिसेखांय हीरे कीकनी ॥ २ ॥ इन्हें देखकर वर्कतडफती है वह आसमांके ऊपर । सदके करदूं शफककोभी इन दंदांके ऊपर । किसी से निशवत कभी न दूं नहीं लाऊं इसे जवांके ऊपर । दंदांतेरे झलकतेहैं वह लामकांके ऊपर । शायकतू पी-से जो दांत तो दममें करदें फनाफनी । लाले बदख्शां देखकर जिसे खाय हीरेकीकनी ॥ ३ ॥ गरजोकोई याकूतकहै

तो जबांको उसकी कटवाऊं । अनार के भी कहैं दाने तो काटके मैं खाऊं। और जो गौहरकी लड़ी तो उसको भी मैं छिदवाऊँ। किसी से निस्वत न दूं नहिं सुनूं न खातिर में लाऊं ॥ बनारसी गरकहै तो क्या दिलमें उसके अब यही ठनी। लालेबदख्शां देखकर जिसे खायँ हीरेकी कनी ॥ ४ ॥

कहर नाज़ो अन्दाज गजब है अजब हुस्न दमके दम-दम्। चालमें छल बल इशारे नहीं तेरे आफ़त से कम् ॥ गरचे हुस्न तेरे की सिफ़त कोई लाख तरह से करे रक़म्। क्या ताकत है जो उसके हाथ से ठहरे लहेक़ों लम् ॥ जाये ताज्जुबहै जलवा तेरा जलवेगर बना सनम्। तेरे नूरसे हुआ कोह तूर में वह मूसा वेदम् ॥ हाथ मलाँ यक मलें हूरहैरत खाखाके छुयें कदम् । जिनो वसर सब तेरी ताबेदारी करते हरदम् ॥ सरतापा तस्वीर खिंची कुदरत की तेरी बिना कलम् । चालमें छलबल इशारे नहीं तेरे आफ़त से कम् ॥ १ ॥ शिर तेरा है हरशिर का सरदार तुहै शाहे आलम्। उसके ऊपर ताज कलँगी औ छत्र छलके झमझम् ॥ जुल्फ मुसल्सिल में वह पेंच है और तेरे हरबाल में ख़म । गोया नागिनी माहपर आई चाटन को शबनम् ॥ यामैं जलवा को अब कहूं या लाम अलिफ़ या नसर नजम् । यामैं उनको कहूं जुलमात याके जादुये सितम्। आगे लाखों तिलिस्महैं जुल्फों में तेरे तेरी कसम् । चालमें छल बल इशारे नहीं तेरे आफ़त से कम् ॥ २ ॥ देखतेरे माथेको फ़लकपर आफ़ताब खाता है शरम् । चीनब्बीं से किरन खुरशेद की कांपे होके व

हम् ॥ सिफतकरूं अबरूओंकी तो शम्शीरपर हो शम्शीरे अलम् । याके कमांहै बनीं सुलतान्की याहै तेगे दुदम् । मिजेतीर पै कांहै या नशतरहै या बरछी बल्लम् । यक पलमें वह करैं कतलाम करैं एकपलसें रहम् ॥ तेरी नजर गर फिरे तो फिर होजांय कतल लाखों रुसतम् । चालमें छलबल इशारेनहीं तेरे आफतसेकम् ॥३॥ चेहरा गोल अनमोल के जिससे रश्ककमर को होवेगम् । चश्म वह नरगिस कवँल से खिलेहैंगोया बागे इरम् ॥ देखके बैनीकी तेजीकी हरयक का हो नाकमें दम् । गज़ब फड़क है तेरे नथुनों की कहूँ किसतौर से हम् ॥ रुखसारों पर छुटा पसीना जैसे दोदारियाये अगम् । बात बात में दिल्लगी शीरीं सखुन ओजबांनरम् । हरएक आनमें जान निकाले अदाअजायब हुस्नयम् । चालमें छलबल इशारे नहीं तेरे आफतसेकम्॥४॥ और जोकरूं तारीफ़तेरेदंदो की ए दिल जाने दिलम् । या वह गौहर है बेश क़ीमत याने हीरोंकी किसम् ॥ देखलबोंपर पान कि लाली लालोंका रुतबा होकम । खाले ज़कन पर कर उगद सुरैया हुआ खतम् ॥ चाहे जनखदां देखके तेरी चाहमें डूबा कुल आलम् । क़दवह क़यामत की जिस्से सरोंसही को हो मातम ॥ गला सुराही दार औ सीना साफ आईनासा उत्तम् । चालमेंछल बल इसारे नहीं तेरे आफ़तसेकम् ॥ ५ ॥ दस्तवह नाजुक गोल कलाई हिना हथेली में रहीरम् । देख वहसुर्खीखून दिल कितनों काहो दममेंदम् । नाखूनो गोया हिलाल औ मखमली मुलायम बना शिकम् । नाफ वह सागर कमर चीतेसी वह जानू नूरके थम् । देख झलक

कदमों की तेरे पैरोंमें आपकर पड़ा पदम् । बनारसी कहै मैं आशिक तेरे नाम काहूं हम दम् । नारंगीसी गुडीतलुवे मलैं तेरे बाबा आदम् । चालमें छल बल हमारे नहीं तेरे आफतसे कम् ॥ ६ ॥

कूचेजानाकी दिलपर गरज़रा किसीके हवा लगी । रहानीमजां न उसको तावे उम्र तक दवालगी । अदाहुवा जी जान से जिसको प्यारीतेरी अदालगी । गदा हुआ वह इश्क की जिसके दिलपर गदालगी ॥ मदा अनलहक कहूं जबांसे मुझे वह प्यारी सदा लगी । खुदी मिटगई खुदाकी याद दिलपर खुदालगी ॥ चोट इश्क की जिसके दिल पर ज़रा लगी या सिवालगी । रहानीमजां न उसकोतावे उम्रतक दवालगी ॥ १ ॥ तिला कर दिया मिसकोखाकपा तेरीउसे यक तिला लगी ॥ दिलादे अपनादीद तबीअत तुझसे ऐ दिलालगी । सिलाय क्यों कर जखम जिगर पर जिसके इश्क की सिला लगी । मिली खाकमें खाकसारी जिसको कामिलालगी ॥ इश्क के बीमारों को और कोई दवा न तेरे सिवा लगी । रहा नीमजां न उसको तावे उम्र तक दवालगी ॥ २ ॥ बला करै दिन रात इश्ककी जिसकेपीछे बला लगी । भलाहो क्योंकर वह जिसको तंग इश्ककी बला लगी ॥ मला करूं तलुये तेरे मुझको यह चाह बमला लगी । चलालामकांचाल कदमोंमें मेरे चंचला लगी । तूहै समांमें परवाना मुझको तो लौ तेरा वह आयलगी । रहा नीमजाँ न उसको तावे उम्रतक दवा लगी ॥ ३ ॥ अथाह दरिया इश्कका कहो इसको किसको थाह लगी । नथा इश्क में वहडूबा हरगिज इसकी नथालगी ॥ कहाछंद देवीसिंह

ने उन्हेंइश्ककी प्यारी कथा लगी।जत्थावालेहैं जो शायरउन्हें बात यह यथालगी।।बनारसीकोसिवाइइश्कके और बात नहिं रवालगी।रहानीमजाँ न उसको तावेउमूतक दवालगी ।। ४ ।।

रहे उम्रभर दरियामें निकले तो खुश्क गोहर निकले। सद आफरीं है जो मेरी चश्ममे मोती तर निकले ।। मिजें की नोंकोंपर जिस दम वह अश्क हमारे तुल निकले। अजव ताज्जुबहुआ ज्यों खारके ऊपर गुल निकले ।। चश्महमारे उन्हें देखने को जो यह खुल खुल निकले। अश्क जो गुलरू बने तो दीदेभी बुल्बुल निकले ।। गर निकले इल्मास तो क्यों वहभी सूखे कंकर निकले । सदआफरी है जो मेरा चश्मसे मोतीतर निकले ।। १ ।। कहाँ मैं क्या क्या तशबीहूँ जो बनबनकर आसूँ निकले । मैं वहदतमें किगोयाकरके बिहिश्तसेच्यूनिकले ।। मैंने कहा ऐ अश्क मेरी चश्मों से जिस तरह तू निकले । क्या ताकत है जो ऐसी लड़ी बनके लूळू निकले।। कहा जवाहर निकले तो वह भी श्यामल पत्थर निकले । सद आफरी है जो मेरी चश्म से मोती तर निकले ।। २ ।। रोया फिराके यार में तो क्या क्या अलकबनूबनू निकले । यकीं यह हुआ कि दरिया इसी में गंगोयमुननिकले।। और भी कुछ कहता हूं सुनो इस जबाँ से जोकि सखुन निकले। अब पुतलियाँ बनीं तो चश्म भी दासी बननिकले ।। अश्क मेरे पुरआब हैं गोहर खाली खुश्क जिगर निकले। सद आफरीं है जो मेरी चश्म से मोतीतर निकले ।। ३ ।।फुरकतेजानांमें जो कभी हम रोते जोरजार निकले। तार न टूटा हार से तोफा गुथा हार

निकले।क्या ताक़त इस दरिया के गर वारसे कोई पार निक-ले। बनारसी कहै जोनिकले मगर तो हमी यार निकले ॥ और जो निकले रतन वह भी अश्कों से मेरे बतर निकले। सद आफ़रीं हैं जो मेरी चश्म से मोती तर निकले। ४ ॥

तेग लगै तरवारलगै औ तीर लगै तो चैन पड़े। नैन के मारे मारे तड़पते हैं कितने बेचैन पड़े ॥ एक झलक मूसा को नजर गर पड़ी तो वह लगगई नज़र। गिरा कोह पर न उसको तनोबदन की रही खबर। जिसे इशारे राज करै वह क्योंकर उसका होवै गुजर। जिये किस तरे और फिर मरे भला वह कहो किस पर ॥ दिलका हाल दिलही जाने जो जख्म जिगर पर ऐन पड़े। नैनके मारे तड़पते हैं कितने बेचैन पड़े। १ ॥ तोप लगै बन्दूक लगै तो इसकी भी हो दवा कहीं। अगर दुगाड़े नैन के लगैं तो फिर वह बचै नहीं। बरछी से बचगये कटारीकी चोटें कितनों ने सही। नोक पलक की जराभी चुभी तो वह रोदिये वहीं ॥ नींद कहां आती है जागते हैंगे तो दिन रैन पड़े। नैन के मारे तड़पते हैं कितने बेचैन पड़े। २ ॥ बांकमें है क्या बांक प-ना और खंजर में वह आब कहां। चश्मके आगे दिखाई देहै किसी का रुआब कहां। अगर नशेकी कहो तो देखी ऐसी भला शराब कहां। मस्तानों से भी गर पूछो तो आये जवाब कहां। लाखों दल कट जांय मेरे कातिल की जि-धरकोसैनपड़े। नैनकेमारे तड़पते हैं कितने बेचैन पड़े ॥ ३ ॥ वहहैंचश्मखूंरेज अब इनसे खून का दावा कौन करै। दार में चढके बोला मन्सूर अनहम नहीं मरे। उसे मिले

दीदार जो आसक मस्ताने हैं सरसेपरे । बनारसी कहैं हम सर मदके पीरसुनहरे भरे ॥ शबोरोज हरवक्तजबां से कहतेहैं यही बैन पड़े । नैनके मारे तड़पते हैं कितने बेचैन पडे ॥ ४ ॥

मनकोमारके बनाया मुर्दा जब यह तनु आवाद किया । पहनके कफनी फकीरोंने तो कफन आबाद किया । बस्तीको समझें उजाड सहरा औ बन आबाद किया । मालखजाना तर्ककर फकरकाधन आबाद ॥ किया ॥ लामें शोलेनूर के अपना जलाके मन आबाद किया । आह से अपना भेहर औ चरख को हन आबाद किया ॥ जिसे कहैं वीराना सब मैंने वह वतन आबाद किया । पहन के कफनी फकीरोंने तो कफन आबाद किया ॥ १ ॥ गुल खाबा गुलबदनपै मैंने वह गुलशन आवाद किया । जिस गुलशन से गुलोंका हुस्न चमन आबाद किया ॥ कहके जबांसे वह कुमबेइजनी अपना सखुन आबाद किया । जिलाया मुर्दा हुकुमसे उसका कफन आबाद किया । जीतेजी जो मरा उसीने तो मुर्दन आबाद किया । पहन के कफनी फकीरों ने तो कफन आबाद ॥ २ ॥ गम खाखा इस दिलपर हमने रंजो महन आबाद किया । दीवानों को पढ़के दीवानापन आबाद किया ॥ तख्त सल्तनत छोड़ खाकपर वह आसान आबाद किया । जिस आसान से इन्द्र का इन्द्रासन आबाद किया ॥ तर्क किया दुनियां का रस्ता और चलन आबाद किया । पहनके कफनी फकीरों ने तो कफन आबाद किया ॥ ३ ॥ अश्कसे अपने दुर्वेशोंने ढुरे रत्न आबाद किया । इश्क

में पैदा किया गम गमसे जख्म आबाद किया॥ जिसने आश क बैठरहे उसको मसकन् आबाद किया। कहै देवीसिंह नाम अपना रोशन आबादकिया ॥ बनारसी ने करके इश्क आशकीका कफन आबादकिया । पहनके कफना फकीरोंने तो कफन आबाद किया ॥ ४ ॥

मेरी आहका तीरतोड गरदूंकोगयालामकांतलक । बेअदबी अबबहुतसीहुई कहूंमें कहांतलक । हुआइश्क काजोर जबर्दस्त दिल में तो मैंने आहकरी । सातोंफलक को चीरकर लामकां की राहकरी ॥ वहांजो देखो नूरखुदा को उसने पाके निगाह करी । और जहांमेंनहीं फिरकिसी की मैंने चाहकरी ॥ आशक सादिक नाम मेरायह रोशनहै कुल जहांतलक । बेअदबी अबबहुतसी हुई कहूंमें कहांतलक॥१॥अजब मजापायाहै हम ने अपनी आहसोजांकेबीच।हुस्न खुदाईदिखाईदहैमेराजांकेबीच ॥ नहींवह जलवा मुलकोंमेंदेखा और न हूर गिलमांकेबीच नहीं मेहरमें नहीं वह झलक माहतावां के बीच ॥ मेरी आह रोशनहै सातों तबक औ कुल आसमां तलक । बे अदबी अब बहुतसी हुई कहूंमें कहांतलक ॥ २ ॥इसी आह से इश्क यह पैदाहुआ और आशक नाम हुआ । इसी आहसे जहांमें सारे में बदनाम हुआ ॥ इसी आहसे हुआ सखुन मस्तानी मस्त कलाम हुआ । इसी आहसे वह पैदा भये वहदतका जामहुआ । मेरी आहहै लिखी देख लो जाके कलमेकी राहतलक । बेअदबी अब बहुतसी हुई कहूंमें कहांतलक ॥ ३ ॥ इसी आहसे कुफुलतोडकेका- फरको माराहमने। इसी आहसे किया दुश्मन पारा पारा

हमने ॥ इसी आहसे पाया वह दिल में दिलवर प्यारा हमने । इसी आहमें करादिया फनारंज सारा हमने ॥ बना रसी कहै जहां वहकहै मेरी आहहै वहांतलक । बेअदबी अब बहुतसी हुई कहुं मैं कहांतलक ॥ २ ॥

हम आशकहैं हमैंनछेड़ो छेड़केपछतावोगेतुम । आहसेगरदूं गिरपड़ैगा तोदबजावोगेतुम । गरमको छेड़ोगे तो निकलेगी इस दिलसे आतिशे आह । आगलगेगी वह जिससेकुलल हान होवेगा तबाह । कहां भाग के बचोगे तुम फिर कहींनहीं पावोगेराह । हक्कुलायेबातेंहैं इसकाहै अल्लाही गवाह ॥ जिसने आशक को छेड़ा वह नही बचा हरगिज बल्लाह । कसमखुदा की बात यह कुल जहान में है अगाह ॥

शैर—तुम्हें वाजिवनहींहैं आशकोंकी जोर दिखलाना ।
जोहोवे नातवां उसको न जोर औ शोर दिखलाना ॥
अगरतुम जोर दिखलावोतो फिरमतकोर दिखलाना ।
जो मांगे इश्क से मैदां तो उसको गोर दिखलाना ॥

आशकेदिलको कभी सतानेसे न चैन पावोगे तुम । आह से गरदूं गिर पड़ैगा तो दब जावोग तुम ॥ १ ॥ शबो रोज हम आप मरे रहतेहैं हिज्रगमकेमारे । हमें सताना तुम्हें नहीं वाजिब है मेरे प्यारे । अभी आहगर करूंगा तो बरसैंगे फलकसे अंगारे । कोई बचैगा नही मरजायंगे कुल बिन मारे ॥ मारे आह से डरें अवालिया पीर पैगम्बर भी सारे । इसी वास्ते नही भरता हूं मैं आहोंके नारे ॥

शैर—अभी अगर उफकरदूं कुल जहां पलमें उलट जाये ।
जमी ऊपरहो और ये आसमा पलमें उलट जाये ॥
ये मोसम बस उलट जाये समापलमें उलट जाये ।

हरेक दरिया उलट जाये तवां पल में पलट जाये॥

हम तो आपी जले हैं हमको और जलाओगे तुम। आह से गरदूं गिरपड़ेगा तो दवजाओगेतुम ॥२॥ छेडोशम्स तब्रेजका वह मुल्तान अब तलक जलतीहै। वहांसे आतश देखलो अब तक नहीं निकलती है॥ और छेडा सरमद को दिल्ली इधरसे उधर उछलती है। आशिके सादिक के आगे रुस्तमकी नहीं चलती है॥ मेरी आह से शमा है रोशन आतश अबतकचल. ती है। काफर को ये जला देती है औ मुझको फलती है॥

शैर-निकालूं दिल से मैंगर यारब अपनी आह सोजां को॥
जला डालूं हजारों कोसतक जंगल वियाबां को॥
करूं मैं खाक सा इस आह से बस्ती व वीरां को।
कयामत आह से करदूं दिलाऊं मैं वह तूफां को॥

छेडछाड गर करोगे आशिक से तो घबराओगे तुम। आह से गरदूं गिरपड़ैगा तो दवजाओगेतुम ॥३॥ जिसने आशक का छेडा फिर उसका घर आबाद हुआ। गया शहरको नहीं वह दुनियां में आबाद हुआ॥ दोज्ख उसको मिला और वह विहिश्त से वेदाद हुआ। नाम उसी का जहां में काफर और जल्लाद हुआ॥ यह सखुन आशिकों का इस पर जिस जिसका एतकाद हुआ। दोनों जहां में उसीका भला हुआ दिल शाद हुआ॥

शैर-सदा ये आशिकों की है भला होवे भला होवे।
अदा पर उसका ए दिल देखिये किसादिन अदाहोवे॥
उसी का नाम रोशन हो जो उलफतमें जलाहोवे।
कहे ये छन्द देवीसिंह मेरा दिलवर खुदा होवे॥

बनारसी यह कहै अगर नापाक इश्क गावोगे तुम।

आह से गरदूं गिर पडेगा तो दबजावोगे तुम ॥ ४॥

खुदा तूहे बरहक तो मैं भी हक जबांसे कहताहूं । आबजोत है तो मैं भी लहर बहर में रहताहूं ॥अगर तू है आतश तो मैं भी उसीका अँगाराहूँगा॥तिला जो तूहैतोमैं जेवरतेरा प्यारा हूंगा ॥ गरतूहै सीमाबतो मैं भी सनम पारा पाराहूंगा । आइ नतूहै तो मैंभी बनातेरा आपाहूंगा॥जोतूहै दरियाअतो मैंहवा मोजरवाहो बहताहूं। आब जोतूहै तो मैंभी लहर बहरमें रह. ताहूं ॥१॥तुहीतो दममें दम तो मैंभी आदम कहलाताहूं । हु स्न जोतूहै तो मैं जलवा तेरा दिखलाताहूं ।गरचेतू खामोश रहे तोमैं नहीं जबां हिलाताहूं । तुहीहै मेरा तो मैं प्यारे अब तेरा कहाताहूँ । तुही नहीं गम खायतो फिरमें जहांमें किस की सहताहूं । आबजो तूहै तो मैंभी लहर बहरमें रहताहूं २॥ तेरा नहिं कोई दीन तो मेरी जातका कौन ठिकाना है। तुझे न जानातो फिर मुझको किसने पहिचाना है ॥ तूहै फखतो मेराभी दिलफकीर तेरा दीवानाहै । तूहै लामका तो मेरे मकां को किसने जानाहै ॥ तूहै शामलिया शाहतो प्यारेमै नरसी महताहूं । आबतो तूहै तो मैंभी लहर बहरमें रहताहूं ॥ ३ ॥ तूहे शम्श तो मैंभी शम्ब तबरेज जहां में आयाहूं । मुझ में तूहे औरमैं तेरे बीच समायाहूं ॥ गरतू नापैदा तो मैंभी नहीं किसी का जायाहूं । बनारसी कहे जो तू कुदरत तो मैं भी मायाहूं ॥ तुने पकड़ा हाथ मेरा मैं बाजू तेरा गहता हूं । आब जो तू है तो मैंभी लहर बहर में रहता हूं ॥ ४ ॥

खुदा तू गर है इश्कतो मैं आशकहूं हर नूरानी का ।शान

जोतूहै तो मैं पुतला हूँ तुझ लासानी का ॥ गरतू राजनिहा है तो मैं पोशीदा इसतनमें हूँ । तूहै गुलिस्तांतो मैंभी गुंचा उसगुलशनमें हूँ ॥ तूहै चाह तो मैंभी डूबा प्यारे चाह जक नमें हूं । भला तू लौंहै तो मैंभी हरदम उसी लगन में हूं ॥ तेरी नहीं तस्वीर मुझे खींचे यह नरुतबा मानीका । शानजो तू है तो मैं पुतला हूं तुझलासानी का ॥ १ ॥ तू है पाकतो मेराभी दिल साफ मिस्ल आईना है । औ जान जो तूहै तो मेरा दानाबीना है । बुलंदहै तू तो मेरा तेरे बाम पर जीना है ॥ तू है मौज दरियातो मैं भी हूं वह बुलबुला पानी का । शान जो तू है तो मैं पुतला हूं तुझ लासानी का ॥ २ ॥ तू है खुदा तो मैंभी तेरेसे जुदा नहीं जीजान से हूं । यकीन तू है तो मैं साबित अपने ईमान से हूँ ॥ तू है दोस्त मेरा तो मैं तेरा यार भी हरएक आन से हूं । तू है तसव्वर तो मैं भी पूरा अपने ध्यान से हूँ ॥ तू है लिबासे नंग शौकहैमुझे तेर उरयानी का॥ शानजो तूहै तो मैं पुतलाहूं तुझलासानी का॥३॥तूहै एक तो मुझसा दूसरा और जहां में कौनसाहै । कलमा तू है तो मेरे सिवा कुरां में कौनसा है ॥ देवीसिंह कहै बगैर तेरे मेरी जां में कौनसा है । नातवानी में और ताकततत मामें कौनसा है । यही सखुनहै विर्दआशके बनारसी हक्का नी का । शान जो तू है तो मैं पुतलाहूं तुझ लासानीका ॥४॥

तुख्मलाल याकूत की टहनी वर्गजमुर्रद मोती गुल्ल । फल लटके माणियों के जिसमें जो देखे लेले बिल्कुल ॥ शबनम है इलमास कि उसके वर्गवर्ग पर पड़ी हुई । ह-

रैक शाख कुन्दन औ नीलम से है उसकी जड़ी हुई। जिसके हाथमें उस दरख्तकी एकभी शाख छड़ी हुई ॥ सात बादशाह से भी वह कीमत उसकी बड़ी हुई। उस दरख्त के मेवे से हरदम टपके तौहीद कि मुल ॥ फलल टके मणियों के जिसमें जो देखे लेले बुलबुल ॥ १ ॥ बनी सुरसेकी जमीन और फ़ौवारे बिल्लौर के हैं। उस दरख्त के ऊपर बैठे हरेक जानवर नूरके हैं ॥ फुनगीं है पारस की उसमें रखवाले सब हूरके हैं। वह दरख्त नजदीक है उसके खरीदार सब दूरके हैं ॥ सौदा उनके बने वहां पर करो न जो कोई शोरोगुल। फल लटके मणियों के जिसमें जो देखे लेले बुलबुल ॥ २ ॥ उस दरख्त को हमने तो आबेहयात से सींचा है। बड़ी मसक्कत करीरे अपनी करामात से सींचा है ॥ किसी से कुछ नहीं काम लिया अपनी ही जातसे सींचाहै। क्याकोईजाने इसको की कौन धातु से सींचाहै ॥ हुआ वह जब तैयार तो शैदा बना मेरा ये दिल बुल्बुल। फल लटके माणियोंके जिसमें जो देखे लेले बिलकु ल ॥ ३ ॥ उस दरख्तकी साया में हम टांग पसारे सोते हैं। अगचें जायें कहीं तो फिर हम उसी तुख्मको बोते हैं ॥ जहां पर अपना दिलचाहै वैसाही सजर सब होते हैं। बनारसी यह कहै कि उसपर कुरान पढ़ते तोते है ॥ उस दरख्त के हवा लगे तो जिगर की आंखें जायें खुल। फल लटके मणियों के जिसमें जो देखे लेले बिल्कुल ॥ ४ ॥

तुख्म खुदा और शाख पयगम्बर बर्ग औलिया बली है गुल। फलहैं फ़कीर उसमें पूरे फ़र्क न वह समझे बिलकुल।

ऊपर उसकाबीजहै और नीचे जिसके लटके डाली। अन्तरकी शबनमहै उसके बर्गबर्गपर उजियाली॥ माहो मेहर चौकीदेते दिनरातकरें हैं रखवाली। नक्शा उसका नवीन है जिनकी दोजहांमें है लाली। अपने अपने दीनके पक्षी करे हैं उसपर शोरोगुल। फलहैं उसमें फकीर पूरे फर्क न वह समझें बिल्कुल॥ १॥ जमीन उसकी आसमान है जहां से ये कुल जहांहुआ। वहांसे टपकानूर तो मैंभीआकर पैदायहांहुआ। फलहैं उसकी खुशबू जिसने पाई वह फिर निहां हुआ शरेहै उसकी तरहतरहदारी से शजरवहअयां हुआ॥ वहदत की लज्जत उसमें लेता है मेरा यहदिल बुल्बुल। फलहैंउसमें फकीर पूरे फर्क नवह समझें बिल्कुल॥ २॥ जड़ उसकी बाबा आदम जिससे इस आदममें दमहै। साया उसकी कुदरत और आलम जिसका यक आलम है॥ हवा है मामा हवा जिसे छूगई उसे फिर क्या गम है। याद इलाही जो कि करै वह इन बातों से मरहम है॥ नजर उसी को आये जिसकी गफलत का परदा गया खुल॥ फल है उसमें फकीर पूरे फर्क न वह समझें बिल्कुल। ३॥ सदा है उसकी कुरान जिसने सुनी उसे फिर होश हुआ। दिलमें अपने गौरकिया कुछ समझके वह खामोश हुआ॥ राज उसी को खुला कि जिसका जरा उधर को होश हुआ। जबां से कुछ नहिं कहसक्ता जो दिलमें जुनू और जोश हुआ॥ बनारसीकहैं उसके मेवेमें तो भारी है रहमका मुल फलहैं उसमें फकीरपूरे फर्क न वह समझें बिल्कुल॥ ४॥

बुरा किया तो भला हुआ चोरी करने से साह बने

गदा से होगये बादशाह बन्देसे अल्लाह बने ॥ जात से हो बेजात जो कोई तो उसका वह दीनबने । शकल शवाहत बिगाड़े तब चेहरा रंगीनबने ॥ इमानसे छोड़े इमान को पूरा जभी यकीन बने । लौमें सोले नूरके जलें तो वो लौं लीनबने ॥ जबांकटी तब बोलने लागे फूटे नयन निगाह बने । गदासे होगये बादशाह बन्देसे अल्लाह बने ॥ १ ॥ करके गौर देखा हमने तो आजाव से बड़ा सवाब बने । खाक जवाब गरसनम्से होतो खूब जवाब बने । मय वहदत कहतेहैं उसे जो अश्कसे मेरे शराबबने ॥ लज्जत शीरींमिले जब जलके जिगर कबाबबने ॥ बुतखानेसे बिहिश्त और मयखाने से दरगाहबने । गदासे होगये बादशाह बन्देसे अल्लाह बने ॥ २ ॥ शिरको काटके अपने दस्तपर रक्खे तो सरदारबने ॥ मालमुल्क सबतर्ककर बैठे तो जरदारबने । तायर दिलको कभी न उड़नेदेतो वह परदारबने ॥ जिन्दा उसको समझते हैं हम जो मुर्दार बने । चलन से जब बदचलन हुए तो लाम कानकी राहबने । गदासे होगये बादशाह बन्देसे अल्लाहबने ॥ ३ ॥ जिसे कहैं सब हराम हमने देखा वही हलाल बने ॥ घोलके जिसने लगा लिस्याही वह फिर लाल बने । जो कि हुये पैमाल जहां में वह साहने कमालबने । बनारसी के सखुन पर क्या ताकत कोई ख्याल बने । जमीं से होगये आसमान और अखतरसे हम माह बने ॥ गदा से होगये बादशाह बन्दे से अल्लाहबने ॥ ४ ॥

मैं आशक हूँ रंजो अलम का गरये मेरे पास न हो ।
मुझ मरीज को तो फिर यकदम जीने की आस न हो ॥

बेचैनों से उल्फत है बेकलों से याराना अपना । फिक्र है अपना दोस्त औ वतन् है वीराना अपना । आहकी नकदी पासमें है खाना है गमखाना अपना । जीना यही है किसीके ऊपर जीजाना अपना ॥

शैर—फुरकते यार वह क्या क्या मज़े दिखाती है ।
बेकरारीही मेरे दिलको बहुत भाती है ॥
वस्ल होताहै जो वो बात चली जाती है ।
इन्तजारीसे यह तबिअत नहीं घबराती है ॥

रंगज़र्द नहींहो अपना औ चेहरामेरा उदास न हो । मुझ मरीजको तो फिर यकदम जीनेकी आस नहो ॥१॥ जो आशक सादिकहैं उनकी जीस्तजानका खोना है । यही खुशी है जो उसदिलबरकी यादमें रोनाहै ॥खाककेसाने से बत्तर पन्ना औचांदी सोनाहै । वजूसे बेहतर हमें अश्कोंसे मुँहका धोना है ॥

शैर—पटक के आंसू जो रुखसार पर ढलकते हैं ।
तो मेरी आंखमें जौहर एक चमकते हैं ॥
ये मस्त दोनों हैं और दोजहांको तकते हैं ।
दीवानादीदके हैं अब ये कब झपकते हैं ॥

जोरजुल्म और जफामें अपना दुरुस्त होश हवास न हो । मुझमरीजको तोफिरयकदम जीनेकी आस नहो ॥ २ ॥ प्यास हमारी बुझती है इस खूने जिगरके पीनेसे । वाफिक हुआहूं मैं अपनी चाहके जरा करीनेसे । काम नहीं काशीसे मुझे नहीं मक्के और मदीनेसे । और न आरजू हमें मरने की न मतलब जीनेसे ।

शेर—आतिशे इश्कमें जलके जिगर तरहोता है ।

जेरसाये से शबनम के ये जबर होता है ॥
औ बेखबरीसे दिलहर्गिज न सबर होता है ।
नफा है इश्क में यही जो जरर होता है ॥
गर्चे कत्ल नहीं होवे हमतो काम इश्कका रास न हो । मुझ मरीजको तो फिर यकदम जीनेकी आस नहो ॥ ३ ॥ दर्द है मारा दिलबरहै हरवक्त इसीसे यारी है । बेददौंसे भी अपनी कुछ नहीं गल्ल गुजारी है । सूलीपर मंसूर न वो अनलहक सदा पुकारी है ॥ जानगई तो बलासे नामतो उसका जारीहै॥
शेर—इश्कबाजी में अगर जानकी बाजी हो जाय ।
तो तबीअत यह मेरी खुबसी राजी हो जाय ॥
चाहैहमपर हो जफा या दगाबाजी हो जाय ।
रजामेंराजी है उसके जो वह राजीहो जाय ॥
बनारसी कहैं अगर्चे मेरा मुरशद देवीदास नहो । मुझमरीजको तो फिर यकदम जीनेकी आस न हो ॥ ४ ॥ कहा ये मुझसे रंजने गर्चे आशक मेरे पास न हो । तो दुनियां में आशकी आशककी फिर रास नहो । इश्क है मेरा मकां औ मैं रहताहू उसीके खाने में । वह नहीं आशक कि जिसके दर्द न होवे सीनेमें । तीरमें क्या है लुत्फ मजा मिलजाय जो निशानेमें । बस्तीमें नहीं गुजर आशकहैं मस्तवीराने में सूखगया मजनू औ वह ताकत बनीरही मस्ताने में । अब तक जिसकानाम रोशनहै सुनो जमाने में ॥
शेर—है कहां तकलीफ व तलुवोंमें जो चुभतेहैं खार ।
हँस पड़ा मंसूर तो शरमा गई उस जायेदार ॥
रंजये कहताहै आशक वह करे जो जां निसार ।
हरकदमपर तीरहो परादिल मेंहो वह जिक्रेयार ॥

चोट न आशकसहै औ अपना खूंपीनेकी प्यास नहीं। तो दुनियामें आशकी आशककी फिर रास नहीं॥ १॥ दमभर काहै रंज औ फिर राहत है कयामत तक बाव। उठावे शिर पर अलम तो देखे लुत्फ इसमें क्या क्या॥ रंज यही कहता है जो आशक पक्का हो तो इधर को आ। जुल्म से मुतलक न डर और खौफ न अपने दिलमेंला॥ शिरकोका- टकर सरमदने जिसवक्त हथेली पर रक्खा। उसी वक्त में नाम मुतलक न बादशाह का रक्खा॥

शेर—करदिया तख्तातबाह देहलीकी अबउड़ती है धूल।
क्या खतासरमदकी थी थी शाहकी मुतलक ये भूल॥
देखिये अब इसगुलिस्तां से वह कब आवेंगे फूल।
गर करेथे अर्ज आशक तो खुदा को हो कबूल॥

रंजने ये फरमाया आशक को मेरा कुछ पास न हो। तो दुनियां में आशकी आशककी फिर रास न हो॥ २॥ आरे से चिरजांय नहीं घबरांय जो आशक हैं पक्के। सीना सामने करें दिलबर चोट मारे तकके। कभी न निकले मकांसे गर वह लाख गजैके दे धक्के। दरे यारको छोड़नहीं जांयवह काबे औ मक्के॥ जैसे जुआरी जोरू खोरक होजावें हैं भवचक्के। तौ भी अपनी जबांसे कहाकरें वह पौछक्के॥

शेर—इश्क में बाजी है शिर की काम दौलत का नहीं।
इससे बहतर खेल हमने और कोई देखा नहीं॥
जिसने अपनाशिर न बेचा कुछ मजा चक्खा नहीं।
आशकों ने जीतेही जी तनु बदन रक्खा नहीं॥

लाखवजैके सदमोंमें गर दुरुस्त होश हवाश न हो। तो दुनियां में आशकी आशककी फिर रास न हो॥ ३॥ खाक में गर मिलजाय गौरसे गुल होकरके निकलते हैं। अजब

है आशक मर्गके बादभी फूलेफलते हैं ।रोशनहो कुल आल म में जो खडे इश्कमें चलते है। उन्हें देखकर जो पत्थरहों तो वह भी पिघलते हैं ।। देवीसिंह के सखुनपर शायर हरेक हाथको मलते हैं । चारों तरफ से वाह वाह करें औ बहुत उछलते हैं ।।

शेर-ये कलामे मारफत है रंज से राहत मिले ।
जोकि डूबा चाह में तो फिर उसे चाहत मिले ।।
गमअगरखाये तो उसको रोज़ाफिरन्यामत मिले ।
दीदउसादिलबरकाजीतेजी औ ता कयामत मिले ।।

रंज ये बोला बनारसी से गर तू मेरा दास न हो । तो दुनियां आशकी आशककी फिर रास न हो ।। ४ ।। बाग बाग हुआ आगे आलम आये बाग इरम के बीच । फूल फूलके गिरपड़े हरएक फूल हरकदमके बीच ।। जुल्फ मुस· लिसल देख पेंच में आया सम्बुल चमनके के बीच । नैननेतेरे शरमदा नरगिस कालेहिरणके बीच ।। फूलरहीहे फुलवारीवो प्यारे तेरी फबन के बीच । कद पर सदके करूं में सर्वसही गुलशन के बीच ।।

शेर-करूं तलबपर तसदुकलाल गुललाल के दो टुकडे ।
औ ददां मोतियां देखें तो उनकी आब सब उतरे ।।
अगर्चे मुसुकराके और करे गर कुछ बात तू हंसके ।
तो होवे बेकली हरएक कली फूटै खिलें गुंजे ।।

कौनवोहैखुशबू जो बसी है नहीं तेरे दम कदमके बीच । फूलफूलके गिरपडे हरएक फूल हरकदम के बीच ।। १ ।। रु खसारों को देख गले गुल गुलाब तेरी लगन के बीच। सदा सुने तो धुनेशिर तूती आगिलगे अगन के बीच ।। भरा हुओह चाह हुस्नका आपकी चाहे जक्नके बीच ।

डूब गये हम न दहशत करी ज़रा इन मन के बीच ॥

शैर—फ़िदा दिल है गुलेराना तेरे ऊपर हरेक गुलका ।

दिखादे बहारी और पिलादे जाम उस मुलका ॥

मचै वो कहकहे और चहचहे गुल होतजम्मुलका॥

खुले परवाल कुमरी के कश लेमान बुल्बुलका॥

शाख शाख हो हरी शजरकी लगें कमल हर कमलके बीच।

फूल फूल के गिर पड़े हर एक फूल हर कदम के बीच ॥ २ ॥

नज़र पड़ी जिसवक्त गुलिस्तां की तेरे परहनके बीच । चाक गरेबांकिया गश खाके गिरे कुल धरन के बीच॥वहहै नज़ाकत आपमें ये हैं कहाजुही या समनके बीच । बनवन के सब फूल फूले हैं तेरे योवन के बीच ॥ शैर ॥ हुआ मुर्गाने चमन का दिमागतर बूसे । महकआनेलगी उलफतकी वो तुझ गुलरूसे। सिफतमैं किस तरह तेरी करूं कौंन मुँहसे । खार की बातन तूने करी कभी मुँहसे ॥ लगी चाटने तलवे तेरे आह तेरीश- बनम के बीच । फूल फूल के गिरपड़े हरएक फूल हर कदमके बीच ॥ ३ ॥ मुरझाया दिल हरा हुआ हुई गुलज़ारी गुलबदन के बीच । खिजां का मुतलक नाम नहीं रहा गुलों के वतन के बीच ॥ झुक झुक के सब करें डालियां सिजदा तेरे चरन के बीच । कहै देवीसिंह ख्याल तौहीद मारफत सखुन के बीच ॥ शैर ॥ खिचा नक्शा मेरे दिल पर है वह तेरी सफाई का । बसी तस्वीर आंखों में और हैं जलवा इलाही का ॥ किसी को ताज बख्शा और किसी को तख्त शाही का । गदाई हम को दी जिस में दिया दावा खुदाई का ॥ वनारसी कहै गजब झलके है तेरे कदम

के पदम के बीच । फूल फूल के गिर पडे हरएक फुल हर क़दम के बीच ॥ ४ ॥

कुचे जाना में गर कोईघरके ज़रा कदम निकला। फिर वो न निकला उसी कूचे में उसका दम निकला ।। ये है रास्ता सख्त गर कोई इसमें नागहा आन पडा । जानबूझ के फिर वो देताहै इसी में जॉन पडा।।कहीं तपिश में तपे कहीं काटों का नजरमैदान पड़ा । कदम कदमपर अब हमको लुत्फ़ इश्क का जानपड़ा ॥ शैर ॥ हमें गुलशन से भी बहतर हैं इश्क के कांटे । ये फर्श खारके तोफा है मुझे मखमल से । कहूंमें किस्से सुनेकोन इश्कके क़िस्से ॥ जो देखें हाल हमारा तो कैसाभी हो ससके॥रहा वहांका वहीं देखने जो अपना हमदम निकला । फिर वो न निकला उसीकूंचेमें उसकादम किकला॥३॥ मजा चाहका जिसने देखा होगा वह डूबाहोगा । बहरे इश्क में जो तेरा होगावहडूबाहोगा ।। अश्क चश्मसे जिसके बहता होगा वह डूबा होगा। चाहे जनकपर जो शैदा होगा वह डूबा होगा ॥ शैर ॥ बहरे उलफतका किसी को भी किनारा न मिला । या खुदा ना खुदा का वहांपर इशारा न मिला ॥ किश्ती हरगिज न मिली कुछ भी सहारा । मिला न थाह मुलकत न मिली दम भी गुज़ारा न मिला ॥ लगा न थल बेड़ा उस जापर से न कोई आदम निकला । फिर वह न निकला उसी कूचे में उसका दम निकला ॥ २ ॥ इश्क को जो देखा तो खड़ा है मेरे शिरपर दार लिये । हुस्न को देखा तो वह धमकाता है तलवार लिये ।। जल्फ़ यही कहती है कि मैंने कितनेही आशक मार लिये । चश्म

इशारे करें हैं जादू के हथियार लिये॥ कौन इस क़त्लके मैदां से निकल जायेगा। किसतरह काकुलेपेचां से निकल जायेगा॥ कोई नइश्क के तूफां से निकल जायेगा। न निकल जायेगा गर जांसे निकल जायेगा॥ तानके अबरू तू जिसपर वहलेके तेगे दुदम निकला। फिर वह न निकला उसी कूचे में उसका दम निकला॥ ३॥ क़त्ल हुआ वह जिसने इस मैदां में आके क़दममारा। गिरा ज़मी पर न उसने आहकी औ न दममारा॥ उसके हुस्नके आलमने एक आलमका आलम मारा। कहें देवीसिंह गया मैंभी इसमें उसदमग़मारा॥ इश्क ने दारपरमंसूर को चढ़ाया है। हुस्न ने यार के कोहनूर को जलाया है॥ नूर ने जिसके हरयस नूरको बनाया है। शहूर उसने बेशहूर को बताया है। बनारसी करतर्कजहां को सीधी राह अदमनिकला। फिर वह न निकला उसी कूचे में उसका दम निकला॥४॥

ज़ुल्फ सिआसे मार सिआ है चश्म से लाली गुल में है। नक्शा क़दका कयामत धूम यह आलम कुल में है॥ सर से हर सरदार बने पेशानी से जलवे खुरशीद। चीने ज. बींकी यह है तहरीर न जिसकी दीदो सुनीद॥ अबरू में झुकी कमां औ पैदा हुआ फलकपर माहेईद। खंजरे बुर्राने पाइ बाढ़ किया लाखों को शहीद॥ शेर॥ है कुरां में वह जो बिसमिल्ला: अबरू से बनी। औ अली की तेग भी वल्लाह अबरू से बनी॥ और सिफ्त क्या क्या करूं मैं कहा जाता नहीं। जो चला झुकके तो उन की राह अबरू से बनी॥ तुझ गुलका चर्चा गुलेराना यही तो हर बुलबुल में है। नकशा कदका कयामत धूम यह आ.

लम् कुलमें है ॥ १ ॥ मिजैंसे पैकाबने औ नस्तर चुभेरंग जांपर आकर । खार भी उसदम खटकने लगे मेरे वहां पर आकर ॥ निगाह से वह तलवार चली सो लगी नीमजांपर आकर । आहवी मुतलक न ठहरी मेरी जबां पर आकर ॥ शैर ॥ है शरारत वह तेरी चितवनमें ऐ रश्के कमर । हो रहा जीसे जहांके बीचमें जादूसे हर ॥ लड़गई जिस शख्स की वह आंख तेरी आंखसे । फिर उसे तेरे सिवा कुछ भी नहीं आया नज्जर॥ वही जिक्र मय खानेमें औ यही सदाकुल कुलमेंहै । नक़शाकदका कयामत घूम यह आलम् कुलमें है ॥२॥ बीनी से बना अलिफ़ तेरे रुख से वह पैदा नूर हुआ ॥ जिसकी झलकसे गिरामूसा औ खाक काहे तूरहुआ । लब से लाल यह मन बने याकूत वह वहीं ज़रूर हुआ ॥ औ दन्दांसेबने गौहर तो क्याही जरूर हुआ ॥ शैर ॥ है झलक हीरोंमें ऐप्यारे तेरे दन्दान से । चर्क्ष भी चमकी वही दांतों में तेरी शान से ॥औ जबां से बर्गगुल पैदा हुआ रंगीन वोह । हरसखुनशीरींतेरा निकले है क्याही आनसे ॥ वादे सबा कहती है यही औ वही जिक्र हर गुल में है । नकसा कदका कयामत घूम यह आलम् कुलमें है ॥ ३ ॥ चाहे जकन से आशक़ सादक़ के दिलमें वह चाहहुई । लगा झांकने कुएँ जिस जिस को उधर निगाह हुई ॥ गले से मीना बना सुराही भी उसके हमराह हुई । कहैं देवीसिंह सिफ़त किस्से तेरी अल्लाह हुई ॥ शेर ॥ थक गये लाखों हिं शायर करके सब तेराबयां । पर न पाया राज तेरा तूतो है राजे नियां॥ किसकी ताक़त है जो हो आगाह तेरे हुस्न से । यक

झलकमें गिरपड़ा मूसा भी होकर नातवां ॥ बनारसी न यही लिखा कवि काशी गोकुल में हैं। नक्शा कदका कयामत धूम यह आलम कुलमें है ॥ ४ ॥

आशक मैं हूं उस गुलका जिसपर फिदा हैं सारे गुल। बहार में भी न जिसके नाम खिजाँका है बिलकुल ॥ सदारहै सरसब्ज वह उसकी महक से मस्तानापन हो। दीद उस गुल की करता दिलमें दीवानापन हो ॥ अदासे उस शमशादकी आशकमें तो आशकाना पनहो। क्यों नहीं गुंचे खिलें जब उसमें मुसकराना पन हो ॥ शेर ॥ बनाये क्योंन उसगुलशन में कुमरीआसियां अपना। गुले गुलज़ार गुलरू और जहां हो बागवांअपना। नहींसैयादकाडरकुछ न मुतलकखौफना अपना ॥ मकांहै लामकां अपना निशा है बे निशां अपना। गुंचेभी यहीं चटक चटकके करें चमन में शोरो गुल ॥ बहार में भी न जिसकेनाम खिजांका है बिलकुल ।१। पेंच से जुल्फोंसियः फामसेदाम इश्क पेंचा बनजाय। मुश्केखुतन भी महके जुल्फों से वह परेशां बनजाय। बालसे आये वह बाल सम्बुल परजा ज़ुल्फ पेंचा बनजाय ॥। नाफे आहू का मुंह काला हो घासे रेहा बनजाय ॥ शेर ॥। पडे झूमर वो उस्के रुखपर जल्फोंका जो मुँह खोले। तो अशरत का हिंडोला देखकर खाये वह झकझोले ॥ और काकुल सम्बुले कालना मुँह से अपने कुछ बोले। यकींए है कि पानीके लिये जहर घोले ॥ जुल्फ अम्बरीहै यां सोसन गुलहै नेरीकाली का फुल। बहार में न भी जिसके नाम खिजांका है बिलकुल ॥ २ ॥ वस्ल से नरगिस शरमिन्दा हो सर को झुकाये खड़ा रहे ॥

आंख उस गुलसे कभी मुतलक न मिलाये खड़ा रहै। कदसे सर्वसनोवर गुलशनमें गड़जाये खड़ा रहै ।। दहनसे गुंचातंग होके शर्माया खड़ा रहै ।। शेर ।। सफाई देखकर उसकी समन में लाहो गुलशनमें । वो नाजुकपननहीं में जो कुछ है यार के तनमें ।। बिनादेखे हथेलीको तो खू उगला करै मनमें । सदा उसकीसुने तूतीतो फिर भागै कोई बनमें।। शाखशाखपै यही चहचहा करताहै शैदा बुलबुल । बहारमें भी न जिसके नाम खिजांकाहै बिलकुल ।।३।। इश्के चमन् गुलबदनको मुलदेखेतो गरेबाँ चाककरै । हरएक गुलिस्तांको वो यकदम् भरमें दम नाककरै ।। गर्चेकोईमुर्गाने चमन्‌जो उससे मुहब्बत पाककरै । बहरे इश्क का खुदा उस आशक को पैराक करै ।। शेर ।। सबा आई जो गुलशनमें तो उसकी क्या बिथा बन आईहै। नही वाकिफ था जिस बू से वो सब उसमें समाईहै ।। न मुतलकखार गुलशन् में न कुछ गुलकी बुराई है। नहीं दिल में लगा वो बुल वहां जलवे खुदाईहै ।।बनारसी को उस गुलरू ने पिला दिया वो जामेमुल । बहार में भी न जिस के नाम खिजां काहै बिलकुल ।। ४ ।।

जल्फ को तेरी मार कहै तो मार मार से कटवाऊं । सम्भुले पेंचा कहै तो पेंचमें मैं उसको लाऊं ।। कद्दसे सबकी निस्बत दे तो खोदके उसको गाडूं मैं । अगर सनोवरकैह तो चमन से अभी उजाडूं मैं ।। चालसे निस्बत दे जो फील कीलातसे उसे लताडूं मैं ।।पंजये मरजाँ कहै तो दस्तकेअभी उखाडूं मैं । काकुल को गर दम कहै तो जाल में उसके जलजाऊं ।। सम्भुले पेंचा कहे तो पेंच में मैं उसको लाऊं।।१ ।।

चश्म तेरे नरगिस जो कहेतो आंखसो उसकीफोडूँमें। दन्दां गौहर कहै तो दांतसब उसकेतोडूँमें। दहनको गुंचा कहेतो उसके मुंहको पकड़मरोडूंमें। जानके निस्बत येदें तो जानन उसकी छोडूंमें। अगर तेरीकाकुल उलझे तो क्योंकर उसको सुलझाऊं। सम्बुलेपेचांकहेतो पेंचमें में उसको लाऊं।२। जकन को तेरे चाह कहै तो कुएमें उसे डुबाऊं में। पेशानी को कहै खुरशेद तो उसेघुमाऊंमें।गलेकोमीनाकहेतो गर्दनउसकी अभी कटाऊंमें॥ गेसूको कहे घटा तो उसका घटाके रुतबामें आऊं। सम्बुले पेचा कहे तो पेंचमें मैं उसको लाऊं॥३॥ जवांको तेरी कहे बर्गगुल उसकी जबां निकालूं मैं। हिलाले अबरू कहे उसके टुकड़े करडालुं में॥ सीने को कहे आईना तो उसे न देखूं भालूं मैं। कमर को तेरी अगर मुंह कहै तो उसे छिपालुं मैं॥ बनारसी कहै तेरे बालकी कहीं भी निस्बत सुनपाऊं॥ सम्बुल पेचा कहें तो पेंच में मैं उसको लाऊं॥ ४॥

रंज को हम राहत समझे और दर्द को हम दिल्बर समझें। गमको अपनी गिजा समझें और सुफलसीको जर समझें॥ अलम को समझें ऐश और मरने को जिन्दगानी समझें।जफा को समझेंवफा खफाको महरबानी समझें झूठको सचसमझें लेबास हम तनुकीउरियानी समझें॥ आनको समझें हमआतश आतश को पानी समझें।जर कोसमझें जबर औरकमजोरको जोरावरसमझें।गम को अपनीगिजासमझेंऔर

मुफलसीको जरसमझें ॥ १ ॥ मुर्देको जिन्दा समझें औरसितमको बडारहमसमझें । फनाजहांकोसमझें हरदमकोमुल्क अदम समझें ॥ बदीकोसमझें नेकी दुश्मन को अपनाहमदमसमझें। जहांपै समझें वहां पर हमतो वोही सनम समझें । नादां को दाना समझें और फिक्रको बड़ा फखर समझें ॥ गमको अपनी गिजा समझें और मुफलसी जर समझें ॥ २ ॥ गुल को समझें दाग दाग को हम अब गुलदस्ता समझें । उजाड समझें शहर को सहरा को बस्ती समझें । जख्म को गुल लाला समझें औ रोते को हंसता समझें । दीवाना को अल्कबर सिडी को हम मस्ता समझें ॥ आहको समझें याद यार की अश्कों को गौहर समझें ॥ गम को अपनी गिजा समझें और मुफलसी जर समझें ॥ ३ ॥ मार को समझें प्यार यार को गाली वही दुआ समझें । वेजाको हम बजा समझें औ मर्ज को सफा समझें ॥ इश्क हम आशक समझें माशूक को वही खुदा समझें ॥ क्या कोई समझें जो हम समझें वो और कोई को क्या समझें ॥ बनारसी का हरके सखुन आशक का खूने जिगर समझें । गमको अपनी गिजासमझें और मुफलसी जरसमझें ॥ ४ ॥

चाह को समझे चाहे जकन जँजीर को हम जेवर समझे । खाक को समझे पैरहन जमीं को फरशे तर समझे ॥ सब्र को समझे शुक्र और नातवानी को ताकत समझे । खार को समझे चमन औ हिज्र को हम उल्फत समझे ॥ तलख को समझे शीरीं दिल में जहर को हम इसरत समझे ॥ सङ्ग को समझे मोम और आफत को

अशरत समझे ॥ दार को समझे यार का जीना तीर को तेरी नजर समझे । खाक को समझे पैरहन जमीं को फर-शेतर समझे ॥ १ ॥ सुबह को समझे शाम शाम को अब हम परवाना समझे । माह को समझे मेहर और धूप शामियाना समझे ॥ वहशत को वहदत समझे रोने को तान गाना समझे । गम को समझे खुशलगां मौत को जी जाना समझे ॥ मक्कां को अपने समझे लामकां सनम का कूंचादर समझे । खाकको समझे पैहरन जमीं को फरशेतर समझे ॥ २ ॥ जुल्म को समझे अशान बुते खूंखार को अब खूंबा समझे । तेग को समझे अबरू नस्तर को मिजगां समझे ॥ कयामत को दुनिया समझे कातिल को अपनी जां समझे । कैद को समझे रिहाई खिजां को बागेजहां समझे ॥ रुसवाई को इज्जतवे तौकीर बड़ा बेकदर समझे । खाकको समझे पैरहन जमीको फरशो तर समझे । ३ । खौफको समझे खुशी औ हैरानीको शैरआलम समझे । गदा को समझे शाह गरादिशको फजलोकरम समझे । दोज-खको समझे बाहिश्त औ पाप को बड़ा धरम समझे । और जहां कोई नहीं समझे जो कुछ हम समझे ॥ देवीसिंह कहे बनारसी के सखुन को कौन बशर समझे । खाक को समझें पैहरन जमी को. फरशेतर समझे । ४ ।

इश्कहे खानेरंज पर इसखानये रंजमें राहत है । नुत्फ उसी को हो हासिल जिसे इश्क की चाहत है । इश्क में जो जाना है हम्ने समझा है यही जीजाना है । जानाजाना के दर पर जान बेच कर जाना है ॥ उल्फत में रुसवा होना

बस यही आबरू पाना है । नादाँको दिले दिया जिस जिसने बोः आशक दानाहै । शेर । फँसे तो इश्कके फन्दे में वो दुनियाँसे कुलछूटे मजेलूटे । उन्हों ने जिनके सब घर दर गयेलूटे । हमेंबोखार देते हैं जो गुलशन् में हैं गुल बूटे । खटकतेहैं मेरे दिल पर वो काँटें लगके जो टूटे । इश्क के बीमारोंकी रोशन आलम बीच शबाहत है । लुत्फ उसी को हो हासिल जिसे इश्ककी चाहत है । १ । जिगर जलाना आशक के हकमें ये बडी तरावट है । आतशे गमके अवअपनी आठोंपहर लगावट है । तनुकी उरियानीकों हम समझे ये खुब सजावटहै । इश्कमें बिगडे जो आशक उन्हीं की बनीं बनावट है ॥ शेर ॥ हुआ जो इश्क में मुफलिस वही जरदार होता है । कटाये शिर जो उल्फत में वही सरदार होताहै ॥ जो दिलको छीनले दिलबर वही दिल्दार होता है । और आंखें बन्दकर देखे उसे दीदार होता है ॥ जोरावर है वही इश्कमें जोके हुआ न काहत है । लुत्फ उसीको हो हासिल जिसे इश्ककी चाहत है ॥ २ ॥ कैद जहां से छूटै वही जो दामे मुहब्बतमें फंस जाय । निकले दोजखसे जो इश्ककी आतशमें घँसजाय ॥ किसी के बशमें कभी न हो गर वो दिलबर दिलमें बस जाय । करे उसी से रसाई कभी न जिस गुलका रसजाय ॥ शेर ॥ मुहब्बत मे जोदिलदगा वही बेदाग होता है । नफाहोता है उसको जो कि जर उल्फत में खोताहै ॥ वो हँसता है सदा जो उस सनम् के गममें रोता है । मिलाये तनुको मिट्टी में वो अपने मनको धोता है ॥ मजा इश्क का यही कभी राहत है कभीकराहतहै। लुत्फ उसी को हो हासिल

जिसे इश्ककी चाहत है । ३ । गमखाना आशक के हकमें ये न्यामत से वहतर है । हरयकमकां है उसीका जिसका कहीं न घरदर है॥ उसे खौफनहीं किसीकाहै जिसको उस दिलवरका डरहै । अपने आपको जो पहिंचाने वही अल्ला अकबर है । शेर । पढ़े नहीं इल्म का दफ्तर अलिफ वे ते न हम सीखे । न तख्ती हाथसे पकड़ी न कुछ हर्फ़ा कलमसीखे ॥ फकत इस इश्क के मकतब में हमनामे सनम् सीखे । सिवा उल्फत के और हम कुछ नहीं अपनी कसम सीखे ॥ देवी सिंह कहै बनारसी के सखुन में बड़ी फमाहत है । लुत्फ उसीको हो हासिल जिसे इश्ककी चाहत है॥ ४ ॥

जिधर को देखूं इधर रोशनी आफताव तमाम है । पिऊँ न मय में क्योंकर जिन्दारहूं मेरायह कलाम है ॥ नशा नहीं है हमें खुदाने आप गुलाबी जाम दिये । मये दीदके प्याले भर भर मुझे वरसरे आम दिये ॥ चली वह नादेसवा इसकदर हाथ हमारे थामलिये । तौभी परी पैकर ने मेरेमुह लंगावो आठो जाम दिये । कहै जो इसको हराम उसका खानापीना हरामहै॥पिऊँ न मयमें क्योंकर जिन्दारहूं मेरायह कलाम है । १ । एक तरफ आतशभड़के औ एक तरफ वारिश आवहै । मेरे दिलके मय खाने में दोनों तरफका हिसाब है । जिगरमें शोला उठै और चस्मोंसे टपके शरावहै । जवां यही कहती है मेरी लज्जत इसकी लाजवाव है। कुल्लजहानमें सुना हो मस्ताना मेरा नाम है । पिऊंन मय में क्योंकर जिन्दा रहूं मेरा यह कलाम है । २ । दिलमें गर देखी तो फिर दारे हमारा आयाहै । आज हमें साकीने दुबारा सागर आप

पिलाया है । देख मेरी बदमस्ती को मोहसिनने यह फ़. र्माया है । यहजो शै वहशत कहां से तेरी नजरों बीच समाया है ॥ कहा यह मैंने आंख हमारी मय वहदत का गुदाम. है । पिऊं न मय मैं क्यों कर जिन्दा रहूं मेरा यह कलाम है ॥ ३ ॥ सुना सखुन मोहतसिब ने यह तब उसके दिलमें होश हुआ । या तो मने करता था मुझे या आपी वहम बनोश हुआ ॥ चढ़ानशा जब इश्कका उसको जहां से वो बेहोश हुआ । कहा पिऊंगा मैं हरदम इतना कह कर खामोश हुआ ॥ बनारसी कहै हमें तो इसदारूका पीना मुदाम हुआ पिऊँ न मय मैं क्योंकर जिन्दा रहूंमेरा यह कलामहै॥ ४॥

आतश इश्ककी भड़क रही है इस दिल के मयखाने में । मये मुहब्बत पिलादे साकी उल्फत के पैमाने में ॥ यक ताई का आलम हो औ वहदतका हो रंगभरा । तुझ गुलकी हो खुशबू जिसमें वह शराब तू पिला जरा ॥ गमकी होवे गिजा साथमें वह खासा हो पास धरा । और मारफत का हो मीना करामात का कासकरा ॥ आफताबकी होवे रो· शनी मेरेदिल दीवाने में । मये मुहब्बत पिलादे साकी उल्फत के पैमाने में ॥ १ ॥ मस्ती का हो शब्द हरदम बादे सबाभी चलती हो । और गुलाबी मोसमहो हरगुल से महक निकलती हो ॥ बाजे बीन औ रबाब औ काफूरी शमा भी बलती हो । जिस महिफिल को देखके हरमोहत सिबकी छाती जलती हो ॥ भड़क उठे शोलएनूर पहलू में मेरे शाने में । मये मुहब्बत पिलादे साकी उल्फत के पै· मानें में॥२॥पास हमारे दिलबर हो फिर और सदाएकुल

कुलहो॥ जोश जनूभी दिलमें हो कहकहा भीहो शोरोगुलहो॥ शीशा सागरखुराहीहोओरगुलस्तान गुंचेगुलहो। हाथमें हो दिलवर का हाथ हरवात में वह जिकरे सुलहो॥ कबाव की लज्जत हुई हासिल अपना जिगर ललोन में। मये मुहब्बत पिलादे साकी उल्फतके पैमानेमें॥१॥दीदार तेरा दारू सफा है जिसे मिला वह मस्तहुआ। वदमस्तो में बैठ बैठकर वना रसी अलमस्तहुआ। चांदसा चेहरा देखतेही तेरा वह सूरज अस्तहुआ। दस्तगीरवहहुआ कि जिसका तेरे दस्तमें दस्त हुआ॥ कहे विश्म्भरनाथ मजाहैहरकमारफत गानेमें। मये मुहब्बत पिलादे साकी उल्फत के पैमाने मे॥ २॥

पानकी लालीसे जो मेरे वहदिलवरके लवलाल हुये। लाल वदखशां से भी बहतर पैदा अव लाल हुये॥ काकुल से काल हुये पैदा जुल्फ से अफई मार हुये। पेशानी मे नूर टपकता तो फरिस्ते चारहुये॥ अवरूसे खम खाखा के खंजर बिछुये खमदार हुये। औ मिजगां से तीर पैका रू. शतर पुरकारहुये॥ शैर॥ चश्मसे पैदा हुआ नरगिस हरेक गुलज्जारमें। और वो वीनी से अलिफ खीचा गया हरकार में॥ है वह जल्वा कुदरती दोनो तेरे रुखसार में। जिस से रोशन चांद औ सूरज है इस संसार में॥ पानी की रंगत पाकर दर्दा गोहर से जब लाल हये। लाले वदखशां से भी बैहतर पैदा अब लाल हये॥१॥ जवांसे पैदा कुरां हुआ औ अक्ल से इल्म हजार हुये। चाहे उजनकमे चाहके दिल में खुद ब खुद गार हुये। गुलसे बनीसुराही गुलशन तेरे गले के हार हूये। हुस्न से तेरे परी पैकर बनकरतैयार

हुये ॥ शेर ॥ तेरे सीने की सफाई से सफाई होगई । ताकतें बाजू से अब ताकतसवाई होगई हाथसे तेरे सखावत की सखाई होगई । पंजये मरजाँसे लग लाल हिनाई होगई ॥ देखके रंगी नाखूनोंकी शरामिन्दा तअलाल हुये । लालबद-खशांसे भी बेहतर पैदा अब लालहुये ॥२॥ शिकम्से नरमी बनीकमरसे पोशीदा सब हालहुये । औ जानूंसे तेरेदो नूरके थम्भकमालहुये । कदमसे सिजदाबना और पा छूने को सात पताल हुये । चालसे तेरी बनगये फीलन वह बेचाल हुये ॥ ॥ शेर । कदंसेतेरे अबतलक सबैचमन आबाद है । औरअदा तेरीसे आशकका सदादिलशादहै । नाजसेतेरे बनी अंदाज की बुयदहै । हरसराय से सरापातेराही ईजादहै , जो पत्थर तलुओं से तेरे लगगये वह तो सब लाल हुये ॥ लाले बदखशां से भी बेहतर पैदा अब लाल हुये ॥ ३ ॥ ठोकर से तुझ जाना की लाखों मुर्दे उठ खड़े हुये । आपके पायेन-कूश हैं मेरे दिलपर पड़े हुये ॥ तेरी चचलाहट से सद में वर्क के दिलपर बड़े हुये । कदम बोसीमें तेरी हम दिलो जान से लड़े हुये । शैर । शेरहक्कानीका कहना कुछनहीं आसान है । यह सखुन समझे वही जो आशके मस्तान है ॥ देवीसिंहकी शायरी पर दिलोजां कुर्बान है ॥ जिस के हरनुक्ते के ऊपर हर शख्स का ध्यान है ॥ बनारसी के खूने अस्क सब टप के यारबलाल हुये । लाले बदखशां से भी महतर पैदा अब लाल हुये ॥ ४ ॥

काकुलपुरखम आरिज रोशन दोनों को क्या यार लिखूं । मार जुलफका औ रुखको हरदम शोलेमार लिखूं ।

निस्बत है ये बेजा गरचे मूंजीपूर शरार लिखूं । नाम हुमा का जुल्फको रुखको हुमा इजहार लिखूं ॥ अच्छा नहीं है ये भी तशभी क्या तायर परदार लिखूं । मस्नुन्ने तर में जुल्म को वरगे समन रुखसार लिखूं ॥ ये मज्जे हैं जमींके इनको होके लाचार लिखूं । मार जुल्फ को और रुखको हरदम शोलेमार लिखूं ॥ १ ॥ काकुल को में कालीघटा औ रुखको बर्क आसार लिखूं । घटाके निस्बत न इनसे दून बर्क बेकार लिखूँ ॥ उसको तो जुलमात लिखूँ और हैंवां उसे हरबार लिखूँ । वह तो पुरखमनहीं और वां नये जिनहार लिखूँ ॥ काकुल को में लैललिखूं आरिज के तईं निहार लिखूँ । मार जुल्फ को और रुखको हरदम शोले मार लिखूं ॥ २ ॥ गरदिश में लैलोनिहार हैं कहां तलक दिल्दार लिखूं । उसको रेहां औ उसको सुनिये लाले जार लिखूं । तशभी उसे हैरां पुरदाग है वह क्या खारालिखूँ । रुखको कुरआं विरद पन काकुल को जुन्नारलिखूँ ॥ इनसे झगड़ा हिन्दू मुसल्मां हैगा क्याइसरार लिखूं । मार जुल्फको और रुखको हरदम शोले मार लिखूँ ॥ ३ ॥ रुखको हरदम शमये रौशन काकुल को धुआंधार लिखूँ । येभी गलत है और तशभी इनकी यक बार लिखूँ ॥ उसको मौजे बहर लिखूँ उसे आईना बेदार लिखूँ । मौजनयकजाँ आईना हैरां ये क्या शार लिखूँ ॥ जुल्फ सुवैदा बनारसी रुख नूरे हक्क गुल्जार लिखूँ । मार जुल्फ को और रुखको हरदम शोले मार लिखूँ ॥ ४ ॥

नाजो अदासे चली नाजनी दो जुल्फें लटका लटका ।

लटका आलम दिखाया जब उसने लटका लटका ॥ देख तमाशा उन जुल्फोंको फंसा दाम में कुल आलम् । पेंचमें उसके पड़ा है यारो ये बिलकुल आलम् ।' ऐसा बांधा खेंच जुल्फ में मचारहा है कुल आलम् उसके फन्द से कहो अब क्योंकर जाये खुल आलम् ॥ नशेमें है सर सार पीकर गेसु ये जहरका घुल आलम् । हुआ दिवाना देखकर उसकी वह काकुल आलम् ॥ फेर में जुल्फों के फिरता है कुल जहान भटका भटका । लटका आलम् दिखाया जब उसने लटका टलका ॥ १ ॥ गदा अम्बिया शाह औलिया और जुल्फ देखे गरदं । महक से उसकी होवे सब मस्त औ आये दिल में जनूं ॥ जुल्फों अम्बरी देखके आलम् आशक होगया गना यूं । लाम कहूं मैं या इनको लामकान अलिफ लिखूं ॥ जिस दम उसने बाल मरोड़े लाखों अफईकाहुआखूं । सबके जह्र को निचोड़ा क्या ताकत करे कोई चूं ॥ कालने शिरको पटका जिसदम् उसनेलटको झटका । लटका आलम् दिखाया जब उसने लटका लटका ॥ २ ॥ हिला हिलाके जुल्फ दुता कितनों के तई हलाल किया । मारमारके मार सदहा को हाल बेहाल किया ॥ मशारिक से मगरिब तक उसने अजबजुल्फका जालकिया । उसके बीचमें डालकर कितना पैमाल किया ॥ जिसदम् उसने जुल्फबनाके टेढ़ा बांकाबालकिया कालभी उसको देखकर डरा औ अपना काल किया ॥ फटकारा जब जुल्फको उसने कोई सामने नाहिं फटका । लटका आलम् दिखाया जब उसने लटका लटका ॥ ३ ॥ दोनों रुखसारोंके ऊपर लटलटकी घूंघरवाली । गोयामाहके

गिदे घिर आई घटा काली काली ॥ लटकाके जब जुल्फ सनमने इधर उधर रुखपर डाली । वर्णा क्या करूं बनाई अजब यह कुदरत की जाली ॥ देवीसिंह के छन्द रंगीले और सदा भोली भाली । सुने से जिस के हुई दरयक शायर को खुशयाली ॥ मतलब है तौहीद जुल्फ में और मारफतका खटका ॥ लटका आलम् दिखाया जब उसने लटका लटका ॥ ४ ॥

फकीरीखुदाकोप्यारी है । अमीरीकोननिचारी है ॥ बदन पर खाकहै सो अकसीर । फकीरोंकी है यहीजागीर ॥ हाथ बांधेखडेरहैंअमीर । बादशाहहोया होवेवजीर । सदायहसल्त हमारीहै ॥ गदाकीखुदासेयारीहै । फकीरी खुदाको प्यारीहै॥१॥ है इनकानाम सुनोदुवेश । कोई नहिं पाये इनसे पेश । खुदा सेमिलेयहरहैंहमेश ॥ कोईनहिंजानेइनकाभेद । कभीगिरियां ओजारीहै ॥ कभीचश्मोंमें खुमारीहै । फकीरीखुदा को प्यारी है । २ । है इनका रुतबाबहुतबलन्द । खुदाके नई यहहुआ पसन्द ॥ पादशाहसे भी यह बनेदुचन्द । इन्हें मत बुरा कहो हरचन्द ॥ इनकी दिलपरअसवारीहै । ऐसीनहिं कहींतैयारी है । फकीरी खुदाकोप्यारी है॥ ३ ॥ चौथडेशाल्में हैं आला । चश्म हरतालसे हैं आला ॥ चनेभी दालसे हैं आला । चलन हर चालसेहैं आला ॥ जखम जो जिगरपरकारी है वहीदिलपर गुजारी है ॥ फकीरी खुदाकोप्यारीहै ॥ ४ ॥ पांवमें पडा जोहै छाला । वहभी मोतियों मेंहै आला ॥ हाथमें फूटासा प्याला । जाम जमशेदसे भी आला ॥ अगरकोई हफ्तहजारी है ॥ वह भी इनकाही भिखारीहै । फकीरीखुदा

को प्यारी है। ६। मक़ांलामकांफकीरोंका। निशांबेनिशांफ-
कीरों का। फखहै निहांफकीरोंका। खुदाहैइमांफकीरोंका।
ताकत सब्र वह भारी है। मौततक जिनसे हारी है। फकीरी
खुदाको प्यारी है।६। बढगये बालतो क्या परवाह। उतर
गई खालतो क्यापरवाह। आगया मालतो क्यापरवाह॥
हुये कंगालतो क्यापरवाह॥ खुदा तु जनावे बारीहै। का-
शीगिरिको यादगारीहै। फकीरी खुदाको प्यारी है॥ ७॥

कहो किसेमैं देखुं देखाआलम में कुलहमींतोहै। कहीं पैगुलहैं
कहींपरआशके बुल्बुल हमींतोहैं। कहीं अनलहक बने कहीं
मनसूर कहीं परदारहैं हम। कहीं पर सरमदकहीं सरलेनेको
तलवारहै हम। कहींशमतबरेज़कहीं खुरशैदउसीके यारहैहम।
राहीएक हैं कहींपर देखो बिनाशुमारहैं हम॥कहीं बनेखामोश
किसी जां पर शोरोगुल हमींतो हैं। कहीं पै गुलहैं कहींपर
आशके बुल्बुल हमींतोहैं॥१॥किसी जगह पर शेर कहींपैशेरमें
बोले हमीं तो हैं। कहीं पै स्याने कहीं पर बोले भोलेहमीं
हे तो। कहीं पर आतिश आब कहींपर पड़े फफोले हमी
तोहैं। कहींपैरत्ती कहीपरमाशे तोले हमींतो हैं। कहीं ब
नेमयखोर किसी जापर साकीं मुल हमीतो हैं। कहींपर गुल
हैं कहीं पर आशके बुल्बुल हमींतो हैं।२। कहीं पै बन्देबने
कहीं पर खुदा खुदा का नूर हैं हम। कहीं पर मूसा कहीं
जल्वा और कहीं कोहनूर हैं हम॥ कहीं किसी के पास
रहे और कहीं किसी से दूरहैं हम। कहीं मलायक कहीं
पर परिस्तान और हूर हैं हम। कहीं बने पेशानी कहीं
उस रुखपर काकुल हमींतो हैं॥ कहीं पै गुल है कहीं पर

आशाके बुलबुल हमीतो हैं ॥ ३ ॥ कहीं बादशाहबने कहींपर आकरहुये फकीरहैं हम । मुरीदभी हैं किसीजां और कहीं पर पीरहैं हम । कहीं निशानाबने कहींपर कमां कमां के तीर हैं हम । कहीं शमाहैं कहीं पर परवाना गुलगीर हैं हम । बनारसी कहैं मुझे अगर देखो तुम बिल्कुल हमीं तो हैं । कहींपैगुलहै कहींपर आशाकेबुलबुलहमीतो हैं ॥ ४ ॥ ऐगुललेरी उल्फतमें गुलजारभी है और खारभी है । बड़ा लुत्फहै इश्कमें मारभी है और प्यारभी है । कभी इशारा अब-रूकाहै और कभी तलवारभी है । कभी वस्ल का हमसे इ-करारभी है इन्कारभी है । कभी गालियां झिड़की है और कभी शीरीगुफ्तार भीहै । कभी खिजांहै कभी गुलशन् है बागबहारभी है ॥ बोला ये मंसूर दार भीहै दीदारभी है बड़ा लुत्फहै इश्कमें मारभी है और प्यारभी है ॥ १ ॥ कभी तौक गर्दनमें पड़ा और कभी फूलोंका हारभी है । कभी वि-रहना बदनहै कभी तनपर सिंगार भीहै। कभी सेर महताबीहै और कभी कूचा बाजारभीहै।कभीहै राहत कभी रंजीदा दिल बीमारभीहै ॥ कहा लैलासे अब मजनूं ने अब मुलहभी है तकरारभी है । बड़ा लुत्फ है इश्क में मारभीहै और प्यारभी है । १ । कभीहँसी दिल्लगी कभी रोना अश्कों का तारभी है कभी नज़र का छिपाना कभी निगाहें चारभी है ॥ कभी गले से लगे कभी वह करता दारोमदारभीहै । कभी जलावे कभी यक अदासे डाले मारभी है ॥ कभी करे ऐयारी और वह बनता यारभी है । बड़ा लुत्फ है इश्क में मारभीहै और प्यारभीहै ॥ २ ।कभी जखम पुर होवें जिगरके कभी बदनपर

गारभी है। कभी करे खुश कभी वो करता दिल बेजारभी है ॥ देवीसिंह ये कहै मेरा वह शोखाशितम गर यारभी है। जो चाहै सो करै अब वही दिलका मुख्तारभी है ॥ बनारसी कहै नेकी बदी दोनों का उसे अखत्यारभी है। बड़ा लुत्फहै इश्क में मारभी और है प्यारभी है ॥ ४ ॥

कुरानकी आयतें हम उसके रुखनापाव से लिखते हैं। लाजवाब उसको हम अपने इस जवाब से लिखते हैं। अलिफको हमनहिं लिखेंगे बीनी उस गुलरूकी लिखते हैं। बिसमिल्लाको छोड सिफत उसके अबरूकी लिखतेहैं। लाम से कुछ नहीं काम झलक उसके गेसूकी लिखते हैं। ऐनको करके अलग आंख हम उसमहरू की लिखते हैं। ते को तर्ककर चीनेजबीं दिलको किताब से लिखते हैं। लाजवाब उसको हम अपने इस जवाबसे लिखते हैं। १। नुक्तों को कर अलग हम उसके रुखे लाल को लिखते हैं। हरेक इस्म से बेहतर उसके हरएक बालको लिखते हैं। कोई लिखे से जीम हे खे कोई दाल जाल को लिखते हैं। हम इनको गये भूल सिर्फ उसके जमाल को लिखते हैं। अरबी फारसी हिन्दी तुरकी सब सिनाबसे लिखते हैं। लाजवाब उसको हम अपने जवाब से लिखते हैं। २। कुल्हा कला मुल्लाः हम उसके सारे खतको लिखते हैं। और मायने कुरान के उसकी उल्फत में लिखते हैं। जेरजबरसे जबरदस्त उसकी ताकतको लिखते हैं। पेशसेबेहतर पेसानी उसकी किस्मतको लिखते हैं। रुख रौशन आला हम उसका महताब से लिखते हैं। लाजवाब उसको हम अपने इस जवाबसे लिखते हैं। ३ ।कलम

से पढ़कर अपने दिलवर की बात को लिखते हैं। मुसल्मान हिन्दुओं से आला उसकी जात को लिखते हैं। वो हैं नादान जो उसकी तायदादको लिखते हैं। देवीसिंह दिलवर उस की हर करामात से लिखते हैं॥ बनारसी तो हिसाबउस का बे हिसाब से लिखते हैं। ला जवाब उस को हम अपने इस जवान से लिखते हैं ॥ ४ ॥

ला मकां है आशकों का कहीं नहीं मकां है। जहां खुदा है मस्तों का दिल सदा वहां है॥ मालूम है मुझ को जो किसी चीज निहां है। वाकिफहूं औकहताहूंवो यारकहांहै ॥ हूंजईफ पर दिलमेराबड़ा जवांहै। नाताकतहूं पर मुझ में बड़ीतवांहै। जहां फना है मेरे लेखेवहींजहांहै। जहां खुदा है मस्तोंका दिल सदा वहां है। १। जहाँ खामोशीहै वहींपरशोरोफिगांहै। जहांदै नारा वहीं आतिशे सोजाँ है। जहां हिज्रहै उल्फतका भी वहीं समाहै। जहां लहर बहरहै वहींखडातूफाँहै। क्याकहूं मैं कहती मेरी यहीजवाँहै। जहांखुदाहै मस्तोंका दिल सदाँ वहां है। २। हूं लिबास पहने पर यहतनउरियाँ है। वस्ती को समझताहूं मैं येवीरांहै॥ जहाँ मुसल्मानहै वहींपर हिन्दुस्तांहै। मसजिद में मेरे उस बुतका बना निशाँ है॥ आशक की आह यही तो एक अजांहै। जहां खुदा है मस्तोंका दिल सदां वहां है ॥ ३ ॥ जिन्दा है वही जो जानसे भी बेजांहै। करता है सैर वह इश्क में जो हैराँ है॥ नादान को भी कहता हूँ मैं वह दाना है। ये अक्लहै मेरी और यह फहम कहां है। कहे बनारसी हर मिसरा मेरा कुरां है। जहां खुदा है मस्तों का दिल सदा वहांहै ॥४॥

चलते चलते थक गई यह मेरी पिंडुलिया। ला मकां

समझकर फिरे यारकी गलियां॥आसमा समझकर जमींपे खाक उड़ाई।औरऐसेसमझकरकरता फिरागदाई।लैलावनकरमजनूं की सूरतपाई। इज्जतको समझ कर उठाली अबरू सवाई॥ मन्सूर जानकर अपनी जान गँवाई। दीदारके खातिरदारपे करी चढ़ाई॥ सुखमाना मैंने दुखी जो मेरी नलियां। लामकां समझकर फिरे यारकी गलियां॥१॥ गुलजार समझकर खार जिगरपरखाया। राहतको समझ कर रँजोअलम उठाया॥हँसने को समझ रोनेका तार लगाया। औ सब्र किया तो अपना दिल घबराया॥ नजदीक समझकर बड़ी दूर फिर आया। पाया तो जहां में अपना ही आपापाया॥ ठोकर से पांवकी टूटी सबी अंगुलियां। ला मकां समझकर फिरे यारकी गलियां॥ २॥ कावे को समझकर बैठे बुतखाने में। बस्ती को समझ जा पहुँचे वीराने मे॥ जुल्फों को देखकर उलझा दिल शाने में। बातें जो सुनी तो पड़गये गम खाने में॥ जिन्दगी समझली अपना जीजाने में। वहदत को समझ मुलपीरी पमैान में॥ गिर पड़े दौड़ कर दिल को हुई तलमलियाँ। ला मकां समझकर फिरे यारकी गलियाँ॥ ३॥ मय समझ के पीने लगे अस्क रो रोके। और होश समझ बे होश रहे हम सोके॥ समझे थे नफा अब बैठें गांठ को खोके। बे बोझ हुए सर पर पत्थर ढोढो के॥ इकताई हासिल हुई भरोसे दोके। कहै बनारसी यह ख्याल खुशी हो होके॥ उस गुलके वास्ते उठाली सब बेकलियाँ। लामकां समझकर फिरे यारकी गलियां॥ ४॥

जो दिलवर का बेटे की तरह मुँह चूमें। उस आशक के

संगसारी खुदाईघूमें ॥ जिसजा देखे जलवये खुदाई देखें। माशूकको अपना करके थाई देखे। तन बदन मे उसकी खूब सफाईदेखे। सिरशे औ पैरतक सब रानाईदेखे। कभी दुदे वस्ल और कभी जुदाई देखे। हरसूरत मे उसकी इक नाहि देखें। जो उसका जलवा कोई देखे हरसूमें। उस आशक के संग सारी खुदाई घूमें ॥१॥जानी को अपनी जानसे ज्यादा चाहै। प्यारे को अपने प्राण से ज्यादा चाहै ॥ दोनों दुनियां ईमानसे ज्यादाचाहै। उससनम को इस जहान सेज्यादाचाहै वेदऔर पुराण कुरान से ज्यादा चाहै। हर तीरथके स्नानमे ज्यादाचाहै ॥ करइश्कमहकता रहे गुलकी चूमें। उस आशक के सँग सारी खुदाई घूमे। १। जिसजांपर देखे उसके नरको देखे। चाहेपरीको देखे चाहै हूरको देखे ॥ जामये मुहब्बत के सुकूरकोदेखे। वोआशकतो फिर बड़ी दूरको देखे॥जो अपने दिलमें उस जुहूरको देखे। वह खुदाको देखे औ गफूरको देखे। वोहीमुसल्मीनमें वोही देखेहिन्दूमें।उस आशकके सँगसारी खुदाई घूमें। २। गर आशकहोतो हकका मस्तानाहो। दीवानों को जो पढ़ेतो दीवानाहो ॥ लौलगा वहांपर जहां में वहजाना हो। जानाहो जहाँफिर वहांसे नहिं आना हो। पुदेवीसिंह तेरासखुन आशकानाहो। वह समझे इसेजो कोई सखुन दाना हो ॥ गर दिलको फँसाये उसके कफ़। अलक में। उस आशिक के संग सारी खुदाई घूमें। ३।

तूजिसमाजेगर और जान नहीं जानाना। फिर क्यों नहीं कहता खुदा जो तू है दाना ॥ फिरतं तुझको कैसे बनाजो बंदा। और कौन पेचका पड़ा है तुझ पर फंदा।

तू अपने आपको देखनहो मतिमंदा। है कौनसी वहबदबू जो हुआ तू गंदा ॥ गरतूने अपनेतईं जिस्मनहिं जाना ।फिरक्यों नहिंकहता खुदाजो तू है दाना।।१।।यहहाथ पांव औ सर भी नहिं कुछतू है। सीना और बाजूपरभी नहीं कुछतूहै।। जनखा औरत औरनरभीनहीं कुछतूहै। जिनदेव परी पैकर भी नही कुछ तूहै ॥ तू अपने बीचमें आपी आप समाना। फिरक्यों नहिंकहता खुदाजो तूहैदाना।। २। रोना और तड़पना आह नहिंकुछतूहै। मुंह जबां नाम वल्लाह नहीं कुछ तू है ॥ कावा किवलादरगाह नहींकुछतूहै। और हरामकीभी राहनहीं कुछ तू है। मसाजिद भी नहिं बनाहै नहिं बुतखाना। फिर क्यों नहिं कहता खुदा जो तू हैदाना। ३। तकदीर और पेसानी भी तूनहिं है। आतिश और हवा गिलमानी भी तू नहिं है अर्वाह और गिलमानी भी तू नहिं है। इस जिस्मकी जरा निशानी भी तू नहिं है ॥ यह बनारसी का समझ सुखुन मस्ताना। फिर क्यों नहिं कहता खुदा जो तूहै दाना। ४।

चश्मों में भराहैरंग गुलाबी गुलका। अश्कोंको पियेंगे काम नहीं कुछ मुलका ॥ यह आंख मेरी वहदत का पैमाना है। अब इसीको हमने समझा मयखाना है ॥ चश्मों से ज्यादा कोई न मस्ताना है। देखेतो इसमें क्या२ रंग स्याना है ॥ है भरानशा आंखों में आलम कुलका। अश्कों को पियेंगे काम नहीं कुछ मुलका ॥ १ ॥ जब चुवेंगे आंशू मेरे चश्म गिरयांसे। समझ के हम पीवेंगे इन्हें दिलजांसे ॥ मैखोरीका नहीं लेंगे नाम जबांसे। रोरोके पियेंगे अश्क लबेबिरियांसे ॥ हिचकियांसे मेरे होगा शोर कुल कुल का ॥

अश्कोंको पियेंगे काम नहिं कुछ मुलका ॥ २ ॥ बादाम भी ये हैं नरगिस के प्याले हैं। देखा मैंने यह पूरे मतवाले है ॥ यह नयन हमारे गुलशन गुल्लाले हैं। मैके इनमें भर रहे नदी नाले हैं ॥ जब चाहे खुमके खुन्दम में दे ढुलका। आ श्कोंको पियेंगे कामनहीं कुछमुलका ॥ ३ ॥ उस परी का आ- लम आंखोंमें छायाहै। इस बादेकशी से अब दिल घब- रायाहै ॥ मैंसे ज्यादा अश्कों में मजापाया है। मज़मून यह देवीसिंहने नया गाया है ॥ है यही सखुन आशक सादिक बुल्बुलका। आश्कों को पियेंगे कामनहीं कुछ मुलका। ४।

साकिया पिला सागरे दीद उसगुलका। वहदत हो जिसमें भरा वस्ल तुझगुलका। अबमये मुहब्बत आकर मुझे पिला दे। औरजामतू अपनी दीदका मुझे पिलादे। दिल से दिल अपने जिगरसे जिगर मिलादे। दीदार की दारूसे तू मुझे जिलादे ॥ गुलहो गुलशनमें मचे शोर कुलकुलका। वहदत हो जिसमें भरावस्ल तुझगुलका। १। शाके शराब का भर कर पैमाना ला। इश्कका सुराही हाथ में जाना नाला ॥ मैंपिलामुझे उसनूरका मैखानाला। गुलशनमें गुलाबी रंग तू शाहाना ला ॥। मालूम हालहो नशे में आलम कुलका। वहदतहो जिसमें भरा वस्ल तुझ गुलका। २। मैं तुझे पिलाऊं तूमै मुझे पिलादे। जब लुत्फ इश्कका खूब खून दुआये। मैंकहूं औरदे तूभी यही फरमाये। वह बात हो जिसकी बात न कोई पाये। कुदरत का करावा मेरे जाम में ढुलका। वहदत हो जिसमें भरावस्ल तुझ गुलका। ३। शीशे दिलमें भरदे तू मेरे अंगूरी। इस लिये दिलकी होवे दूरकदूरी ॥ वह जल्वा अपना दिखाये मुझको नूरी। कहै

बनारसी दिलकी मुराद हो पूरी ॥ मैंपीकेचहकतारहे यहदि-
लबुलबुलका । वहदतहो जिसमें भरा वस्लतुझगुलका ॥ ४ ॥
बिन पिये जहांके बीच जिऊं मैं कैसे । भरदे प्याला लव
रेज साकियामैंसे॥ मैं वहदतका मुस्ताकहूं यकमुद्दत से । वा
किफहूँ मैं कुछमलानोंकी आदतसे ॥ जिस वक्त नशासरसार
हुआ शिद्दतसे । बेहोशहुआ इसदुनियांकी विद्दतसे ॥ हरव-
क्तजबांसे कहा करूंमें ऐसे । भरदे प्याला लवरेज साकिया
मैंसे । १ । शोलये नूर दिलमें मेरे भबकेहै । अशरत की मैं
हरदम उसमें टपके है ॥ लौलगीहै और दिल उस लौमें लपके
है । इसनशेसे अबकब आँख मेरी झपकेहै ॥ आती है यही
आवाजहर जगह मैंसे । भरदे प्याला लबरेज साकिया मैंसे
। २ । माल्म हुआ मैं मौतकी यहदारूहै । हर गुलोंकी रूहै
खिंचीहै वहगुलरूहै । रिन्दानोंकी महफिल में यहीमहरू है ।
और इससे बहतर नहीं कोई खुशबू है ॥ तू पिलादे मुझको
थार बन पड़े जैसे । भरदे प्याला लबरेज साकिया मैंसे ॥ ३ ॥
एकरोज सामने मेरे मोहत सिब आये । बोले मैं पीना
कौन तुझे सिखलाये ॥ औ देख कढ़ावे मैंके वह घबराये ।
बोले मैं के यह क्या खुदाने नहीं बनाये ॥ फिर कहने लगे
मोहित सिबभी मुझसे ऐसे । भरदे प्याला लबरेज साकिया
मैंसे ॥ ४ ॥ बीनो रबाब मिरदँगकी तय्यारी हो । मीनेमें मी
नेकी मीनाकारी हो ॥ गुलपास में बैठे हों औ गुलज़ारी हो
कहै बनारसी उस वक्त वह मैं जारी हो। हर वक्त राग फिरब
जाकरे इस लैसे । भरदे प्याला लबरेज साकिया मैंसे ॥ ५ ॥
आतही इश्कने यही मचादी होळी । वह आतिश और

तनफूसजलादीहोली ॥ चश्मोंसेचरसने लगा कुनरंग पानी । औरइश्कभी करने लगावह ऐंचातानी ॥ मैं हँसूंतो गाली देय मुझेदिलजानी । औरलोगवजावेंतालीसुनोंकहानी ॥ नहीदेखी थीसोमुझे दिखादीहोली । वह आतिशऔर तनफूसजलादी होली । १ । गमकेगुलालने ऐसीधूमउड़ाई । अवसिवाखुदाके कुछनहिंदेयदिखाई ॥ तनवदन में जीतेहीजी आगलगाई । जो होनीथीसो होली मेरे भाई ॥ शाबासइश्कने खूबलगादीहोली आतिशऔर तनफूस जलादीहोली । २ । जिसवक्तवहआया दिलमेंइश्क रंगीला । थाचेहरेका रँगलालसो पड़गया पीला ॥ और जामा जोथा खिंचा वह होगया ढीला ॥ इसपर भी दोस्तोंने करदिया यह गीला । हजरत इश्कनेमुझे खिला दी होली । वहआतिश और तनफूस जलादी होली । ३ । दिल तड़प तड़प कर अपना नाच दिखाये । यह इश्कन अपनी कुछ खातिरमें लाये ॥ दिन आहआहकर शोर और धूम मचाये । परइश्कनइसकी मुतल्कसुनेसुनाये ॥ लो सुनो दोस्तो तुम्हें सुनादी होली । वह आतिश और तनफूस ज-लादीहोली । ४ । ठगगयेइश्ककोकवीरगातेगाते । जिनकोदेखावह आये ढोलबजाते ॥ कोई शिरपरडाले खाककोई चिल्लाते । कहैं बनारसीहम इश्कमें हैं रंगराते ॥ जोहकुल्लाथी मेरे गादी होली । वह आतिशऔर तन फूस जलादीहोली ॥ ५ ॥

हम तेरे इश्कमें यार बहुत दिन भटके । अब मिला सनम तू हमें खुले पट घटके ॥ कई बारगया दर तेरे इश्कमें हटके । फिर पाया हमने नाम तुम्हारा रटके । किये रंज हलम मंजूर जरा नहिं टटके ॥ दिलकी दहशत सब निकल गई

छटछटके । कई लाख वजहके दियेहैं तुनेभटके ॥. अबमिला सनमतूहमें खुलेपटघटके ॥ १ ॥जिसवक्त तेरी वह जुल्फनागि नीलटके । कोई घरसे होजाय उधर उधरसे चटके । गर देखो कालानाग तोशिरकोपटके । चढ जाय जहर जुल्फोंकावहघर * ।सटके ॥ हमआशकहैं मजबूतकहांजांय हटके । अबमिला सनम तूहमें खुले पटघटके । २ । लैला से लगाया दिलमजनू नेडटके । तनबदन भला सब कांटउसीसे अटके ॥ सूली पर चढामन्सूर उसीपरमटके । नहीं जरा नोंक सूलाकी जिगर में खटके ॥ देखाजो तुझे दिलगया जहां से फटके । अबमिला सनमतू हमैं खुले पटघटके ॥ ३ ॥ जबखुलेकिवाडे यारकपटके पटके । दिल में पायेदीदार वह बंशीबटके । शिर मोरमुकुट काटिकसे जरीकेपटके ॥ कहै देवीसिंह है अजब खेल नटखटके कहै बनारसी हम आशक नागरनटके । अब मिला सनम तूहमें खुले पट घटके । ४ ।

सखियों से कहै यह बात कृष्णहोलीमें । चोरीसे कुम-कुमेधरे हैं क्यों चोली में ॥ कुछरंग इनमें है भरा या ये खाली है । योहंसके बातयह पूछत बनमाली है ॥ तब सखियां भी हँसरकरदें ताली हैं । वह गालीदें जो कुछ भोली भाली हैं ॥ कहै कृष्णभरेहैं गुलालया रोली में । चोरी से कुम कुमेधरे हैं क्यों चोली में । १ । यह कहकर अपनी कृष्णने भुजा बढ़ाई । तब सखियों ने कुच अपने लिये चुराई । मनमें कुछ ऊपरसे कुछ बात बनाई ॥ चित चाहै लज्जासे दियो हाथ हटाई । यही कृष्ण कहै हँस हँस ब्रजकी बोली में ॥ चोरी से कुमकुमे धरे हैं क्यों चोली में ॥ २ ॥ कहैसखीकृष्ण

अबहमको मतीलजाओ। चितचोरहो तुम क्यों हमको चोर बनाओ। नितचोरी करकरके दधि माखनखाओ। अब बरबस क्यों अँगिया में हाथ लगाओ॥ स्याने हो पै बोलो भोली बतियां भोली में। चोरी से कुमकुमे धरेहैं क्यों चोलीमें॥ ३॥ यह सुनीबात तब हँसे नन्द के लाला। बंशी ये बजाकेनान में जादू डाला॥ लगगई गले से आप सकल ब्रजबाला। कहैं देवीसिंह मैं जपूँनाम गोपाला॥ कहै बनारसी कुछ गोलहै हँस गोलीमें। चोरी से कुमकुमे धरेहैं क्यों चोली में॥ ४॥

हर जगेपै देखा कहीं नहीं तू देखा। जहां याद है तेरी वहीं वही तू देखा॥ गये बहिश्तमें हम वहां न तुझको पाया। बुतखानेमें भी नहीं नज़र तू आया॥ काबा कि बला मक्कामसीत ढुँढ़वाया। काशी मथुरा में बहुत दिनों भरमाया। जा जाकर गंगासागर सिन्धु नहाया। मैं तेरे इश्क में चारों तरफ उठधाया। नहीं हमने प्यारे और कहीं तू देखा। जहा यादहै तेरी वहीं वही तू देखा॥ १॥ जंगल बस्ती सब सब उजाड़ हमने छाना। नहिं देखा तुझको देखा सबीजमाना। कोई भतवाला कहता है कोई मस्ताना। जो जो कुछ जिसने कहा वह हमने माना। फुनकू फिरे दर दरका हुआ दिवाना। नहिं पाया प्यारे तेरा कहां ठिकाना। अब याद करी तो दिलमें यही तू देखा। जहां यादहै तेरी वहीं वहीं तू देखा॥ १॥ शिर पटकपटक कर पहाड़पर देमारा। और आह आहकर करके बहुत पुकारा। देखा देवलदेहरा और ठाकुरद्वारा। सब तापा सबको देख देखकर हारा। घरबार तजा आलम से किया किनारा। जैसी कुछ गुजरी

बसहै कियागुज़ारा॥ यह बातैहमकोयाद रही तूदेखा। जहां यादहै तेरी वहीं वहीं तू देखा ॥ ३ ॥ सब देखाहमने गुलशन और गुल्लाला। बन फ़कीर बनबन फिरा पहिन बनमाला ॥ देखा पत्तापत्ता और डालीडाला। हैं सब में तू औरसब से रहै निराला ॥ यह बनारसी का कलाम रस का ढालहो अरज मेरी यह सुनो नन्दकेलाला ॥ तुझ दिलबरपर आशक हूँ यहीं तू देखा। जहांयादहै तेरी वहीं वहीं तू देखा ॥ ४ ॥

इश्कहजरत ने की हमपै मेहरबानी। करुं मैं क्या क्या महेमानी ॥ नजर देनेको दिल अपना मैं लाया। इश्क के बहुत पसंद आया ॥ इश्कने मेरा जब लखते जिगरखाया। तो मैंने और भी बतलाया। खून आशकका यह है ताजा पानी। पीजिये इश्क मेरेजानी ॥ १ ॥ अश्क गौहरका जब गले हार डाला। इश्कने कहा ये है आला ॥ चशममें भरभर कर वह गुल्लाला। इश्कके तई दिया प्याला ॥ बनपड़ी मुझसे जा कुछ कि कदरदानी। इश्ककी सबीबात मानी ॥ २ ॥ जिगरपर मेरेजो थे उल्लफतकेमार। दिखाया इशकका वह गुल्जार ॥ और सीने पर गुलखाये कई हज़ार। दिखाई इश्कके तई बहार ॥ मालोजर सारा देकरके यही ठानी। किया तन अपना उरयानी ॥ ३ ॥ और एक तोफाजोथी सब में भारी। जान होती सबको प्यारी ॥ इश्कके ऊपर वह भी मैंने वारी। नजीर देने से हुआआरी। कहूँ मै इसके आगे अब क्याबानी। इश्कके हाथ जिन्दगानी ॥ ४ ॥ कि मैं हूँ आशक है इश्कमेरा सरदार। हमहैं उसके फर्माबरदार ॥ बजुज आशकी के कुछ और न मेराकार। इश्कके

सिवा न कोई यार ॥ कहे देवीसिंह हे बनारसी ज्ञानी । हरेक छन्द जिसकी कहानी ॥ ५ ॥

भेदकोई बुतोंका क्या पावे । पाक मुहब्बत करो तो जलवे खुदानज़र आवे ॥ अगरये चाहे कर दिलसंग । तू कर दिलमोम तो फिर यह हो जायँ तेरेसंग ॥ यह लेके तेगसर चोरंग। तू दे सिरको झुका तो फिर देखे उल्फतका रंग ॥ यह है गरसमा तो तूहो पतंग । लगादे लौ में लौ अपनी मतरक्ख इसदिलकातंग ॥ दोहा ॥ अव्वलतो यह जलानलाकर करें तुझे ताजीर । फिरपीछे हो रोशन तेरा नामबने अकसीर ॥तूमत इसदिलमें घबरावे । पाकमुहब्बतकरो तो जलवे खुदा नज़रआवे ॥ १ ॥ यहदिलबर है मेरे दिलके । खुदामिला पीछे हमको पहले इनसे मिलके ॥ हालसुन इस दिल बिस्मिलके कतलहुये तो भी शिकवे नहींकिये उस कातिलके । यह गुल सबवने आवेगिलके । अव्वलथे गुंचेसे गुलहुवे खिलखिलके ॥ दोहा ॥ बाग इश्कमें अयदिल बुल्बुल गुलोंकी देख बहार । खार अगचे चुभेंतो उन कांटों पे आसनमार ॥ वही फिरगुलशन होजावे । पाकमुहब्बत करो तो जलवे खुदा नज़रआवे ॥ २ ॥ वहहै ज़ुल्फोंसे जहर इनके । इसे जहर मत समझ यही है लहर बहर इनके ॥ लगेहैं वोको इतर इनके । हरेकतरावट से बहत्तर रहेंगे सूरतइनके । पेंचमेंपड़े अगर इनके । हरेक फन्दसे वाफिक होवे वोही मगर इनके ॥ दोहा ॥ जिसका दिल दिलदारकी ज़ुल्फों में बिखरे । देखेबिखरे नाग निरख कर तो ये दिलनिखरे । वोही उलझावे सुलझावे । पाक मुहब्बत करो तो जलवे खुदा नज़र आवे ॥ ३ ॥इनके

अजब कटीले नैन । कर चोटपै चोट बनेहैं गजब चुटीले नैन ॥ बुतोंके छैल छबीले नैन । काले गोरे लाल रंग में रंगरंगीले नैन ॥ बहुत रस भरे रसीले नैन । सबके ऊपर इनकी नोकहै यहहैं नुकीले नैन ॥ दोहा ॥ जो कोई इनको पाक निगहसे देखे आशक आन । उन्हें दिखाई इन्हीं बुतोंमें देवै उसकीशान ॥ रूप वह अपना दिखलावे । पाक मुहब्बत करो तो जलवे खुदा नज़र आवे ॥ ४ ॥ जिसने इन बुतोंको जाना है । उसीको जाना मिलाहुआ जिसकावह जानाहै ॥ इनका लामकां ठिकाना है । वहांसे उतरा नूर वह इनके बीच समाना है ॥ सखुन मेरा आश्काना है । जिसने सुनाइतकादसे वह आशक मस्तानाहै ॥ दोहा ॥ समझ आश्कोंकी रमजें और कर दिलको होशियार । देवीसिंह यों कहै हुआ तौहीद छन्द तैयार ॥ मार्फत बनारसी गावै । पाक मुहब्बत करो तो जलवे खुदा नज़र आवै ॥ ५ ॥

आनके हमने देदी अपनी जान तुम्हारे कूचे में । जान भी बाकी नहीं रही दिलजान तुम्हारे कूचे में ॥ मार मार करते हैंगे सुयेमार तुम्हारे कूचे में । वारकरे लेकर अबरू तलवार तुम्हारे कूच में ॥ मिजअकी नोकोंसे हुई दारनादार तुम्हारे कूचेमें । हरेक बजे के यार चले हाथियार तुम्हारे कूचे में ॥ मान न मुतलक रहा अरमान तुम्हारे कूचे में । जान भी बाकी नहीं रही दिलजान तुम्हारे कूचे में ॥ १ ॥ जाल जुल्फका बिछाहै वह जंजाल तुम्हारे कूचे में । बाल देखकर दिलको हुआ बबाल तुम्हारे कूचे में ॥ लाललबोंपर सदके करदूँ लाल तुम्हारे कूचे में । कितने माल वाले होगये पामाल तुम्हारे कूचे में ॥ बान आपकी यही

चले नितवान तुम्हारे कूचे में। जानभी बाकी नहीं रही दिलजान तुम्हारे कूचे में ॥ १ ॥ यादमें दिल बुलबुलहै फंसा सैयाद तुम्हारे कूचे में। दाद न उसको मिली रहा बेदाद तुम्हारे कूचेमें ॥ शाद करो आशक को यह नाशाद तुम्हारे कूंचे में। बादमर्गके लाश नहो बरबाद तुम्हारे कूचे में ॥ तानपै तेरी फिदाहै हिन्दुस्तान तुम्हारे कूचे में। जानभी बाकी नहीं रही दिलजान तुम्हारे कूंचेमें ॥ ३ ॥ नाम बहुत सा हुआ मेरा बदनाम तुम्हारे कूंचेमें। रामराम कहताहूं कब हो आराम तुम्हारे कूंचे में ॥ आमहै आशक बनारमी मरे आम तुम्हारे कूंचेमें। हम्भी होगये श्याम थाके घनश्याम तुम्हारे कूचेमें ॥ ध्यान लगाके करते हैं मध्यान तुम्हारेकूचे में। जानभी बाकी नहीं रही दिलजान तुम्हारे कूंचे में ॥४॥

गरचे इश्कमें रंज होवै तो कोई इसका नाम नले आशक वोहै रंजके सिवा कहीं अराम न ले ॥ लाखों सदमे सहे जिगरपर ज़बां से निकले आह नहीं। चाहने वालको रंजके सिवा किसी की चाह नहीं ॥ गममे खुशी होवे सोई आशक दिलसे दूर हो दाह नहीं। सिवा इश्कके दूसरी तरफ को करे निगाह नहीं ॥ जोकि लुत्फ है रंजमें ऐसा मज़ा कोई वल्लाह, नहीं। वह क्या जाने जो इसकी लज्जतसे आगाह नहीं ॥ जफाको समझे वफा अलमको छोड़ और कोई काम न ले। आशक वहहै रंजके सिवा कहीं आराम न ले ॥ १ ॥ जिसने इश्क को चाहा उसने गमख्वा-ना इख्त्यार किया। सरपर आरे चलें हम परभी नहीं इन्कार किया ॥ आशक उसीका कहिये जिसने जानोमाल निसार

किया। दाग इश्कसे जिगर सीना अपना गुलजार किया दसमेंदसको दम करकर अपने दमको दमदार किया। जिगर जलाया तो उससे रोशनादिल दिलदार किया॥ जफाको स-मझे वफा अलमको छोड़ और कोई काम न ले। आशक वहहै रंजके सिवा कहीं आराम न ले॥ २॥ दर्जाइश्कका हुआ रंजसेगरइसमें कुछ रंज न हो। फिर कोई इसकोकरे क्यों वह जवाब तुम हमको दो॥ आशक था मंसूर दारपर चढ़ाजान अपनी दी खो। लुत्फ उठाया इश्कका रंजको राहत समझाजो॥ आहइश्कने कियेहैं क्याक्या सितम कहूं मैं क्या इसको। ग़मके दरियामें जिसने लाखोंइ आशक दिये डुबो॥ मुझसे भी कहताहै कि तू अब चैन सुवहऔर शाम न ले। आशक वहहै रंजके सिवा कहीं आराम न ले॥ ३॥ मज़ा इश्कका रंजमेंहै गरइसमें रंज नहीं होता। फिर कोई आशक अश्क अपने से मुँह क्योंकरधोता॥ क्योंमरता शीरी पै कोहकन और मजनूंक्योंकररोता। अपनेसरका हाथसे वह सरमदभी क्यों खोता॥ बनारसी गर मज़ा न पाता तुख्म मुहब्बत क्यों बोता। बहरे इश्क में लहर देखी तोफिर मारा गोता॥ मैं सलाम करताहूं रंजको चाहेवह मेरा सलाम न ले। आशक वहहै रंजकेसिवा कहीं आराम न ले॥ ४॥

गमे इश्कमें मरगये, हम तिसपर भी नहीं यह गमनिकला। आहसे आतिश लगी खामोशहुए तो दम निकला जब्तकरूंगर आह सोजांकोतोदिलवेताबहोवे॥ आहकरूं जो जिगर जलभुन के मेरा कबाब होवे। यूंभी मरे औ यूं भी मरे किसतरह से दिलको ताबहोवे॥ इश्क सनमने किया आज़ाद यह उसे सवाब होवे। क्या ताकत अगर उसके रूबरू जबांसे मेरा जवाब होवे॥ जो चाहे सो करो अब

उसकाभला शिताब होवे। लाखों सदमे सहे परमेरे दिलसे न रंजोअलम् निकला ॥आहसे आतिशलगी खामोश हुये तो दम् निकला ॥ १ ॥कभी तो गममे घबराकर सहराकी तरफको चलतेहैं। कहीं बैठकर हम अपने कफे दस्तको मलतेहैं ॥गमसे निकला चाहे तो बस दमसे अभी निकलते हैं। हमहैंआशक हमेशा गमी में फूले फलते हैं॥ शोलेनूर समाया इस दिलमें तो हम्भीबलते हैं। दिलको रोशनकिया इस सबबसे इसमें जलतेहैं ॥ आशिक सादिक जानके मुझपर करने इश्क सितम् निकला। आहसे आतिशलगी खामोशहुये तो दम् निकला ॥ २ ॥ हम आशकहैं इश्कके गमखाना और खूनेदिलपीनाहै। जहां पे देखा वहां आशकका यही करीनाहै ॥ आह करूं तो जिगरजले चुपरहूं तो धडके सीना है। कहोक्याकरें हुआ मुशकिल अपना जीना है॥ सूलीपर मन्सूरने अपनेखून से लिखा सफीना है। मौत नहीं है दार यह यार के घरका जीनाहै॥ अनअलहककहने से देखने मुझको मेरा सनम् निकला। आहसे आतिशलगी खामोशहुये तो दम् निकला ॥३॥ इश्कनहीं आसान बहुत मुशकिल इस इश्कका करनाहै। दिलको देना मोल गम लेना और दुख भरना है॥ और किसीका खौफनहीं बस सिर्फ उसी से डरनाहै। यहां जोबिगडाहुआ फिर उसका वहां सुधरनाहै ॥ देवीसिंह यह कहे इश्कमें जीतेहीजी मरनाहै। इस दिल ऊपर वही गुजरेगी जोकि गुजरना है॥ बनारसी सर कफेदस्तपर धरकर साहे अदम निकला। आहसे आतिशलगी खामोश हुए तो दम् निकला ॥ ४ ॥

वोनूरे रोशन कमरसे बहतर तबक तबकपर खिला उजाला। क्या ताबो ताकत गर उसको देखे मेरा वो दिल्वरहै सबपै बा.ला। वोजुल्फउसकी अगरचे देखे तो पेंच खाये चमनमें स मब्रुल॥ हरेक बलम हैं उसकी छलबल वो दामे उल्फत है उ सकी काकुल। वो गेसू उसके तो मुश्कचीं है गोया गुलि स्तांमें सोसने गुल॥ याह वो अबरे सिया फ़लक पर याहैं आ यत कुरान बिलकुल। फँसा है उसमें यह तायरे दिल अजी-बफंदाहै मुझपैड़ाला॥ क्या तावो ताकत गर उसको देखे मेरा वो दिल्वर है सबपै बाला॥ १॥ है नौ जवानी में वो पेसानी और उसका माथा मेहरसे रोशन्। वोचीने उसकी किरन हैं खुरका चमक दमक में कमरसे रोशन॥ और वो सफाई ह-स्नेखुदाई हरेक जिन और बसरसे रोशन्। और वो पसीना गोया नगीनाहोकआबे गोहरसे रोशन्। सुनीहैउसकी सिफत यह जिस्ने झुकाके माथा जमी पै डाला। क्या तावो ताकत गर उसको देखे मेरा वो दिल्वरहै सबपैबाला॥२॥ वो दोनों अबरू झुकेहैं उसके गोया कमां यकताहै खिंचीभी। और तीर मिजंगां चढे जिसपर नज़र यह किस पर अब है कहर की॥ अगर खफा होकर उस सनमने ज़राभी अपनी वो भौं सकोड़ी। तो गिर पडे लाखों सर ज़मींपर लगी न एक पलभी उसमें देरी॥ या हैं वो देगे दुदम चमकते या खं जरे बुर्राहै निकाला। क्या तावे ताकत गर उसको देखे मेरा वो दिल्वरहै सब पै बाला॥ ३॥ वो चस्म आहू अगरचे देखे तो आंखहरगिज़ न हो मुकाबिल। और सरझुका कर खड़ाहो नरगिस उसीकी आंखों पर होके मायल॥ व

खूनी नैन। औ टेढ़ीचितवन पड़ेजिधरको तो क्या हो हालि ल। कोईहो मुरदा कोई तड़फता कोई सिसकता औरकोईबि स्मिल ॥वोमस्ते दोनों पिये हुयेमें भरे नशेमें लिये हैं प्याला। क्या तावो ताकत गर उसको देखे मेरावो दिल्बरहै मरपे वा ला ॥ ४ ॥ वो बीनी उसकी आलिफकी सूरत जो उसको देखके है वो अल्लाह। फड़क वो नथुनोंकी इसकदरहै कि दिल तड़ पताहै मेरावल्लाह। लमायशीरींमें है वो लज्जत कि होठ चाटे हरेकशैदा। हैबातेंभोली और वो ठठोली ना ऐसीबोली कहीं होपैदा ॥ सुने अगरचे जो गोशकरके वो उसके बातोंकी फ़ रेमाला। क्या तावो ताकत गरउसकोदेखेमेरा वो दिलबर है म बपैवाला ॥ ५ ॥ कभी अगर्चे वो हँसके बोले लौं चमके उस गुलके ऐसे दर्दां। जिगरगौहरकाछिदे जो देखे और दांत पी से लाले बदखशां ॥ यह सिफ़तसुनतेही खूनसूखा बिकाबेक दर जहांमें मिरजां। औ वर्क ऐसागिरी तड़फके बेहोश उ सकाहुआपरेशां ॥ बयां करूं क्या दहनको उसके हुआ तंग दिल न बोला चाला। क्या तावोताकत गरउसको देखे मेरावह दिलबरहै रावपैवाला। ६। यह फ़कत चेहरेकी एक सिफतहै जो अल्क अपनी में कुछथा आया। बयां वहमैंने किया जबांसे पै भेद उसका ज़रा न पाया। कोई किताबें बनाके थक गये किसीने सीखा किसीने गाया। हजारों मुल्ला करोड़ों स्याने कोई इन्तहा न उसकी लाया। फ़जल उसीका हुआतो देखा बनारसीने वोबारीताला। क्यातावो ताकत गर उसको देखे मेरावहादिल्बरहै सबपैवाला। ७।

अकबराबादके बीच मण्डवी जिसनी कीमे मेराधाम।

हरिके भरोसे तहांमैं अहरनिशाकरता विश्राम ॥ राधाकृष्णहै नाम जहां लिखनेकाही करतानिष्काम । उदर हेतु ये यत्न करि मुखसे करता रामहिं राम । इसमें ही कहताहूं गुज़ारा जो विधनाने दीने दाम ॥ लाख यत्न कोईकरैतोउसे मिलैन हिं एकछदाम । और किसी से काम नहीं है विधनाको भजि आठोंयाम ॥ हरिकेभरोसे तहांमें अहर निशा करता विश्राम । १ । लिखनेका है परिश्रमजैसा करैसोई इसकोजाने । जानते पण्डित सभासद बड़ी काठिनता बखाने । पण्डितजन के सिवा और नहीं कोई भी इसकोजाने । ऐसेभीनरबहुत हैं बिनासमझ अपनीताने । बिनइच्छा भगवतकी क्योंकर जानेगा अक्षर का नाम । हरिकेभरोसे तहांमें अहरनिशा करतो बिश्राम । २ । सिन्धु फांदनासहज न समझे बड़ीकाठिन होसक्ताहै । हनुमान के सिवानहीं और कोईकरसक्ता है। जिस के तनपरै पीर वहीपीर सभी सहसक्ता हो क्याजाने कोई पीर औरकी जिसे तीर नहिं लगता है । जो कुछ विधना लिखीभालमें ताविधिसे निबहै ये काम । हरिके भरोसे तहां में अहर निशाकरता विश्राम । ३॥ करकट ग्रीवा नयनशीशमुखनीचा करि दुख सहै सुजान । ये लक्षण हैं लेखक के पण्डित जन करते हैं बखान ॥ जो कोई सज्जन सुने सुनावे सुन समझै मनमें रख ध्यान । परम दृष्टि से कामना तिनकी पुजवें श्री भगवान ॥ पढ़ो सकलहरि भक्त पियारे राधाकृष्ण करतापरनाम । हरिके भरोसे तहांमैं अहर निशा करता विश्राम॥ ४ ॥

❀ इति ❀

—:❀❀❀❀:—